हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● सोमवार ● 23.12.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 151 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

पीएम मोदी को मिला कुवैत का सर्वोच्च सम्मान 'ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर'

एजेंसी

नयी दिल्ली : कुवैत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपना सर्वोच्च सम्मान ''द ऑर्डर का मुबारक अल कबीर'' से सम्मानित किया। यह प्रधानमंत्री मोदी का 20वां अंतरराष्ट्रीय सम्मान है। प्रधानमंत्री मोदी और कुवैत के अमीर शेख मेशल अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह के बीच हुई द्विपक्षीय वार्ता में दोनों देशों ने भारत-कुवैत संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' पर जोर दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिवसीय यात्रा पर शनिवार से कुवैत के प्रवास पर हैं। यात्रा के दूसरे दिन रविवार को शीर्ष नेतृत्व के साथ वार्ता से पहले यहां प्रधानमंत्री मोदी ने कुवैत के बेयान पैलेस में कुवैत के अमीर शेख मेशल अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने कुवैत के क्राउन प्रिंस सबा अल-खालिद अल-सबाह से भी मुलाकात की। कुवैत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपना सर्वोच्च सम्मान 'द ऑर्डर का मुबारक अल कबीर' प्रदान किया। यह प्रधानमंत्री मोदी का मिला 20वां अंतरराष्ट्रीय सम्मान है।

उल्लेखनीय है कि ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर कुवैत का सर्वोच्च सम्मान है। यह मित्रता के प्रतीक के रूप में राष्ट्राध्यक्षों और विदेशी संप्रभुओं तथा विदेशी शाही परिवारों के सदस्यों को प्रदान किया जाता है। इसे पहले बिल क्लिंटन, प्रिंस चार्ल्स और जॉर्ज बुश जैसे विदेशी नेताओं को प्रदान किया जा चुका है। पिछले 43 वर्ष में किसी

भारतीय प्रधानमंत्री की इस खाड़ी देश की यह पहली यात्रा है।

इस मौके पर दोनों देशों के बीच प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई। वार्ता की जानकारी देते हुए विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि चर्चा में दोनों देशों ने द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के तरीकों की खोज पर ध्यान केंद्रित किया। प्रधानमंत्री ने कुवैत में भारतीय समुदाय के कल्याण के लिए अमीर के प्रति आभार व्यक्त किया। कुवैत से संबंधों को लेकर प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट किया, कुवैत के अमीर शेख मेशाल अल-अहमद अल-जबर अल सबा के साथ शानदार बैठक हुई। हमने फार्मास्यूटिकल्स, आईटी, फिनटेक, इंफ्रास्ट्रक्चर और सुरक्षा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की। हमारे देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों के अनुरूप, हमने अपनी साझेदारी को रणनीतिक स्तर तक बढ़ाया है और मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में हमारी दोस्ती और भी मजबूत होगी।

यहां कुवैती समाचार एजेंसी की महानिदेशक फातमा अल-सलेम के साथ एक साक्षात्कार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि व्यापार, वाणिज्य कुवैत के साथ संबंधों के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि फार्मास्यूटिकल, स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की काफी संभावनाएं हैं।

एशिया कप के फाइनल में बांग्लादेश चारों खाने चित, भारतीय टीम ने जीता खिताब

एजेंसी

कुआलालम्पुर : अंडर-19 वूमेन्स एशिया कप 2024 के फाइनल मुकाबल में भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए यह खिताब अपने नाम कर लिया है। कुआलालम्पुर के बयूमास ओवल में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने बांग्लादेश को 41 रनों से करारी शिकस्त दी है। फाइनल मुकाबले में बांग्लादेशी टीम को जीत के लिए भारत ने 118 रनों का लक्ष्य दिया था और जिसका वह पीछा नहीं कर पाई। बांग्लादेश की टीम 76 रन पर ही ढेर हो गई और ऐसे में टीम इंडिया ने 41 रन से मैच जीत लिया। पहली बार यह टूर्नामेंट आयोजित हुआ था और ऐसे में भारतीय टीम ने खिताब जीतकर नया रिकॉर्ड बनाया है।

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 7 विकेट पर 117 रन ही बना पाई। शुरूआत तो अच्छी रही और ओपनर गोंगाडी त्रिशा ने 47 गेंदों पर सबसे ज्यादा 52 रन बनाए लेकिन इसके बाद अन्य खिलाड़ी ज्यादा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकें। मिथिला विनोद (17 रन), कप्तान निकी प्रसाद (12 रन) और आयुषी शुक्ला (10 रन) ही बना सकी। बांग्लादेश के लिए फरजाना इस्मिन ने सबसे ज्यादा 4 विकेट अपने नाम किए है।

इस आसान से लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम 18.3 ओवरों में महज 76 रनों पर ही ढेर हो गई। भारतीय टीम की ओर से स्पिनर आयुषी शुक्ला ने 3 विकेट लिए। स्पिन गेंदबाजों सोनम यादव और परुणिका सिसोदिया को भी दो-दो सफलता हाथ लगी।

भारतीय टीम की प्लेइंग-11: मिथिला विनोद, आयुषी शुक्ला, वीजे जोशिथा, गोंगाडी तृषा, कमलिनी, सानिका चालके, निकी प्रसाद, ईश्वरी अवसरे, शबनम शकील, सोनम यादव और परुणिका सिसौदिया।

बांग्लादेश की प्लेइंग-11: सुमैया अक्तेर, सादिया अख्तर जन्नतुल मौआ, फहोमिदा चोया, मोसम्मात ईवा, सुमैया अख्थेर, जुएरिया फिरदौस, हबीबा इस्लाम, फरजाना इस्मिन, निशिता अक्तेर निशी और अनीसा अक्तेर सोबा।

खलारी में नक्सलियों का तांडव, तीन हाइवा को फूंका, कोयला ढुलाई ठप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची जिले के खलारी में 'नक्सलियों' ने तांडव मचाया है। खलारी थाना क्षेत्र के निर्मल महतो चौक के पास गिट्टी और फ्लाई ऐश लदे 3 हाइवा को जला दिया। घटना रात के करीब 3 बजे हुई। सूचना मिलते ही पुलिस और सीआईएसएफ के जवान एवं क्यूआरटी घटनास्थल पर पहुंची। सीआईएसएफ की एनके, पिपरवार की क्यूआरटी और दोनों एरिया की फोर्स के साथ-साथ खलारी के डीएसपी रामनारायण चौधरी, खलारी के इंस्पेक्टर विजय कुमार सिंह और मैक्लूस्कीगंज थाना प्रभारी गोविंद कुमार घटनास्थल पर पहुंचे। इसके बाद आग पर काबू पाया गया।

एक साथ 3 हाइवा में हुई आगजनी के बाद से रोड बंद है। फ्लाई ऐश और कोयले की ढुलाई भी बंद कर दी गई है। इस सड़क से बड़े पैमाने पर अवैध रूप से बालू की भी ढुलाई होती है। नक्सलियों के द्वारा की गई आगजनी की वजह से क्षेत्र के लोगों में दहशत का माहौल है। बताया जा रहा है कि खलारी घाटी से अगवा करके तीनों हाइवा को निर्मल महतो चौक पर लाया गया और रोड को ब्लॉक करने के बाद उसमें आग लगा दी गई। घटना के समय या उसके बाद वहां से कोई दूसरा वाहन नहीं गुजरा।

पांडे और श्रीवास्तव गैंग के 13 अपराधी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ और हजारीबाग जिले में एक तरफ जहां विकास कार्य को गति मिल रही है, वही संगठित अपराध से जुड़े शातिर अपराधी भी लगातार माइंस संचालकों, ट्रांसपोर्टर, ठेकेदारों और कंपनी संचालकों को डरा धमका कर लेवी वसूलने में लगे हैं। रामगढ़ पुलिस की सक्रियता से पांडे गिरोह और श्रीवास्तव गैंग के कुल 13 अपराधियों को हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया गया है। रामगढ़ पुलिस की कार्रवाई से पांडे और श्रीवास्तव गिरोह को बड़ा झटका लगा है। रंगदारी मांगने वाले अपराधियों की पूरी टीम गिरफ्तार हो जाने से व्यापारियों को बड़ी राहत मिल सकती है। इस मामले की जानकारी रविवार को संवाददाता सम्मेलन कर पतरातू एसडीपीओ पवन कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि दोनों ही गैंग के शातिर अपराधियों के पास से देशी पिस्टल, जिंदा गोली, रंगदारी में वसूली गई रकम, धमकी में प्रयुक्त होने वाला मोबाईल, व्यापारियों की मोबाइल नंबर के साथ बनाई गई सूची, कई तस्वीरें बरामद हुई है।

रामगढ़ और हजारीबाग जिले के व्यापारियों से पांडे गिरोह के 11 अपराधी रंगदारी वसूलते थे। पतरातू एसडीपीओ पवन कुमार ने बताया कि इन अपराधियों में हजारीबाग जिले के बड़कागांव थाना क्षेत्र अंतर्गत नापोखुर्द गांव निवासी सुनील कुमार, सूरत कुमार दास, गिद्दी थाना क्षेत्र के पुराना बुध बाजार निवासी राजविंदर सिंह उर्फ आकाश उर्फ गोलू, राजवीर सिंह उर्फ कैप्टन, मोहित कुमार ठाकुर, रेलीगढ़ा निवासी ब्रजेश कुमार, भुरकुंडा थाना क्षेत्र के रिवर साइड निवासी वशिष्ठ कुमार उर्फ बिट्टू, कुजू ओपी ओपी क्षेत्र के आरा डूमरबेड़ा निवासी सरफराज अहमद, भुरकुंडा ओपी क्षेत्र के बजरंग चौक, रिवर साइड निवासी राजवीर सिंह, प्रेम कुमार और हरपीत सिंह शामिल हैं।

एसडीपीओ पवन कुमार ने बताया कि हजारीबाग जिला के गिद्दी थाना क्षेत्र अंतर्गत पुराना बुध बाजार निवासी राजविंदर सिंह उर्फ आकाश उर्फ गोलू अपराधियों का हैंडल चल रहा था। उसे जेल में बंद पांडे गिरोह के प्रकाश साहू और मुकेश साहू उर्फ पठान से निर्देश मिलता था। बरका सायल डी सीसीएल एरिया में रोड निर्माण कार्य में पांडे गिरोह के सदस्यों के जरिये हथियार का भय दिखाकर धमकी दी गई, साथ ही रंगदारी मांगी गई थी। इस मामले में अपराधियों के खिलाफ कांड संख्या 294/ 2024 दर्ज किया गया था। इसी कांड के उद्भेदन के लिए पुलिस जब छापेमारी कर रही थी, तो राजविंदर सिंह उर्फ आकाश उर्फ गोलू पुलिस के हत्थे चढ़ गया। पुलिस ने उसके बैग की तलाशी ली तो उसके पास रंगदारी में वसूले गए 1.41 लाख रुपए मिले।

साथ ही उसके पास देसी कट्टा और दो जिंदा गोली भी था। पांडे गिरोह में शामिल अपराधी को हर महीने वेतन मिलता था। इसके अलावा धमकी देने वाले स्थान पर जाने के बाद 500 रुपए मिलते थे। इसके लिए बाकायदा अपराधियों की हाजिरी बनती थी। यह हाजिरी बनाने के लिए वे लोग अपनी तस्वीर भेजते थे। एसडीपीओ पवन कुमार ने बताया कि प्रकाश साहू और मुकेश साहू के जरिये गिरोह के लोगों को रंगदारी मांगने के लिए पहले फोन करने की बात कही जाती थी। अगर कंपनी संचालक उसके बाद भी नहीं डरे, तो उनके कार्य स्थल पर जाकर गिरोह के सदस्य हथियार दिखाते थे। धमकी देने वाले स्थान पर वह अपनी फोटो खींचते थे और जेल में बंद प्रकाश साहू और मुकेश साहू को राजविंदर के माध्यम से भेजते थे।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से तीरंदाज दीपिका कुमारी ने की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से रविवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में तीरंदाज खिलाड़ी दीपिका कुमारी ने मुलाकात की। उनके साथ सेंटर फोर एक्सीलेंस की कोच डी. साईश्वरी भी थीं।

मुख्यमंत्री ने तीरंदाज खिलाड़ी दीपिका कुमारी के हालिया प्रदर्शन को लेकर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी। दीपिका ने मुख्यमंत्री को राज्य में तीरंदाजी क्षेत्र से सम्बंधित समस्याओं से अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने भी उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि विश्व पटल पर झारखंड के खिलाड़ी तीरंदाजी के क्षेत्र में परचम लहरा रहे हैं। हमारी सरकार झारखंड के खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षकों को आवश्यक सभी सुविधा मुहैया करने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

एक नजर

वन नेशन वन इलेक्शन बिल के लिए बनी ज्वाइंट पार्लियामेंट कमेटी में झारखंड के दो सासंद शामिल

रांची : देश में "वन नेशन, वन इलेक्शन" बिल पर चर्चा के लिए एक संयुक्त संसदीय समिति (ज्वाइंट पार्लियामेंट कमेटी) बनाई गई है। इस समिति में कुल 22 सांसद शामिल हैं, जिनमें 13 राज्यसभा के सदस्य हैं। इसमें झारखंड के भी 2 सांसद शामिल हैं। पलामू से सांसद विष्णुदयाल राम और लोहरदगा से सांसद सुखदेव भगत को इस समिति में जगह दी गई है। यह समिति बिल पर चर्चा करके एक रिपोर्ट तैयार करेगी और इसे संसद को सौंपेगी। इसके आधार पर बिल पर निर्णय लिया जाएगा। पलामू सांसद विष्णुदयाल राम ने समिति में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का आभार जताया है। रविवार को पलामू लौट रहे सांसद विष्णुदयाल राम ने कहा कि "वन नेशन, वन इलेक्शन" देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इस पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

इस खबर से पलामू में खुशी का माहौल है। भाजपा के जिला अध्यक्ष अमित तिवारी ने इसे पलामू के लिए गर्व की बात बताया। उन्होंने कहा कि पलामू का योगदान पहले संविधान निर्माण में भी रहा है, जब संविधान सभा में पलामू के यदुवंश सहाय और अमियो कुमार घोष शामिल हुए थे। बता दें कि लोहरदगा की संसदीय सीट अनुसूचित जनजाति और पलामू की सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है।

एक नजर

40 कैरेट टमाटर लदे पिकअप वाहन की हुई चोरी

बड़कागांव : थाना क्षेत्र के तलसवार में बीते देर रात घर के बाहर खड़े बोलोरो पिकअप वैन चोर उड़ा ले गए। भुक्त भोगी नारायण महतो के द्वारा थाने में आवेदन दिया गया। जिसमें बताया गया कि शनिवार की रात अपने निवास स्थान के बाहर अपना महिंद्रा बोलेरो जेएच 02 बीएफ 8982 खड़ा रखा था। जिसमें 40 कैरेट टमाटर दो बोरा प्याज, दो बोरा कुरथी डिजिटल कांटा और हिसाब किताब का कॉपी गाड़ी में रखा हुआ था। सुबह 5:00 बजे जब मैं अपने घर से बाहर निकाला तो देखा कि गाड़ी नहीं है। अपने स्तर से गाड़ी मालिक ने काफी खोजबीन की परंतु गाड़ी का कोई अता-पता नहीं चला। गाड़ी मालिक नारायण महतो ने बताया कि इस गाड़ी से हमारा परिवार का जीविकापार्जन हो रहा था।

मुन्ना सिंह ने उदय साव की पत्नी से की मुलाकात

हजारीबाग : कटकमदाग प्रखंड प्रमुख पति और पूर्व मुखिया स्व. उदय साव की हत्या के बाद कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने रविवार को स्व. उदय साव की पत्नी से मुलाकात की। इस दौरान मुन्ना सिंह ने अपनी संवेदना प्रकट की और कहा कि इस दुख की घड़ी में पूरी कांग्रेस पार्टी उनके साथ खड़ी है। उन्होंने जिला प्रशासन से मांग की कि हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाए। मुन्ना सिंह ने कहा, हम कांग्रेस पार्टी की तरफ से यह सुनिश्चित करेंगे कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। हम जिला प्रशासन से यह मांग करते हैं कि मामले की त्वरित और निष्पक्ष जांच की जाए । इस मुलाकात के दौरान प्रमुख नेताओं में राजद जिलाध्यक्ष चरका यादव, निरज सिंह, सुनील ओझा, सुधीर कुशवाहा नरेश कुशवाहा, रंजीत यादव, अनिल यादव नीरज यादव, मो. शेरखान, प्रमोद साव, रंजीत यादव, उपेंद्र कुशवाहा, अजय कुमार और आदित्य कुमार स विक्की कुमार धान इत्यादि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

सदभावना क्रिकेट मैच में व्यवसायी संघ ने मारी बाजी

चतरा : पत्थलगडा प्रखंड मुख्यालय के उमाकांत पाठक खेल मैदान में व्यवसायिक संघ बनाम सामुदायिक शिक्षक संघ के बीच 20-20 क्रिकेट सद्भावना मैच का आयोजन किया गया। मैच का विधिवत उद्घाटन अंचलाधिकारी उदल राम ने बैटिंग कर किया। उनकी उपस्थिति में दोनों कप्तानों के बीच टॉस किया गया। व्यावसायिक संघ ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया। निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट खोकर व्यावसायिक संघ ने 174 रन बनाए। व्यावसायिक संघ की ओर से सर्वाधिक अमित कुमार 52 रन, आशीष कुमार वर्मा 21 रन, नवीन कुमार 38 रन, बालेश्वर 24 और जितेंद्र तिवारी 12 रन बनाए। राजेश और गोल्डन को दो और उदय पाठक को एक विकेट मिला। जवाबी पारी खेलते हुए सामुदायिक शिक्षक संघ ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 149 रन बना पाई। 25 रनों से व्यावसायिक संघ ने मैच जीत लिया। सामुदायिक शिक्षक संघ की ओर से राजकमल 33, राजेश सुमन 30, गोल्डन 13 और उदय पाठक 19 रन बनाए। व्यावसायिक संघ की ओर से अनिल कुमार और अरविंद ठाकुर ने तीन-तीन विकेट लिए अमित को दो विकेट मिला।

लेवी मांगने के मामले में तीन अपराधी को पुलिस ने किया गिरफ्तार, भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बडकागांव : लेवी मांगने के मामले को लेकर पवन कुमार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बड़कागांव ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया गया की 26 नवंबर को गिद्दी थाना पर लिखित आवेदन प्राप्त हुआ कि गिद्दी सी कोलियरी में 26 नवंबर को समय करीब 1:00 बजे लाल रंग के अपाची मोटरसाइकिल से दो अज्ञात अपराधी आए और श्याम सुंदर पांडे को धमकाते हुए बोला गया कि काम बंद करो, ग्रुप से बात किए बिना काम चालू करोगे तो अंजाम बुरा होगा और हथियार लहराते हुए भाग गए। इस संबंध में गिद्दी थाना कांड संख्या 99 / 24 दिनांक 26 नंबर धारा 308 (4) 308 (5) / 61 (2) बीएनएस के तहत कांड अंकित किया गया। इस कांड का खुलासा करने के लिए अरविंद कुमार सिंह पुलिस अधीक्षक हजारीबाग के द्वारा पवन कुमार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बड़कागांव के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया।टीम के द्वारा उपलब्ध साक्ष्य एवं पतरातू थाना के सहयोग से इस कांड में शामिल विक्की राम उम्र 26 वर्ष पिता राजतीराम सयाल पीपला सेंटर निवासी, सुजीत कुमार गोस्वामी उम्र 27 वर्ष पिता स्वर्गीय नंदलाल गोस्वामी हाथीडाड़ी भुरकुंडा निवासी एवं अमोद कुमार गुप्ता उम्र 25 वर्ष पिता स्वर्गीय अरूण कुमार गुप्ता को गिरफ्तार किया गया जिनके द्वारा बताया गया कि हजारीबाग जेल में बंद अमन श्रीवास्तव के द्वारा इस पूरी कांड का प्लानिंग किया गया था तथा अमन श्रीवास्तव के लोगों के द्वारा ही इस घटना को कार्य करने में लाल रंग का बाइक और हथियार उपलब्ध कराया गया था। विक्की राम एंव सुजीत कुमार गोस्वामी बाइक लेकर घटनास्थल में गए तथा अमोद कुमार गुप्ता को रेकी करने के लिए रिवर साइड में रखा चुकी घटना के बाद इसी रास्ते से भागना था। इस घटना के बदले अमन श्रीवास्तव के लोगों के द्वारा इन लोगों को 25000/= रुपया देने की बात बोला गया था।घटना के दिन विक्की राम एंव सुजीत कुमार गोस्वामी के द्वारा पहने हुए जैकेट को बरामद किया गया है। अब तक के अनुसंधान में इस कांड का मुख्य कारण लवी लेने को लेकर घटना करने की बात प्रकाश में आया है। अभियुक्त विक्की राम द्वारा घटना के समय पहने हुए स्वेटर, अभियुक्त सुजीत कुमार गोस्वामी द्वारा घटना के समय पहने हुए जैकेट ,एवं घटना के समय सीसीटीवी फुटेज छापामारी दल में मुख्य रूप से पवन कुमार बड़कागांव एसडीपीओ, कुंदन कुमार थाना प्रभारी गिद्दी, पुअनी कुमार अश्विनी, हवलदार इंद्रदेव मोची सहित पुलिस सशस्त्र बल शामिल थे।

ब्राउन शुगर खरीद बिक्री करने वालों के बारे में पुलिस को सूचना दें : एसडीपीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : हजारीबाग पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह को मिली गुप्त सूचना के आधार पर बड़कागांव पुलिस के द्वारा टीम गठित कर ब्राउन शुगर की खरीद - बिक्री कर रहे युवक को पकड़ा गया। खरीद - बिक्री के दौरान दो युवक थें जिसमें एक युवक भागने में सफल रहा। पकड़े गए युवक से पूछताछ के बाद वह अपना नाम किशोर कुमार छोटका बर प्रेम नगर बड़कागांव निवासी बताया। पकड़े गए युवक की तलाशी करने पर ब्राउन शुगर, नगद पैसा, मोबाइल आदि बरामद किया गया। जिसे कागजी प्रक्रिया पूरा कर न्यायिक हिरासत भेज दिया गया है। एसडीपीओ पवन कुमार ने बताया कि ब्राउन शुगर जैसे मादक पदार्थों की खरीद बिक्री करने वाले लोगों पर नियम संगत कार्रवाई की जाएगी, इसलिए अगर आपके अड़ोस - पड़ोस में कोई भी व्यक्ति ब्राउन शुगर का सेवन या खरीद - बिक्री करते हैं, तो पुलिस को आप गुप्त रूप से सूचना दें,आपका नाम गुप्त रखा जाएगा। छापेमारी दल में मुख्य रूप से एसडीपीओ पवन कुमार, थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल, एसआई इंद्रजीत कुमार, अभिषेक कुमार के अलावा सशस्त्र बल के जवान शामिल हैं।

झील परिसर से पुलिस ने दो लड़कों को मोबाइल छिनतई करते रंगे हाथों पकड़ा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग नगर निगम के झील एरिया में मोबाइल छिनतई की घटना में शामिल दो लड़कों को पुलिस ने रंगे हाथों पकड़ा। पकड़े गए लड़कों की पहचान शशि कुमार और रोशन कुमार के रूप में हुई है, जो बड़का इरगा, थाना दारू, जिला हजारीबाग के निवासी हैं। लोहसिंघना थाना प्रभारी संदीप कुमार मंडल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह घटना तब सामने आई जब पुलिस को गश्ती के दौरान कुछ संदिग्ध गतिविधियों का पता चला। पुलिस टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए दोनों लड़कों को मोबाइल छिनतई करते हुए धर दबोचा। घटना की रिपोर्ट दर्ज करते हुए लोहसिंघना थाना कांड संख्या 232/24 के तहत मामला दर्ज किया गया और दोनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। घटना का समय लगभग दोपहर का था जब शशि कुमार और रोशन कुमार झील एरिया में एक व्यक्ति से मोबाइल छीनने की कोशिश कर रहे थे। स्थानीय लोगों की सक्रियता और पुलिस की तत्परता के कारण यह प्रयास असफल रहा। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दोनों लड़कों को गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी संदीप कुमार मंडल ने बताया कि पुलिस को लंबे समय से इस क्षेत्र में मोबाइल छिनतई की घटनाओं की शिकायतें मिल रही थीं। गश्त के दौरान पुलिस ने इन संदिग्ध लड़कों पर नजर रखी और जैसे ही उन्हें मौका मिला, उन्होंने छिनतई करते हुए दोनों को गिरफ्तार कर लिया। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि शशि कुमार और रोशन कुमार पहले भी ऐसी घटनाओं में शामिल रहे हैं। पुलिस अब उनके पिछले रिकॉर्ड को खंगाल रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि कहीं वे किसी बड़े अपराधी गिरोह का हिस्सा तो नहीं हैं। इस घटना के बाद झील एरिया के स्थानीय लोगों ने पुलिस की सराहना की है।

विधायक के जन्मदिन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया कंबल और मिठाई का वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही विधायक मनोज कुमार यादव के जन्मदिन के अवसर पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने सामाजिक सरोकार का परिचय देते हुए अनुमंडलीय अस्पताल और जनजागरण केंद्र में कम्बल और मिठाई का वितरण किया। यह कार्यक्रम रविवार को आयोजित किया गया, जिसमें पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जरूरतमंदों और बच्चों के बीच खुशियां बांटने का प्रयास किया। कार्यक्रम के तहत अनुमंडलीय अस्पताल में डीएस डॉ प्रकाश ज्ञानी की उपस्थिति में भर्ती मरीजों के बीच कम्बल का वितरण किया। इसमें विशेष रूप से एमटीसी और प्रसव कक्ष में रह रहे मरीज शामिल थे। इसके अलावा जनजागरण केंद्र में मौजूद बच्चों के बीच मिठाई का वितरण किया गया, जिससे बच्चों में उत्साह का माहौल देखने को मिला। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर ने कहा कि बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने हमेशा समाज के जरूरतमंद तबके की सेवा को प्राथमिकता दी है। उनके जन्मदिन पर यह कार्यक्रम उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। समाज में सेवा कार्यों के माध्यम से ही सच्ची खुशी प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा समाजसेवा को प्राथमिकता देती है और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होता रहेगा। कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, उपमुखिया मनोज कुमार उपाध्याय, राजकुमार यादव, ब्रह्मदेव यादव, अमित कुमार गौरव, मुन्ना यादव, सचिन यादव, इंद्रदेव यादव, पिंटू ठाकुर, दीपक भगत, और विशाल यादव सहित कई अन्य कार्यकर्ता शामिल थे। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने विधायक मनोज कुमार यादव के दीघार्यु और स्वस्थ जीवन की कामना की।

पत्रकार प्रकाश पाण्डेय के निधन पर प्रेस क्लब में हुई शोक सभा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग के वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश पाण्डेय के निधन पर हजारीबाग प्रेस क्लब में शोक सभा का आयोजन रविवार को हुआ। अध्यक्षता हजारीबाग प्रेस क्लब के अध्यक्ष मुरारी सिंह और जेजेए जिला अध्यक्ष कृष्णा गुप्ता ने संयुक्त रूप से की। सबसे पहले दो मिनट का मौन रख आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। उपस्थित पत्रकारों ने कहा कि हमलोगों ने एक साथी को खोया है। हमसभी इस दुख की घड़ी में परिजनो के साथ है और जो सहयोग बन पड़ेगा मिलजुल कर करेंगे। शोक सभा में समाजसेवी बटेश्वर प्रसाद मेहता, वरिष्ठ पत्रकार अर्जुन सोनी, दीपक सिंह, सुबोध मिश्रा, गौरव प्रकाश, अभय सिंहा, कुणाल सिंह, सुमंत साहा, प्रहलाद सिंह, एजाज आलम, फैज अनवर, प्रदीप सिंहा, पीयूष मिश्रा, रूपांशु चौधरी, सीतेश तिवारी, अमित मिश्रा, अभिषेक पांडे, उमेश चौबे, शशांक शेखर सिंह, सुशांत सोनी, उमेश चौबे, कलाम खान, फैजल खान, भावेश मिश्रा, सूरज कुमार, भाव्या कुमारी, रवि शर्मा, आशीष यादव, रुपेश, मो मेराज, कासिफ अदीब समेत कई उपस्थित थे।

सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी का किया स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने रविवार को महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी का परिसदन सभागार में भव्य स्वागत किया। प्रसाद ने मंत्री को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर क्षेत्रवासियों की ओर से उनका अभिनंदन किया। इस दौरान दोनों के बीच क्षेत्र के विकास से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। विधायक प्रसाद ने क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों से संबंधित समस्याओं को विस्तार से रखते हुए उनके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रसाद ने हजारीबाग क्षेत्र में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र, स्वरोजगार योजनाएं और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए नए कार्यक्रम शुरू करने का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि ग्रामीण महिलाओं को केंद्रीय सरकारी की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए जागरूकता अभियान चलाना जरूरी है। बाल विकास के मुद्दे पर चर्चा करते हुए विधायक ने पोषण अभियान, आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति सुधारने और बच्चों की शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए ठोस पहल का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि बाल श्रम और कुपोषण जैसी समस्याओं को जड़ से खत्म करने के लिए ठोस योजनाओं की आवश्यकता है। महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने विधायक की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और क्षेत्र की आवश्यकताओं को लेकर अपनी गंभीरता व्यक्त की। उन्होंने आश्वासन दिया कि महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को हजारीबाग में प्रभावी ढंग से लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और पोषण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है और इस दिशा में हरसंभव सहायता प्रदान की जाएगी। इस अवसर पर मंत्री ने विधायक प्रदीप प्रसाद की जनहित में की जा रही पहल की सराहना की और उनके साथ मिलकर क्षेत्र के विकास के लिए काम करने की इच्छा जताई। प्रसाद ने मंत्री महोदय का धन्यवाद ज्ञापित किया और उम्मीद जताई कि उनके सहयोग से हजारीबाग क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित होंगे। मीडिया से वातार्लाप करते हुए प्रदीप प्रसाद ने कहा कि हजारीबाग क्षेत्र की महिलाओं और बच्चों का विकास हमारी प्राथमिकता है। मंत्री अन्नपूर्णा देवी से हुई इस चर्चा के माध्यम से हमने महिलाओं के सशक्तिकरण, बाल पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ठोस कदम उठाने की मांग की है।

संक्षिप्त खबरें

बाबासाहेब पर आपत्तिजनक टिप्पणी और राहुल गांधी पर झूठे केस के विरोध में कांग्रेस का प्रदर्शन

बरही : राज्यसभा में भारत रत्न बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा कथित रूप से आपत्तिजनक टिप्पणी और विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर झूठे मामले दर्ज कराने के विरोध में झारखंड प्रदेश युवा कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन किया। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निर्देश पर यह विरोध प्रदर्शन बरही पूर्वी पंचायत के बाराटांड़ स्थित बाबासाहेब अंबेडकर की प्रतिमा स्थल पर आयोजित किया गया। कांग्रेसियों ने केंद्र सरकार पर तानाशाही रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए अमित शाह से तुरंत इस्तीफे की मांग की। प्रदर्शन के दौरान वक्ताओं ने केंद्र सरकार और गृह मंत्री पर जमकर हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि बाबासाहेब अंबेडकर जैसे महान व्यक्तित्व का अपमान देश के संविधान और लोकतंत्र का अपमान है। साथ ही, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ हुए अभद्र व्यवहार की भी कड़ी निंदा की गई। इस विरोध प्रदर्शन में प्रखंड 20 सूत्री अध्यक्ष इकबाल रजा, विधानसभा युवा कांग्रेस अध्यक्ष मनोहर यादव, प्रखंड युवा अध्यक्ष मंजीत यादव, युवा मीडिया कोऑर्डिनेटर आकाश भारती, विधानसभा युवा महासचिव फिरदौस खान, प्रखंड सचिव सोनू रविदास, कांग्रेस नेता मनोज रविदास, कपिल भारती, ललिता देवी, यशोदा देवी, पूनम देवी, कुंती देवी, कविता देवी और रूबी देवी समेत कई अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल रहे। कांग्रेस ने चेतावनी दी है कि अगर केंद्र सरकार ने माफी नहीं मांगी और गृह मंत्री ने इस्तीफा नहीं दिया, तो वे राज्यभर में बड़े पैमाने पर आंदोलन करेंगे।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा वन भोज का किया गया आयोजन

हजारीबाग : अखिल भारतीय कायस्थ महासभा जिला इकाई हजारीबाग के द्वारा पारिवारिक वन भोज का आयोजन किया गया जिसमें चित्रांश परिवार के लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा हजारीबाग जिला इकाई अध्यक्ष दीपक नाथ सहाय ने बताया कि जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष सुधा वर्मा की अगुवाई में महिला प्रकोष्ठ द्वारा स्थानीय छड़वा डैम में 22 दिसंबर को पारिवारिक वन भोज कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें ठंड के बावजूद काफी उत्साह के साथ भारी संख्या में महिला पुरुष के अलावा बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में शिवपुरी, रामनगर, न्यू एरिया, मंडई, विष्णुपुरी, दारू, चौपारण आदि के उप समितियां ने भाग लिया। कार्यक्रम में खेलकूद प्रतियोगिता, अंतरराक्षी, गीत संगीत प्रतियोगिता का बच्चे महिलाएं एवं बुजुर्गों ने खूब लुफ्त उठाया। बनभूज का आरंभ भगवान चित्रगुप्त की आरती से हुई। गरम-गरम चाय एवं नाश्ता के बाद पारिवारिक परिचय का कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम को सफल सफल बनाने में मुख्य रूप से कायस्थ महासभा के जिला अध्यक्ष दीपक नाथ सहाय, बैजनाथ लाल, नवल लाल, ललित मोहन प्रसाद, शशिकांत श्रीवास्तव, राजीव रंजन, अमर कुमार, बिनोद सिन्हा, सतीश सिन्हा, जितेंद्र सिन्हा, किशोर कुमार सिन्हा, श्वेता, विकास, शोभा प्रसाद, सोनालिका सिन्हा अनु अम्बष्ट, रमेश चंद्र प्रसाद, संजय सिन्हा, लाला हीरा, राजीव प्रसाद, मिथिलेश सिन्हा, मदनलाल, आलोक कुमार समेत लगभग तीन सौ चित्रांशो ने भाग लिया।

चौकीदार पदों पर बहाली के लिए परीक्षा का परिणाम जारी, 26 दिसंबर को होगी दौड़

हजारीबाग : हजारीबाग जिला अन्तर्गत चौकीदार के रिक्त पदों पर सीधी नियुक्ति हेतु 20 दिसंबर 2024 को लिखित परीक्षा आयोजित की गई थी। लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हुए अभ्यर्थियों की सूची/परीक्षाफल आज 22 दिसंबर को www.hazaribag.nic.in के वेबसाईट पर जारी कर दिया गया है। लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हुए अभ्यर्थियों को अब शारीरिक जाँच एवं दौड़ प्रतियोगिता से गुजरना होगा। यह दौड़ 26 दिसंबर को कर्जन मैदान, हजारीबाग में आयोजित की जाएगी। अभ्यर्थियों के लिए स्थल पर पहुँचने का समय 06:00 बजे पूर्वाह्न होगा तथा दौड़ का 08:00 बजे पूर्वाह्न से प्रारंभ किया जाएगा। सभी सफल अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने साथ प्रवेश पत्र के साथ एक पहचान पत्र लाना अनिवार्य है।

अभाविप हजारीबाग नगर का हुआ पुनर्गठन रंजन कुमार बने नगर अध्यक्ष व मंत्री यशवंत

हजारीबाग : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हजारीबाग नगर इकाई का पुनर्गठन स्थानीय भाग्यमणि शादी घर में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नवलेश सिंह, प्रांत सह मंत्री रितेश यादव, विशेष आमंत्रित सदस्य अमित चौबे विभाग संगठन मंत्री विक्रम राठौर नगर अध्यक्ष रंजन कुमार निवर्तमान नगर मंत्री रुद्र राज ने मां सरस्वती एवं स्वामी विवेकानंद के चित्र पर पुष्पांजलि कर के किया। जिला संयोजक बाबूलाल मेहता ने विषय प्रवेश कराया बाद में उपस्थित अतिथियों ने एक एक कर अपनी बातें रखी। निवर्तमान नगर मंत्री रुद्र राज ने मंत्री प्रतिवेदन उपस्थित पदाधिकारियों एवं छात्रों के बीच रखा। प्रदेश सह मंत्री रितेश यादव ने पुरानी इकाई को भंग कर के नई इकाई की घोषणा की जो इस प्रकार है नगर अध्यक्ष प्राध्यापक रंजन कुमार, उपाध्यक्ष प्राध्यापक सदानंद कुमार, नगर मंत्री यशवंत कुमार, सह मंत्री मनीष कुमार, शेखर शर्मा, मानसी प्रिया शाश्वत सिन्हा, साहिल सिंह जिला एसएफडी प्रमुख अभिषेक कुमार सह प्रमुख पियूष पासवान,चिन्मय भारद्वाज जिला थिंक इंडिया प्रमुख राजकुमार नगर थिंक इंडिया प्रमुख आरव मेहता जिला सोशल मीडिया संयोजक रौशन पाठक नगर सोशल मीडिया संयोजक अनुभव सिन्हा सह संयोजक दीपक पांडेय जिला खेलकूद प्रमुख लालजीत यादव सह प्रमुख मोहन राणा जिला कला मंच प्रमुख तुषार सिन्हा नगर कला मंच प्रमुख जितेंद्र ठाकुर नगर कार्यालय मंत्री सूर्यकांत सह मंत्री सुमित कुमार जिला छात्रावास प्रमुख अक्षय मोदी सह प्रमुख शिवांश सिन्हा जिला मीडिया प्रमुख रूद्र राज सह प्रमुख निवेदिता सिंह नगर सूचना प्रमुख अनुज पासवान सह प्रमुख टिंकू कुमार विशेष आमंत्रित सदस्य प्रोफेसर पंकज कुमार मांझी, प्रोफेसर राजकुमार चौबे, प्रोफेसर जीके झा, साक्षी सिन्हा नगर कार्यसमिति सदस्य गौतम राणा सिकंदर मंडल विनोद साव इंद्रजीत गुप्ता रितेश कुमार सिमरन कुमारी पवन कुमार मनीष यादव अंकुश कसेरा रंजन यादव रवि प्रसाद को बनाया गया।

जंगल में पेड़ पर लटका मिला युवक का शव

रामगढ़ : रामगढ़ थाना क्षेत्र के बूढ़ा खोखरा पहाड़ पर जंगल में रविवार को एक पेड़ पर युवक का शव लटका हुआ पुलिस ने बरामद किया है। लाश मिलने के बाद पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। यह हत्या है या आत्महत्या इसको लेकर संशय बरकरार है। घटनास्थल पर पहुंचे रामगढ़ थाना प्रभारी कृष्ण कुमार ने बताया कि राधा गोविंद यूनिवर्सिटी की तरफ जाने वाले जंगल के रास्ते में पहाड़ पर पेड़ पर लटका हुआ युवक का शव बरामद किया गया।

एक नजर

शराब के साथ एक व्यक्ति गिरफ्तार

रांची : रेलवे पुलिस बल (आरपीएफ) ने रांची रेलवे स्टेशन से शराब के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरपीएफ निरीक्षक ने रविवार को बताया कि रांची मंडल के आरपीएफ कमांडेंट पवन कुमार के निर्देश पर ऑपरेशन सतर्क के तहत शराब तस्करों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम मे आरपीएफ पोस्ट रांची एवं फ्लाइंग टीम रांची रेलवे स्टेशन रांची के पार्सल ऑफिस के पास एक संदिग्ध को भारी बैग के साथ घूमते पाया। संदेह होने पर उसके बैग की जांच करने पर शराब बरामद हुई। उसने अपना नाम शंभू कुमार बताया। वह बिहार के पटना के अगमकुआं का रहने वाला है। आरोपित ने बताया कि वह गाड़ी संख्या 18624 से पटना में अधिक दामों पर शराब बेचने जा रहा था। गिरफ्तार व्यक्ति और पकड़ी शराब को उत्पाद विभाग को कार्रवाई के लिए सौंप दिया। जब्त शराब की कीमत 7400 रुपये आंकी गई है।

राज्यस्तरीय युवा दिवस आज

रांची: झारखंड खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग द्वारा राज्यस्तरीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन सोमवार को रांची के ऑड्रे हाउस में आयोजित किया जाएगा। इसमें समूह लोकनृत्य, समूह लोकगीत, एकल लोकनृत्य, एकल लोकगीत, कविता लेखन, चित्रकला, भाषण, विज्ञान मेला एवं कहानी लेखन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें प्रमण्डल स्तरीय प्रतियोगिताओं में समूह लोकनृत्य, समूह लोकगीत एवं विज्ञान मेला में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतिभागी युवा भाग लेंगे। शेष प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागी युवा भाग लेंगे। बता दें कि इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागी नई दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय युवा उत्सव 2025 में झारखंड का प्रतिनिधित्व करेंगे।

श्रम कानूनों को कमजोर कर रही है केंद्र सरकार : ऐक्टू

रांची: ऐक्टू से सम्बद्ध झारखंड निर्माण मजदूर यूनियन के राज्य कार्यकारिणी की बैठक रविवार को डोरंडा स्थित यूनियन कार्यालय में सुभाष मंडल की अध्यक्षता में हुई। रांची, बोकारो, रामगढ़, दुमका, गुमला समेत कई जिलों के पदधारी बैठक में शामिल हुए। मौके पर ऐक्टू के प्रदेश महासचिव शुभेंदु सेन ने कहा कि केंद्र सरकार श्रम कानूनों व संविधान को कमजोर कर रही है। वन नेशन वन इलेक्शन उसी दिशा में उठाया गया कदम है। संविधान निमार्ता बाबा साहब के खिलाफ केंद्रीय गृह मंत्री के द्वारा की गई टिप्पणी संविधान के प्रति संघ परिवार की दोहरी मानसिकता को उजागर करती है। ऐक्टू 26 जनवरी तक संविधान बचाओ जन अभियान संचालित करेगी। निर्माण मजदूर यूनियन के प्रदेश महासचिव भुवनेश्वर केवट ने कहा कि श्रमिक अधिकारों को पुनः बहाल करो के नारे के साथ ऐक्टू का राष्ट्रीय सम्मलेन 24 से 26 फरवरी तक दिल्ली में आयोजित होगा। उदघाटन सत्र ताल कटोरा स्टेडियम में होगी। जिसमें सभी केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि समेत विदेशी मित्र संगठनों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। निर्माण मजदूर यूनियन मजदूरों को बड़ी संख्या में सदस्यता भर्ती कर केंद्र सरकार के मजदूर विरोधी नितियों के खिलाफ आंदोलन करेगी। मौके पर यूनियन के नेता अमल घोष, किशोर खंडित, भीम साहू, एनामुल हक, हुमायूं साहू, रमेश कुमार रवि, मुजाहिदुल, नसीम अख्तर, एतवारी देवी, मंजू सिंह, खालिक आदि शामिल थे।

ट्रैफिक पुलिस यातायात व्यवस्था सुधारने के बजाय जुर्माना वसूलने पर दे रही है ध्यान : बाबूलाल मरांडी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने रांची में यातायात पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाए हैं। मरांडी ने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर ट्वीट कर कहा है कि राजधानी रांची की ट्रैफिक पुलिस यातायात व्यवस्था सुधारने के बजाय केवल जुर्माना वसूलने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है। मामूली गलतियों पर भी भारी-भरकम जुमार्ना लगाकर जनता का शोषण किया जा रहा है। बाबूलाल ने कहा कि सड़क सुरक्षा और यातायात नियंत्रण जैसे अहम मुद्दों को नजरअंदाज कर सिर्फ जुमार्ने की वसूली को प्राथमिकता दी जा रही है। सड़क सुरक्षा के लिए यातायात नियमों का पालन जरूरी है लेकिन जब तक सड़कों की दशा नहीं सुधरेगी, ट्रैफिक सिग्नल सही नहीं होंगे और लोगों को जागरूक नहीं किया जाएगा, तब तक सिर्फ जुर्माना वसूलने से समस्या हल नहीं होगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी, इस मुद्दे पर बेहद संवेदनशीलता की जरूरत है। आमजनों पर लगाए गए भारी भरकम जुमार्ने पर पुनर्विचार करें और रांची की सड़कों पर मची लूट को रोककर सुचारू यातायात व्यवस्था सुनिश्चित करें।

मंत्री हफीजुल हसन ने झारखंड दिव्यांग समाधान केंद्र का किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रविवार को मंत्री झारखंड के हफीजुल हसन जी ने झारखंड दिव्यांग समाधान केंद्र का उदघाटन बरियातु रॉड स्थित रानी बागान में किये, झारखंड दिव्यांग आंदोलन संघ के सदस्यों ने 202 दिनों से चल रहा झारखंड दिव्यांग आंदोलन संघ के द्वारा धरना के बारे में अवगत कराया गया। जिसमें मंत्री महोदय ने कहा कि दिव्यांग जन की पेंशन 2500 रुपये आने वाले विधान सभा सत्र में पास हो जाएगा, और मिलना. शुरू होगा, साथ ही स्वरोजगार हेतु ऋण और रोजगार हेतु 4 प्रतिसत आरक्षण सुनिश्चित करने की बात कहे, इसी के साथ सभा की समाप्ति की घोषणा की गई, ईस सभा में झारखंड दिव्यांग आंदोलन संघ के प्रदेशध्यक्ष ओम प्रकाश चौहान, उपाध्यक्ष यशवन्त कुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष कुमारी जिन्हा, कोडरमा से पंकज कुमार, तनवीर अख्तर, आलोक कुमार, रामगढ़ से मनोरमा कुमारी, हजारीबाग से दीपक शर्मा, शशिकांत भारती, पलामू से अरविंद कुमार,लाल बिहारी राम, बलराम अंसारी, गोड्डा से राजेश साह, रांची से अशोक महतो, रीना कुमारी, सुषमा कुमारी, दीपक सिंह, लातेहार से सीता कुमारी, अजीत सिंह, अनिल दांगी, धनबाद से प्रमोद यादव, पप्पू चौहान, गिरिडीह से थॉमस हेम्ब्रम, गढ़वा इत्यादि जिलो से सेकंडो दिव्यांगजन ने भाग लिया। के जिलों से भी महिलाएं इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आएंगी। उनके ठहरने की भी उचित व्यवस्था की जा रही है। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन राज्य की 55 लाख महिलाओं के खाते में 2500 रुपये मंईयां सम्मान राशि की किश्त देंगे। यह योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद करती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। महिलाओं के हाथों में पैसा आने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

कांग्रेस ने सर्व धर्म प्रार्थना सभा का किया आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से रांची के मोरहाबादी मैदान में रविवार को सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। रांची जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. राकेश किरण महतो ने कहा कि झारखंड के एनडीए के वर्तमान सभी 12 लोकसभा और राज्यसभा सांसदों की सद्बुद्धि के लिए सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने सामूहिक रूप से अपनी धार्मिक पद्धति से ईश्वर से प्रार्थना की कि झारखंड का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी सांसदों को उनकी जवाबदेही एवं कर्तव्य का बोध हो। उन्हें झारखंड की साढ़े तीन करोड़ जनता की अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं का आभास कराने के लिए ही इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। डॉ. राकेश ने कहा कि भाजपा और केंद्र सरकार पिछले चुनावों में अपने किए गए वादों से मुकर गई है। उनके वादे अब जुमले बन चुके हैं। उनकी सभी फ्लैगशिप योजनाएं विफल साबित हो रही हैं। वर्ष 2014 में बनी इस सरकार से आशा थी कि वह जनहित में काम करेगी परंतु बेतहासा बढ़ती महंगाई एवं बेरोजगारी ने आम जनता की कमर कमर तोड़ दी है। पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की आसमान छूती महंगाई ने आम जनता का जीना दूभर कर दिया है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार केंद्र की भाजपा सरकार से लगातार अपना हक-अधिकार मांग रही है परंतु ना उसके कोयला रॉयल्टी का बकाया 1,36,000 करोड़ रुपये ही दे रही है और ना ही पीएम आवास, मनरेगा सहित अन्य केंद्र प्रायोजित योजनाओं की राशि निर्गत कर रही है।

28 दिसंबर को खाते में आयेंगे मंईयां सम्मान योजना के 2500 रुपये

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड की महिलाओं के लिए बड़ी खुशखबरी, मंईयां सम्मान योजना के तहत 2500 रुपये की राशि मिलने की प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। जानकारी के अनुसार 28 दिसंबर को नामकुम के कुटियाती चौक स्थित आर्मी मैदान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है, विभाग जिसकी तैयारी में जुट गया है। इस कार्यक्रम में लगभग पांच लाख महिलाओं के शामिल होने की उम्मीद है। जानकारी के अनुसार संथाल परगना प्रमंडल के साहिबगंज, दुमका जैसे दूर-दराज

सीपीई 26 से मनायेगी शताब्दी समारोह संसद में धक्का-मुक्की घटना की निंदा की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी झारखंड राज्य परिषद की बैठक राजेंद्र प्रसाद यादव की अध्यक्षता में राज्य कार्यालय रांची में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सचिव कर झारखंड प्रभारी रामकृष्ण पांडा मौजूद थे। बैठक में 2 मिनट का मौन रखकर शहीद साथियों की श्रद्धांजलि अर्पित की गई राष्ट्रीय सचिव रामकृष्ण पांडा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आज जिस तरह से धक्का मुक्की संसद भवन के अंदर जो संविधान निमार्ता बाबा भीमराव अंबेडकर के नाम पर हो रहा है। वह भी देश के गृह मंत्री अमित शाह के द्वारा जिसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है कि देश में भारतीय जनता पार्टी कमजोर हो रही है। इसीलिए हिंदुत्व के ठेकेदार मोहन बने रहना चाहते हैं। लगातार भारतीय जनता पार्टी और उनके नेताओं के द्वारा अल्पसंख्यकों पर इसी से स्पष्ट होता है। आने वाले देश आने वाले दिन में सांप्रदायिक सद्भावना बिगड़ने के लिए भारतीय जनता पार्टी प्रयास करेगी हमें मुस्तैद रहने की जरूरत है। संसद के अंदर अदानी प्रकरण पर किसी भी तरह की चर्चा सुनने के लिए भारतीय जनता पार्टी तैयार नहीं है। विपक्ष चाहती है कि संसद चले लेकिन भारतीय जनता पार्टी सांसद को चलाने में नाकामयाब साबित हो रही है। लगातार गैर संवैधानिक तरीके से देश को चलाने की कोशिश हो रही है, देश में बेकारी,महंगाई, लाचारी पर संसद में चर्चा नहीं हो पा रही है। उन्होंने कार्यकताओं सहन करते हुए जनता की जन समस्याओं को लेकर जन संघर्ष तेज करने की अपील किया भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव महेंद्र पाठक ने राजनीतिक एवं विधानसभा चुनाव की समीक्षात्मक रिपोर्ट पेश किया बैठक में पार्टी विरोधी कार्य करने वाले बड़का गांव विधानसभा से विंध्याचल बेदिया को निलंबित एवं नाला से सेनापति मुर्मू तुषारकांत मंडल बोकारो जिला में गैर पार्टी सदस्यों के द्वारा पार्टी का झंडा और बैनर के इस्तेमाल करने की घटना को गम्भीरता से लेते हुए। राज्य परिषद ने बोकारो जिला मंत्री को कार्यवाही करने का निर्देश जारी किया है। कई साथियों को पार्टी विरोधी कार्यों में संलिप्त पाए जाने पर पार्टी से निष्कासित किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से संगठन को मजबूत बनाने बड़े पैमाने पर गांव-गांव में सदस्यता अभियान पार्टी सदस्यों की नवीकरण जनसंघटनाओं के निर्माण पार्टी को मजबूत बनाने के लिए अल्पसंख्यकों, दलितों एवं आदिवासियों को पार्टी से जोड़नेपार्टी में बड़े पैमाने पर छात्रों युवाओं और महिलाओं को पार्टी में शामिल करने का निर्णय लिया गया है।

श्री सर्वेश्वरी समूह के निःशुल्क चिकित्सा शिविर में 353 मरीजों का हुआ इलाज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : सर्वेश्वरी समूह की रांची शाखा ने बुढ़मू ब्लॉक के छापर गांव में निशुल्क चिकित्सा एवं दवा वितरण शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में 353 रोगियों को चिकित्सीय परामर्श के साथ दवा भी बांटे गये। इससे पहले परमपूज्य अघोरेश्वर भगवान राम और परमपूज्य बाबा संभव राम जी की विधिवत तरीके से पूजा-अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके बाद सुबह 10 बजे से शाम चार बजे तक मरीजों को निशुल्क एलोपैथिक और होम्योपैथिक चिकित्सीय सुविधा प्रदान की गयी। शिविर में ब्लड शुगर जांच की भी व्यवस्था की गयी। साथ ही जरुरतमंद लोगों के बीच कंबल और वस्त्र का भी वितरण किया गया। निशुल्क चिकित्सा और दवा वितरण शिविर में चिकित्सीय परामर्श देने वाले चिकित्सकों में डॉ। एस। एन। सिन्हा, डॉ। रोहित सिंह, डॉ। शंकर रंजन, डॉ। उत्पल, डॉ। शाम्भवी, डॉ। कृष्णा मुरारी सिंह, डॉ। संतोष कुमार और डॉ। देव प्रकाश सिंह शामिल थे। इसके अलावा पवन कुमार, मनीषा कुमारी, और खुशभु खलखो ने भी शिविर में योगदान दिया। शिविर के सफल आयोजन में बुढ़मू से मूरसिंह लाल मांझी, रामानंद करमाली, कुदरत अंसारी, अरविंद मरांडी, बाबूराम मांझी, बिनिराम मुर्मू, निर्मल मुर्मू, और दुर्गा हांसदा ने विशेष सहयोग किया। सर्वेश्वरी समूह की ओर से राधेश्याम सिंह, रंजीत सिंह, आशुतोष कुमार, धर्मेंद्र कुमार सिंह, पवन कुमार, रोहित सिंह, अनुराग सिंह, सौरभ राज, दक्ष कुमार, गंगाधर नाथ शाहदेव, प्रताप आदित्य, गिरेंद्र नाथ, और रुद्रदीप सहित लगभग 30 श्रद्धालु और सदस्य शामिल हुए, जिन्होंने शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। श्री सर्वेश्वरी समूह एक विश्वविख्यात आध्यात्मिक और सामाजिक संस्था है, जिसकी स्थापना जनसेवा, सर्वधर्म समन्वय, और विश्वबंधुत्व जैसे उद्देश्यों के साथ की गयी है। यह संस्था जनसेवा के विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करती है और इसके सेवा कार्यों के लिए इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स और लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी स्थान प्राप्त है। निशुल्क चिकित्सा व दवा वितरण शिविर उन्हीं जनसेवा के कार्यक्रमों में से एक है। यह संस्था ऐसे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर का आयोजित करती है, जहां लोगों को चिकित्सीय सेवाएं उपलब्ध नहीं होती है।

संक्षिप्त खबरें

आर्चबिशप से मिले हेमन्त और कल्पना

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन रविवार को पुरुलिया रोड स्थित आर्चबिशप हाउस पहुंचकर आर्चबिशप विंसेंट आइंद से मुलाकात कर उन्हें क्रिसमस पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

एबीवीपी झारखंड के 25वें प्रदेश अधिवेशन का उद्घाटन करेंगे राज्यपाल

रांची : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) झारखंड प्रदेश का 25वां तीन दिवसीय प्रदेश अधिवेशन कोयला नगरी धनबाद में आयोजित होने जा रहा है। यह आगामी तीन, चार और पांच जनवरी 2025 तक चलेगा। इस अधिवेशन का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार करेंगे। साथ ही विशिष्ट अतिथि के तौर पर सुप्रसिद्ध भोजपुरी गायक और सांसद मनोज तिवारी एवं विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय मंत्री क्षमा शर्मा सम्मिलित होंगी। प्रदेश मीडिया संयोजक गुड्डू राय ने रविवार को बताया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के तीन दिवसीय प्रदेश अधिवेशन में राज्य के प्रत्येक जिले एवं शैक्षणिक संस्थानों से 1000 छात्र, छात्राएं, शिक्षाविद एवं प्राध्यापक कार्यकर्ता सहभागी होने धनबाद पहुंचेंगे। उन्होंने बताया कि इस अधिवेशन के निमित्त गोविंदपुर में स्थित के के पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में एक अस्थायी नगर क्रांति सूर्य बिरसा मुंडा के नाम पर बसाया जाएगा। जहां पर उद्घाटन समारोह के साथ-साथ संस्कृतिक कार्यक्रम, प्रस्ताव सत्र इत्यादि कार्यक्रम होंगे।

एड वर्ल्ड कंपनी के नेशनल प्रमोटर भारत बिजनेस अवार्ड से सम्मानित

रांची: झारखंड के ऐड ऑर्ल्ड कंपनी ऑनलाइन मार्केटिंग में आज पूरे भारत में परचम लहरा रहा है। यही कारण है कि ऐड ऑर्ल्ड कंपनी के नेशनल प्रमोटर को मास्टर ऑफ एक्सीलेंस अवॉर्ड और उनके टीम को दिल्ली में भारत बिजनेस अवॉर्ड्स मिला है। प्रमोटर को मास्टर ऑफ एक्सीलेंस अवॉर्ड और भारत बिजनेस अवॉर्ड्स ताईकी मीडिया लिमिटेड के द्वारा दिया गया है। इस अवाड्र्स समारोह में देश भर से कई बिजनेसमैन शामिल हुए थे। ऐड ऑर्ल्ड के नेशनल प्रमोटर असित चक्रवर्ती ने बताया कि हमारी कंपनी 5 साल पहले झारखंड के रांची से शुरूआत की थी। आज पूरे भारत में हमारी कंपनी का अलग पहचान बन गयी है। हालांकि असित ने बताया कि हमारी टीम 25 सालों से नेटवर्किंग के काम कर रही है। आज इस कंपनी में झारखंड उड़ीसा, बंगाल, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, गुजरात और अन्य कई राज्यों के लोग काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि ऐड ऑर्ल्ड कम्पनी पर्सनल केयर, आयुर्वेद केयर और किचन केयर पर काम कर रही है। आज इस कंपनी को देशभर लोगों का काफी प्यार मिल रहा है।

181वां निःशुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा भंडारे का हुआ वितरण

रांची : जे.सी.आई राँची उडान के सौजन्य से श्री कृष्ण प्रणामी परिवार के सदस्यों के द्वारा निःशुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा भंडारे मे 1100 से अधिक श्रद्धालुओ ने अन्नपूर्णा भंडारे का प्रसाद वितरण किया गया। रांची की सुप्रसिद्ध समाजिक एव धार्मिक संस्था एम आरड्ड एस श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट एव स्वामी सदानंद प्रणामी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि) दिल्ली शाखा रांची शहर की जानी मानी समाजिक संस्था है। गुरू महाराज के जनसेवा को समर्पित जीवन के स्वर्णिम 52 वर्ष पुरे होने के उपलक्ष्य में आज रविवार दिनांक 22 दिसम्बर 24 को रांची शहर के पुंदाग स्थित संस्था के श्री कृष्ण प्रणामी सेवाधाम मंदिर (राधा-कृष्ण) मंदिर(मंगल राधिका सदानंद श्री कृष्ण प्रणामी सदगुरु कृपा अपना घर आश्रम) के प्रांगण मे जेड्ड सी.आई राँची उडान (जेसीआई राँची उडान) जो रांची शहर की जानी मानी समाजिक संस्था है। संस्था की अध्यक्ष ट्विंकल छावनिका सचिव आदिति मेवाडा अनिता अग्रवाल,सुधा गोयनका,उषा खेमका एवं जे.सी.आई राँची उडान के सदस्यों के सौजन्य से 181 वाँ नि:शुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नापूर्णा भंडारे के संयोजक ओमप्रकाश सरावगी की एवं सह संयोजक पवन पोद्दार, बिष्णु सोनी की देखरेख मे शहर की सुप्रसिद्ध समाजिक संस्था जेसीआई राँची उडान के सदस्यों के द्वारा वहाँ के जरूरतमंद एव अभावग्रस्त ग्रामीणों मंदिर के आस पास के रहने वाले श्रद्धालुओ, जरुरतमंद परिवार के सदस्यों मंदिर के सामने के गुजरने वाले राहगीरों एवं बच्चों के बीच 181 वाँ नि:शुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा भंडारे का विधिवत उद्घाटन कर वितरण शुरू किया गया।

बीजेपी ने नरेंद्र मोदी हेल्थ कैम्प का किया आयोजन, मरीजों में बांटी मुफ़्त दवाइयां

रांची : भाजपा नेता और राजधानी रांची के समाजसेवी आदित्य विक्रम जयसवाल के सौजन्य से आज दिनांक 22-12-2024 को चौधरी धर्मशाला, खादगढ़ा सब्जी मंडी, सुखदेव नगर, रांची में नरेंद्र मोदी मेगा हेल्थ कैम्प का आयोजन किया गया। यह आयोजन सुबह- 11:00 से 1:30 बजे तक चला, जिसमें रांची के प्रख्यात चिकित्सक द्वारा 321 मरीजों का हेल्थ चेकअप कर उन्हें मुफ्त दवाइयां भी दी गई।कैंप में डॉ. सिद्धार्थ कुमार एम.सी.एच. यूरोलॉजी (एम्स) एमएस (जनरल सर्जरी), डॉ. रीमा खलखो एमबीबीएस, एमएस, पीजीडीएफएम (सीएमसी वेल्लोर), डॉ. जैमेश कुमार भगत,दंत रोग विशेषज्ञ जेके भगत डेंटल क्लिनिक, कांके रोड, डॉ. अपूर्वा बरियारबीडीएस, डॉ. राकेश अग्रवाल, करुणा ऑर्थो एंड स्पाइन, डॉ. सतीशऑकोलॉजिस्ट, एचसीजी, कैंसर विशेषज्ञ मेदांता अस्पताल, डॉ. अवनीश सिंह, नेत्र विशेषज्ञ आइरिस सुपरस्पेशलिटी आई केयर सेंटर, डॉ. सुधीर पांडे एवम डॉ. मधुकर आनंद फिजियोथेरेपिस्ट के साथ साथ रांची सदर अस्पताल से सिविल सर्जन की टीम शामिल थी। मुफ्त चिकित्सा शिविर के दौरान आदित्य विक्रम जायसवाल ने कहा कि मानव सेवा से बढ़कर कोई अन्य सेवा नहीं है, सेवा ही हमारा लक्ष्य है। आज हमलोगों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नाम पर मेगा हेल्थ कैंप की शुरूआत की है यह बहुत ही स्पेशलाइज्ड है इसमें सभी स्तर का इलाज परामर्श दिया गया।

एक नजर

मथुरा प्रसाद महतो को मुख्य सचेतक बनाये जाने पर किया गया स्वागत

धनबाद : टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो को मुख्य सचेतक बनाये जाने पर उनके आवास मे शहीद शक्ति नाथ महतो स्मारक समिति की और से फुल माला एवं बुके देकर सम्मानित करतें। मौके पर शिव प्रसाद महतो ,जवाहर रवानी, घलटु त्रिगुनाइत, प्रेम चन्द महतो,जगदीश महतो, नरेश महतो, बिमल कुमार महतो, बैजनाथ महतो,मुक्तेश्वर महतो सहित समिति के सदस्य उपस्थित थे।

शारदा देवी की 172 वीं जयंती पर कंबल का हुआ वितरण

बोकारो : चंदनकियारी प्रखंड के योगीडीह स्थित श्री श्री रामकृष्ण विवेकानंद सेवाश्रम में मां शारदा देवी की 172 वीं जन्मोत्सव मनाई गई। मौके पर आश्रम में विशेष पूजा, चंडी पाठ, पुष्पांजलि, हवन एंव खिचड़ी महाप्रसाद का वितरण किया गया। साथ ही महाप्रसाद का वितरण भी किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि मंगलम कोल्डफील्ड लिमिटेड अमलाबाद कोलियरी के चक्षु गर्ग ने जरूरतमंद लोगों के बीच कम्बल वितरण की । कहा कि मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है । लोगों की सेवा करने में परम आनंद का अनुभव होता है । कहा कि लोगों को अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा जरूरी करना चाहिए। आश्रम संचालन समिति की यह पुनीत कार्य सराहनीय है । एक सवाल के जबाब उन्होंने कही आमलाबाद कोलियरी चालू होते ही आमलाबाद व आसपास के लोगो को प्राथमिकता मिलेगी। अध्यक्ष सुकुमार मुखर्जी ने मां शारदा देवी के जीवनी पर प्रकाश डाले। कहा कि हर जीव में शिव का वास होता है । कहा कि हमें सेवाश्रम के माध्यम से लोगों को सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है । मौके पर अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, सचिव सुकुमार मुखर्जी, कोषाध्यक्ष सह संघठन मंत्री मिहिर मुखर्जी, पूर्व मुखिया हरिपद राय, जिप सदस्य प्रतिनिधि रामपद दास,बालापन मुखर्जी,साधु रवानी, अशोक बनर्जी, रामेश्वर कुम्भकार, भुषण तिवारी, हराधन महतो,प्रताप मुखर्जी,मानिक सिंह, अशौक माजी,पतित पावन, सचिन महतो, हरा धन महतो, भुषण तिवारी, भोलानाथ, सुफल रवानी,राजेश सिंह,कृष्ण गोप, ,समेत अन्य थे ।

डीआईपी मजदूरों का धरना पांचवें दिन भी रहा जारी

बोकारो : इलेक्ट्रो स्टील वेदांत के डीआईपी में कार्यरत मजदूर द्वारा वेतन वृद्धि सहित 10 सुत्री मांगों को लेकर पांचवे दिन भी रविवार धरना जारी रही। मजदुरो ने बताया कि प्रबंधन हमेशा मागों पर वर्ता करती है। लेकिन आश्वाशन ही देती है। कंपनी की गलत निति को चलने नहीं देगें। मजदूरों ने कहा कि अब आर पार की लड़ाई होगी। इसके पूर्व भी तीन बार वर्ता हो चुकी है ,लेकिन कंपनी अपनी गलत नीति से बाज नहीं आ रही है। अब उग्र आंदोलन की शुरू होगी। धरना स्थल पर इस्लाम अंसारी लुकमान अंसारी युधिष्ठिर हजरा विकास गोरी मिथुन गोरी राजीव दुबे जयप्रकाश साधु रजवार अजय रजवार अजय महतो रफीक अंसारी रंजीत महतो सिद्धू रजवार सहित सैकड़ों मजदुर उपस्थित थे।

लक्ष्य को पाने के लिए संघर्ष ही एकमात्र रास्ता : दिनेश झा ललन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : स्थानीय ऑल हेवेन्स, चीरा चास में बैंक ऑफ इंडिया इम्पलाइज यूनियन झारखंड स्टेट के बोकारो अंचल के सदस्यों का एक दिवसीय बैठक संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष साथी नंदकुमार महाराज की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में बैंक ऑफ इंडिया के बोकारो अंचल के बोकारो एवं गिरिडीह जिला के सुदूरवर्ती सभी शाखाओं के कर्मचारियों की जिसमें महिला सदस्यों की भी भारी संख्या में भागीदारी रही। बैठक का शुभारंभ अनुपमा कुमारी, सुषमा पांडे, सरिता कुमारी, मिताली, मेघा, निवारण मंडल, एवं राजहंस द्वारा इतनी शक्ति हमें देना दाता एवं हम होंगे कामयाब के गायन से हुआ। इसके उपरांत बैंक ऑफ इंडिया इम्पलाइज यूनियन झारखंड स्टेट के सहायक सचिव नुरेंद्र कुमार दास के द्वारा स्वागत उद्बोधन एवं संचालन राकेश मिश्रा द्वारा किया गया। बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित फेडरेशन ऑफ बैंक ऑफ इंडिया स्टाफ यूनियन्स के अखिल भारतीय महासचिव तथा बैंक ऑफ इंडिया इम्पलाइज यूनियन झारखंड स्टेट के महासचिव साथी दिनेश झा ललन ने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि आज फिर से ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा रही है, जहां हम अपने अस्तित्व को बचाने के साथ-साथ बैंक को भी बचाने के लिए तथा इसे जनोंन्मुख बनाए रखने के लिए संघर्ष हेतु खड़ा होना पड़ेगा। उन्होंने आगे कहा कि इसके लिए मानसिक रूप से पूर्णरूपेण संगठित होकर संगठन के नेतृत्व में सतक संघर्ष करना होगा, कारण संगठन का कोई विकल्प नहीं है आज बैंकों में जिन समस्याओं यथा ग्राहक सेवा संतोषप्रद नहीं होना, आए दिन ग्रहको को बैंक काउंटरों पर जूझते हुए दिखना साथ ही ग्राहकों के कार्य मनानुकूल नहीं होने से अनावश्यक कर्मचारियों पर उत्तेजित होना एवं कर्मचारियों पर भी अत्यधिक काम का दबाव होना, अति आवश्यक होने पर भी कर्मचारियों को अवकाश न मिल पाना साथ ही प्रावधान होने के बावजूद भी आग्रहानुसार स्थानांतरण नहीं होना, बैंकों में आधारभूत संरचना की कमी होना आदि से ग्राहकों एवं कर्मचारी दोनों को जूझना पड़ रहा है। इन सभी समस्याओं का मूल कारण बैंकों में कर्मचारी संप संवर्ग में बहाली नहीं होना है। इस बहाली नहीं होने के पीछे भारत सरकार की वर्तमान नीतियां मूल रूप से जिम्मेवार हैं। जहां एक और बैंकों में लिपिक संवर्ग की संख्या घटाने की बात की जा रही है वहीं चतुर्थ वर्गीय श्रेणी में स्थाई बहाली को पूर्णतया बंद कर लेबर सप्लाई एजेंसी से अनुबंध पर इस श्रेणी का कार्य करने की बात तय की गई है। साथ ही बैंकों में एक साल के लिए अप्रेंटिस बहाली की भी बात तय कर ली गई है। स्थाई कार्यों के लिए इस प्रकार की बहाली से जहां एक ओर बहाल हुए कर्मियों का शोषण होगा वहीं बैंक के सुरक्षा के लिए अत्यंत ही घातक होगा। इन सब बातों को रोकने के लिए तथा बैंकों में स्थाई बहाली जल्द से जल्द कराने के लिए संघर्ष ही एकमात्र रास्ता है। कारण न ही बैंक प्रबंधन इन बातों पर ध्यान दे रही है और ना ही भारत सरकार कुछ कर रही है। इसलिए राज्य कार्यकारिणी एवं फेडरेशन कार्यकारिणी बैठक में यह तय कर लिया गया है।

संक्षिप्त खबरें

तेतुलमारी कोल डंप के मजदूरों ने किया प्रदर्शन

धनबाद : सिजुआ क्षेत्र के तेतुलमारी कोलियारी में संचालित चेन्नई राधा नामक आउटसोर्सिंग पहाड़ी पैच में असंगठित मजदूर के सरदार मनोज सरदार ने कहा की तेतुलमारी कोलियरी में दिसंबर माह में 1500 टन का डी ओ आया है, लेकिन कोयला के अभाव में असंगठित मजदूरो को रोड सेल को पर्याप्त कोयला उपलब्ध कराने की मांग को लेकर रविवार को असंगठित मजदूरो ने किया विरोध प्रदर्शन। मजदूरो ने बताया कि सिजुआ क्षेत्र अंतर्गत तेतुलमारी कोलियरी में संचालित चेन्नई राधा आउटसोर्सिंग के पेटी कांट्रेक्टर एल पी पी कंपनी के माइंस में काफी कोयला है जो ट्रक को रोड सेल के लिये कोयला नही दे रहा है,जिससे असंगठित मजदूरो के संबंध ने बताया कि कोयला रहते रोड सेल को कोयला नही मिल रहा है,इस संबंध में तेतुलमारी कोलियरी के परियोजना पदाधिकारी पंकज कुमार ने शनिवार को ऑन लाइन मामला दर्ज कराते हुये क्षेत्रीय प्रबंधन को पत्र द्वारा सूचित किया है। इधर डंप के मजदूरो ने कहा कि अगर प्रबंधन रोड सेल को कोयला उपलब्ध नही करवाती है तो बाध्य होकर हमसब असंगठित मजदूर तेतुलमारी कोलियरी का चक्का जाम कर देंगे। मौके पर फेकू मल्लाह, रामचन्द्र मल्लाह, अजित रवानी, बिनोद मल्लाह, सिकंदर यादव,भीम पासवान अख्तर खान, लालू देवी, रेखा देवी, कुंती देवी, कौशल्या देवी,रिंकी देवी, उषा देवी,बिनोद सिंह, गुड्डू कुमार, जितेंद्र कुमार, संजय निषाद, सुरेश भुइँया, राजाराम भुइंया, उमेश यादव सहित भारी संख्या में असंगठित मजदूर उपस्थित थे।

पांचवें वार्षिक खेलकूद दिवस का विधायक ने किया उद्घाटन

धनबाद : रविवार को सर्वमंगला पब्लिक स्कूल नगरिकला के पांचवे वार्षिक खेलकूद दिवस मुख्य अतिथि टुंडी विधायक सह मुख्य सचेतक मथुरा प्रसाद महतो ने दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया गया। खेल कूद में विभिन्न प्रकार के दौड़, रेस, ट्रैक प्रतियोगिता, लंबा जंप आदि का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सफल विद्यार्थियों को मेडल व प्रमाण पत्र मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किया गया। मुख्य की थी द्वारा इस आयोजन को विद्यार्थी के जीवन में जरूरी बताया खेल कुछ विद्यार्थी को आप संभाल समाजिक औसत समय प्रबंधन एवं अनुशासन के लागे बौद्धिक सारे रेस क्षमता में वृद्धि होने की बात मुफ्ती द्वारा कालिया सर्वमंगला सोसाइटी द्वारा सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में पिछले वर्षो से चिकित्सक एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान को सराहना किया मोके पर सोसाइटी के अध्यक्षा डॉक्टर सर्वमंगला प्रसाद, प्राचार्या डॉक्टर प्रभा सक्सेना, चेयरमैन इंजिनियर महेंद्र प्रसाद, डॉक्टर हरदेव प्रसाद, कल्याणी नायर, बिंदी कुमारी, प्रकाश कुमार, दिलीप कुमार, मृत्युंजय कुमार सहित स्कूल के सभी सदस्यगण एवं विद्यार्थी व अविभावक गण उपस्थित थे।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति के 35 वें स्थापना दिवस पर श्रीनिवास रामानुजन की 137वीं जयंती मनायी गयी

धनबाद : रविवार को मध्य विद्यालय खरिकाबाद में ज्ञान विज्ञान समिति झारखंड जिला इकाई धनबाद द्वारा भारत ज्ञान विज्ञान समिति का 35 वीं स्थापना दिवस व भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन जी के 137 वीं जयंती मनाई गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद कैलाश पति मधेशिया व संचालन ज्ञान विज्ञान समिति के सचिव भोला नाथ राम द्वारा किया गया। इस अवसर में मंचासिन में भारत ज्ञान विज्ञान समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. काशी नाथ चटर्जी, ज्ञान विज्ञान समिति झारखंड के उपाध्यक्ष हेमंत कुमार जायसवाल, वैज्ञानिक चेतना के राज्य अध्यक्ष प्रो. दीपक कुमार सेन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी रवि सिंह,गोंडूडीह ओ . पी. प्रभारी राजन कुमार झा, शिक्षा विद विकाश कुमार रवानी , ज्ञान विज्ञान समिति के जिला उपाध्यक्ष विकास कुमार ठाकुर आदि मौजूद थे। सर्वप्रथम राष्ट्रीय गणितज्ञ दिवस के अवसर में महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इसके पश्चात सभी मंचासिन अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया। शिक्षा ,स्वास्थ्य, वैज्ञानि चेतना व सामाजिक सुरक्षा आदि विषयों पर भारत ज्ञान विज्ञान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. काशी नाथ चटर्जी ने कहा कि भारत ज्ञान विज्ञान समिति का स्थापना 22 दिसंबर 1989 को हुई थी, ज्ञान विज्ञान समिति, गरीबों वंचित और महिलाओं के बीच कार्य करती है, साक्षरता अभियान के दौरान समिति ने देश में 15 करोड़ साक्षर और डेढ़ करोड़ स्वयं सेवक तैयार किए थे। आज बदलते हुए समय में समाज के बीच कार्य करना चुनौती पूर्ण है। इसके लिए हमे नए तरीके सोचने होंगे।राज्य उपाध्यक्ष हेमंत कुमार जायसवाल ने कहा कि बी जी वी एस स्थापना काल से ही साक्षरता अभियान के साथ लोगों के हक अधिकार और सशक्तिकरण पर कार्य करती है। प्रो. डॉ. दीपक कुमार सेन के द्वारा उपस्थित लोगों शुभकामनाएं दी गई ।

बाल विवाह मुक्त अभियान के तहत किया कैंडल मार्च

बोकारो : सहयोगिनी संस्था द्वारा जरीड़ीह प्रखंड के पाथुरिया पंचायत में ग्रामीण महिलाओं किशोरी यों ने बाल विवाह के खिलाफ चंद्र रुकता अभियान के तहत कैंडल मार्च का आयोजन किया। संबंध में सहयोगिनी की सचिव कल्याणी सागर ने बताया कि बाल विवाह जैसी कुप्रथा को हम समाप्त कर लड़कियों के जीवन को संवार सकते है। कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में ग्रामीणों, किशोरी ,पंचायत प्रतिनिधियों, सहिया,आंगनवाड़ी कार्यकताओं, शिक्षकों ने बाल विवाह के खिलाफ शपथ ली। उसके बाद पूरे गांव में कैंडल मार्च के साथ ही बाल विवाह के खिलाफ नारे बुलंद की गई। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम देश से बाल विवाह के खात्मे के लिए भारत सरकार के बाल विवाह मुक्त भारत के आह्वान के समर्थन में किया गया है।

संकल्प एजुकेशन अंगार पथरा में राष्ट्रीय गणित दिवस पर हुई नवोदय मॉक टेस्ट परीक्षा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : रविवार को संकल्प एजुकेशन अंगार पथरा में नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा 2025 की तैयारी को लेकर एक मॉक टेस्ट परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें धनबाद जिला के विभिन्न विद्यालयों के 50 छात्र छात्राओं ने भाग लिया प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए संकल्प एजुकेशन के निदेशक सहदेव महतो ने कहा कि नवोदय चयन परीक्षा 2025 का एडमिट कार्ड आ चुका है एवं सभी छात्र-छात्राओं को पूरे मन से लग जाना चाहिए । परीक्षा 18 जनवरी को धनबाद जिला के विभिन्न केंदो पर होगा । इस परीक्षा में मुख्य रूप से 40 प्रश्न मानसिक योग्यता के 20 प्रश्न गणित के एवं 20 प्रश्न भाषा विषय के होते हैं। सभी विषयों में अलग-अलग क्वालीफाइंग मार्क्स लाना आवश्यक होता है। मॉक टेस्ट में प्राथमिक विद्यालय पासी टांड़ का छात्र प्रतीक कुमार 100% अंक लाकर प्रथम स्थान पर रहे । हिंदी गुजराती मध्य विद्यालय का छात्र युग आर्य, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर तेतुल मारी का छात्र राजवीर सिंह,केसलपुर मध्य विद्यालय की छात्रा मानवी कुमारी 95% अंक लाकर द्वितीय स्थान पर रहे। जबकि सिंबोसिस पब्लिक स्कूल बरवाडा धनबाद का छात्र रोहित कुमार एवं प्रीमिया ऋषिकेश सिजुआ की छात्रा स्नेहा कुमारी 90% अंक लाकर तृतीय स्थान पर रहे। संस्था के निदेशक सहदेव महतो ने सभी सफल छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया मौके पर सारे छात्र-छात्राओं के अभिभावक एवं शिक्षक सुभाष ऋषि, कुणाल कुमार शर्मा, मनोरमा देवी, नेहा श्री,शैलेंद्र यादव आदि उपस्थित थे।

हॉबी सेंटर में बंगीय संगीत परिषद की वार्षिक परीक्षा संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : जय प्रकाश नगर,गली न.10 स्थित धनबाद का ख्याति प्राप्त ड्राइंग इंस्टीट्यूट हॉबी सेंटर में रविवार को बांगीया संगीत परिषद का वार्षिक परीक्षा 2024 का आयोजन किया गया। सातवां व आठवां डिप्लोमा परीक्षा में झारखंड बिहार और वेस्ट बंगाल के विद्यार्थियों ने निर्धारित स्टिल लाइव और वाटर कलर से मार्केट सीन, फेस्टिवल एवं अन्य थीम के चित्रण को बहुत ही बारीकी से उकेर कर बहुत ही शानदार चित्रकारियों को कोलकाता से आए जज सुशांत चक्रवर्ती के समक्ष प्रस्तुत किया। सुशांत चक्रवर्ती ने बताया भारतीय चित्रकारी के इस सुनहरे सफर में देश के साथ बर्लिन, न्यूयॉर्क, फ्रांस मे भी आर्ट और कल्चर के एग्जीबिशन उनके तत्वाधान में देश की कला और संस्कृति के बनाए चित्रों ने एक शानदार छाप छोड़ी है। आज धनबाद के प्रख्यात ड्राइंग इंस्टीट्यूट हॉबी सेंटर में विद्यार्थियों ने बहुत ही सुंदर एवं दमदार चित्रकारी पेश की है जिन्हें प्रमाण पत्र दिया जाएगा, जिसे प्राप्त कर किसी भी संस्थाओं एवं स्कूलों में शिक्षक का जॉब प्राप्त करने में सक्षम होंगे। हॉबी सेंटर के निदेशक एवं ख्याति प्राप्त आर्टिस्ट शिव शंकर घर ने कहा यह परीक्षा बांगिया संगीत परिषद के नियमों एवं निदेर्शानुसार सुचारू रूप से संचालित किया गया है। विद्यार्थियों ने काफी लगन, मेहनत और एकाग्रता के साथ परिपक्त चित्रकरी के गुण सीखे है और अब डिप्लोमा प्राप्त कर वर्तमान और भविष्य में वे हमारे देश के बच्चों को विभिन्न संस्थाओं एवं स्कूलों में गहन चित्रकारी के संदर्भ में बारीकियां का प्रशिक्षण देंगे। परीक्षार्थी करनजीत कौर ने बताया ड्रॉइंग एक करियर ओरिएंटेड अपॉर्चुनिटी है चाहे आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स, स्ट्रीम हो, बीएसए हो या आर्किटेक्ट फील्ड हो सभी में ड्राइंग की आवश्यकता पड़ती है।और हॉबी सेंटर से हमलोगों को करियर ओरिएंटेड ड्राइंग ट्रेनिंग मिल रही है। परीक्षा दे रहे हॉबी सेंटर के विद्यार्थी आदित्य ने बताया कि कोई ड्राइंग बनाने में सालों लग जाते है ।

डॉ. भीमराव आंबेडकर के अपमान पर अमित शाह का किया गया पुतला दहन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : देश के गृहमंत्री अमित शाह ने लोकतंत्र कि मंदिर में लोकतंत्र की आत्मा संविधान के निमार्ता बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर को लेकर आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणी करने के खिलाफ न्याय पसंद समाजसेवी, राजनीतिक दलों के नेताओं ने चन्दनकियारी में हरदयाल चौक से सुभाष चौक तक केंद्रीय मंत्री अमित शाह का शव यात्रा कर पुतला दहन किया। अध्यक्षता बीस सूत्री उपाध्यक्ष देवाशीष मंडल व संचालन जगन्नाथ रजवार ने किया। वक्ताओं ने कहा कि गृहमंत्री अमित शाह ने दलित, वंचितों और अन्य उपेक्षित लोगों के आत्मसम्मान और मानवाधिकारों के लिए अतिमानवीय और कल्याणकारी संविधान रूपी मूल पुस्तक के रचयिता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर भगवान के समान पूजनीय हैं। अमित शाह द्वारा उनका अनादर कर लोगों के दिलों को ठेस पहुंचाया। जिसका कड़ी निन्दा कर आमित शाह सार्वजनिक रुप से माफी मांगने का आक्रोश व्यक्त किए ।मौके पर देवाशीष मण्डल, जगन्नाथ रजवार,बनमाली बाउरी, बिरिंची महाथा, जलेश्वर दास, दुलाल प्रमाणिक दुलाल महतो मनोज गोराई, बिरेन रजवार,आनंद दत्ता, धनज्जय सूत्रधर, रघुनाथ दत्ता, दीपक दास, शिबू राय, शंकर रजवार, इमरान काजी, बाबूलाल महाथा, राजेश दत्ता,मानिक महतो, बादल दे, राजीव रंजन, दिलीप औझा, राजेश भगत, तपन रजवार, माहिन्द्री बाउरी,जनकी महतो, सहित संयुक्त मोर्चा के ऊजार्वान कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

जिला प्रशासन के सहयोग से सड़क सुरक्षा जागरूकता सेमिनार का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : रविवार को मैं हूं धनबाद समूह के द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से ट्रैफिक पुलिस के कर्मचारियों अधिकारियों एवं धनबाद पुलिस के कर्मचारियों अधिकारियों के लिए सड़क सुरक्षा जागरूकता विषय पर टाउन हॉल धनबाद में सेमिनार का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की शुरूआत अरविंद कुमार सिंह के द्वारा स्वतंत्र कुमार को पुष्प गुच्छ तथा मैं हूं धनबाद समूह के प्रेसिडेंट पूजा रत्नाकर को पुष्प गुच्छ देकर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मैं हूं धनबाद समूह के अध्यक्ष पूजा रत्नाकर के द्वारा सड़क सुरक्षा विषय पर संस्था के द्वारा किए गए क्रियाकलाप पर चर्चा कर तथा अन्य क्रियाकलाप के विषय में बताकर किया गया। तत्पश्चात स्वतंत्र कुमार के द्वारा सड़क सुरक्षा की दुनिया में वर्तमान स्थिति क्या है के साथ-साथ भारत कहां खड़ा होता है सुरक्षा के मामले में। हमारे झारखंड राज्य की क्या स्थिति है एवं अंततः हमारे धनबाद की वर्तमान स्थिति क्या है सड़क सुरक्षा के मामले में। सेमिनार के दौरान सवाल जवाब सेशन भी रखा गया जिसमें धनबाद के डीटीओ, दिवाकर सी. द्विवेदी तथा अरविंद कुमार सिंह , ट्रैफिक डीएसपी धनबाद ने धनबाद की तत्कालीन सड़क सुरक्षा से संबंधित समस्याओं पर स्वतंत्र कुमार से गहनता पूर्वक चर्चा किया। सेमिनार के दौरान कुछ निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी चर्चा की गई। 1. ब्लैक स्पॉट क्या है 2. ट्रैफिक सिग्नल्स 3. 5ए'२ के माध्यम से हम लोग किस प्रकार लोगों की जान बचा सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में अरविंद कुमार सिंह तथा डीटीओ धनबाद के द्वारा मैं हूं धनबाद समूह के साथ मिलकर सड़क सुरक्षा माह के दौरान सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाने पर भी प्रकाश डाला गया।

रोटरी क्लब ऑफ स्टील सिटी ने क्रिसमस के अवसर पर अलगोड़ा के बच्चों के साथ मनाया क्रिसमस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : क्रिसमस और त्योहारों की भावना को ध्यान में रखते हुए, रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी ने साल के अंतिम कार्य दिवस पर रोटरी प्ले स्कूल अलगोड़ा में विशेष आयोजन किया। इस मौके पर अलगोड़ा के बच्चों के चेहरे पर मुस्कान और आनंद की छवि देखने लायक थी। अतिथियों रोटरी सदस्यों ने इस दिन को यादगार बनाने में अपना पूरा योगदान दिया। कार्यक्रम में एमजीएम स्कूल के प्रतिष्ठित प्राचार्य और रोटेरियन जकारिया के परिवार के सदस्यगण, रोटेरियन अशोक तनेजा, रोटेरियन अशोक जैन, रोटेरियन पूनम त्रेहन, रोटेरियन अनिल त्रेहन, मोहन सर और अन्य लोगों ने भाग लिया। उन्होंने इस खुशी के अवसर पर भाग लेकर प्यार और सकारात्मकता का संदेश फैलाया। कार्यक्रम में बच्चों के लिए आकर्षक गतिविधियों और सभी उपस्थित लोगों के बीच शुभकामनाओं का आदान-प्रदान हुआ। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण छह ट्राइसाइकिलों का दान था, जिसे रोटेरियन जकारिया, रोटेरियन अशोक जैन और रोटेरियन सुरेश अग्रवाल ने दिया। यह उदार कदम रोटरी की सच्ची भावना–जरूरतमंदों को देने और उनकी देखभाल करने का प्रतीक था। क्लब के अध्यक्ष रोटेरियन महेश कुमार गुप्ता ने भाग लेने वाले रोटेरियनों और अतिथियों को धन्यवाद दिया और कहा, ₹हम बच्चों और पूरे समाज के जीवन में सार्थक बदलाव लाने में विश्वास रखते हैं। आज का उत्सव रोटरी क्लब की समाज की निःस्वार्थ सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है, खासकर त्योहारों के मौसम में। बच्चों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिससे वातावरण में खुशी और उमंग की अनुभूति हुई। उनकी प्रसन्नता उत्सव की सफलता और रोटरी क्लब और इसके सदस्यों के सामूहिक प्रयासों का प्रतीक थी। रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी ऐसे प्रयासों के माध्यम से समाज की सेवा करने के अपने मिशन पर कायम है। क्लब ने सभी योगदानकताओं, समर्थकों और उपस्थित लोगों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मदद की।

एक नजर

कर्मियो को बंधक बनाकर 30 मीटर केबल की लूट

महुदा : भाटडीह ओपी क्षेत्र में स्थित बीसीसीएल के नागदा स्थित विद्युत सबस्टेशन में शुक्रवार की रात अज्ञात अपराधियों के एक दल ने दो सुरक्षा प्रहरी को बंधक बनाकर 30 मीटर केबल काटकर ले गए। शनिवार प्रातः घटना की जानकारी कोलियरी प्रबंधक को दी गयी। उन्होंने भाटडीह ओपी को फोन पर घटना की जानकारी दी। घटना के संबंध में बंधक बीसीसीएलकर्मी गुलाम अंसारी ने बताया कि शुक्रवार रात्रि करीब एक बजे विद्युत सब स्टेशन में 20-25 की संख्या में नकाबपोश अपराधी आए और उसे एवं अशोक तिवारी नामक कर्मी को पीछे से हाथ बांधकर नीचे लेटा दिया और बिजली घर में घुसकर लगभग 30 मीटर केबल काटकर ले गए। अपराधियों के जाने के बाद किसी तरह हाथ खोलकर कोलयरी प्रबंधन को जानकारी दी। इधर केबल कटने से मधुडीह क्वार्टर, मधुडीह एवं नागदा में विद्युत आपूर्ति बाधित हो गयी है। इस संबंध में बीसीसीएल प्रबंधन की तरफ से भाटडीह ओपी में कोई शिकायत पत्र नहीं दिया गया है।

विधायक कार्यालय में जनता दरबार का हुआ आयोजन

हजारीबाग : सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने रविवार को लोगों की जन समस्याओं को सूना। कार्यक्रम में सैकड़ों लोग अपनी शिकायतें लेकर पहुंचे थे। इनमें पानी की आपूर्ति, बिजली कटौती, सड़कों की खराब स्थिति, पेंशन, रोजगार और अन्य बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी समस्याएं शामिल थीं। विधायक प्रदीप प्रसाद ने सभी शिकायतों को व्यक्तिगत रूप से सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों से तुरंत संपर्क कर समाधान की प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने बिजली विभाग को निर्देश दिया कि बार-बार कटौती वाले क्षेत्रों में आपूर्ति सुचारू की जाए। जलापूर्ति की समस्या पर उन्होंने नगर निगम को पाइपलाइन की मरम्मत और जल वितरण सुधारने के निर्देश दिए। विधायक ने जनता को आश्वस्त किया। आपकी समस्याएं मेरी अपनी समस्याएं हैं। मेरे दरवाजे हमेशा आपके लिए खुले हैं। मेरी प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी व्यक्ति को बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष न करना पड़े। कार्यक्रम में शामिल लोगों ने विधायक के प्रयासों की सराहना की। एक स्थानीय निवासी ने कहा, हमने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कई बार कोशिश की, लेकिन आज विधायक ने तुरंत कार्रवाई कर भरोसा दिलाया कि हमारी समस्याओं को गंभीरता से लिया जा रहा है। इस दौरान विधायक ने क्षेत्र में चल रही विकास योजनाओं पर चर्चा करते हुए उसकी जानकारी भी दी।

सड़क दुर्घटना में घायल वार्ड सदस्या की इलाज के दौरान मौत

सरिया(गिरिडीह) : सरिया थाना क्षेत्र के चीरुवां पंचायत के वार्ड नंबर 4 की वार्ड सदस्या की मौत इलाज के दौरान रांची रिम्स में हो गई. मौत की खबर प्रकार पूरे गांव में मातम छा गया। घटना के संबंध में पंसस लाल मोहम्मद ने बताया कि वार्ड सदस्या चमेली देवी (52)पति प्रयाग ठाकुर अपने पुत्र के साथ शनिवार की दोपहर लगभग 2:30 बजे किसी काम से बगोदर गई थी। जिनके सिर पर हेलमेट नहीं था। इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रही बाइक से टक्कर हो गई। इस दौरान चमेली देवी अपने बाइक से सड़क पर गिर पड़ी। जिनके सिर पर गंभीर चोटें आई। प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज हेतु उसे धनबाद ले जाया गया। उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें रांची रेफर कर दिया गया। जहां उन्होंने इलाज के दौरान अंतिम सांस ली। मौत की सूचना पाकर परिजनों में कोहराम मच गया।

बिहार के वनकर्मियों ने लोगों के साथ की मारपीट, आक्रोशित ग्रमीणों ने किया सड़क जाम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : जिला के डोमचांच थाना क्षेत्र अंतर्गत नीरू पहाड़ी चौक समीप दुकान चलाने वाले बकरा व्यवसायी अमित यादव सहित वीरेंद्र कुमार यादव, प्रदीप यादव, कुलदीप यादव सहित अन्य लोगों के साथ बिहार के नवादा जिला के वन विभाग के कुछ कर्मियों ने नीरू पहाड़ी चौक के समीप मारपीट करने का आरोप है। घायलों का ईलाज सदर अस्पताल कोडरमा से चल रहा हैं। वही आक्रोशित परिजनों ने रविवार को कोडरमा गिरिडीह रोड को जाम कर दिया। लोगों का कहना है कि बिहार वन विभाग के कर्मियों जरिये मारपीट की गई हैं। मारपीट क्यों हुई और मारपीट करने वाले कौन लोग थे। वहीं घटना की सूचना पाकर नीरू पहाड़ी चौक पर डोमचांच थाना की पुलिस, कोडरमा थाना की पुलिस, एसडीपीओ अनिल कुमार सिंह दल बल के साथ पहुंचे और लोगों को समझाने का प्रयास किया। काफी मशक्कत के बाद दोषियों पर कार्रवाई के आश्वासन पर लोग माने और फिर जाम हटा। मारपीट में घायल हुए लोगों के जरिये डोमचांच थाने में आवेदन देकर करवाई की मांग की गई हैं। बिहार से आये वन विभाग कर्मियों के जरिये आमलोगों से मारपीट के पूरे मामले को लेकर घटना की निंदा करते हुए ढिबरा स्क्रैप मजदूर संघ के अध्यक्ष कृष्णा सिंह घटवार ने पुलिस अधीक्षक से मांग किया कि बेवजह मारपीट करने वाले बिहार से आये वन विभाग कर्मियों की जांच करवाकर उनके विरुद्ध नियम संगत करवाई की जानी चाहिए । साथ ही उन्होंने कहा दोषी वन विभाग कर्मियों पर कानूनी करवाई नहीं होंगी तो आगे आंदोलन भी हो सकता है। वहीं दूसरी ओर वन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार कोडरमा से सटे रजौली थाना के पंचायत सवैयाटांड़ में हो रहे अवैध खनन पर रोक लगाने को लेकर रविवार के अहले सुबह वनकर्मियों एवं पुलिस बलों के संयुक्त कार्रवाई में तीन टेम्पो एवं चार बाइकों पर लदे माइका को जब्त किया गया। साथ ही अवैध खनन में जुटे छह लोगों को गिरफ्तार किया गया। वहीं कार्रवाई के बाद लौट रहे वनकर्मियों की टीम पर नीरू पहाड़ी के समीप कुछ लोगों ने बीच रास्ते में हमला कर दिया और माइका लदे एक टेम्पो को जबरन छुड़ा ले गए। इस घटना में कुल पांच वनकर्मी घायल हो गए, जिनका इलाज अस्पताल में चल रहा है। गिरफ्तार 6 लोगों में डोमचांच थाना क्षेत्र के शिवसागर निवासी महेश कुमार मेहता के पुत्र मनोरंजन कुमार मेहता और आर्गत मेहता के पुत्र राजित मेहता, तिनतारा गांव निवासी बासुदेव साह के पुत्र तुलसी साह, भेलवाटांड़ निवासी कृष्णलाल मोदी के पुत्र संजय मोदी, मधुबन गांव निवासी महरु यादव के पुत्र राजेन्द्र यादव एवं सिजुआ गांव निवासी बाबूलाल यादव के पुत्र राजेंद्र यादव शामिल है।

कांग्रेस खूंटी में 26 दिसंबर को निकालेगी पदयात्रा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : खूंटी जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसको लेकर खूंटी के सांसद कालीचरण मुंडा के खूंटी स्थित आवासीय कार्यालय परिसर में रविवार को कांग्रेस कार्यकर्ता मिलन समारोह सह एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कांग्रेस के खूंटी जिला प्रभारी अमूल्य नीरज खलखो ने बताया की 26 दिसंबर 1924 को कर्नाटक के बेलगाम में आयोजित कांग्रेस के सम्मेलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था। इसके 100 वर्ष पूरे होने पर जिला कांग्रेस के जरिये 26 दिसंबर को स्मारक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिला प्रभारी ने कहा कि 28 दिसंबर 2024 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपना स्थापना दिवस मनाएगी। उन्होंने कहा कि हमें कांग्रेस के 139 गौरवशाली वर्ष पूरे होने पर जयंती मनाना है। साथ ही हमें पार्टी की समृद्ध विरासत, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण में पार्टी के अहम योगदान पर विचार करने का अवसर मिला है। सांसद कालीचरण मुंडा ने कहा कि 26 दिसंबर को जिला कांग्रेस कमेटी के जरिये नेताजी चौक खूंटी से दतिया स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा तक पदयात्रा निकाली जाएगी और रेफरल अस्पताल के मरीजों के बीच फलों का वितरण किया जाएगा। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष रवि मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस के स्थापना दिवस के दिन 28 दिसंबर को सुबह नौ बजे जिला, मंडल और पंचायत स्तर पर कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में पार्टी का झंडा फहराया जाएगा। जिला अध्यक्ष ने इसके लिए सभी प्रखंड अध्यक्षों को जिम्मेदारी सौंपी।

खूंटी में सज गया क्रिसमस बाजार तैयारी में जुटे मसीही विश्वासी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : क्रिसमस को लेकर मसीही विश्वसियों का उत्साह चरम पर है। क्या शहर और क्या कस्बा हर ओर क्रिसमस का बाजार सज गया है। विभिन्न जगहों पर गूंज रहे कैरोल गीतों और क्रिसमस गैदरिंग और ईसाइयों का उत्साह बता रहा है कि प्रभु ईसा मसीह का आगमन जल्द होनेवाला है। जिला मुख्यालय के आरसी, जीईएल सीएनआई सहित अन्य गिरजाघरों को आकर्षक ढंग से सजाया जा रहा है। विभिन्न गिरजाघरों के रंग-रोगन का काम अंतिम दौर में है। 24 दिसंबर की रात होनेवाली विशेष प्रार्थना के विशेष व्यवस्था की गई है। प्रकाश व्यवस्था के साथ ही चर्च आनेवाले मसीही विश्वासियों के बैठने के लिए खास व्यवस्था की जा रही है। 24 दिसंबर को रौमन कैथोलिक चर्च में आधी रात को विशेष प्रार्थना शुरू होगी,जबकि जीईएल चर्च में शाम से ही विशेष प्रार्थना और अनुष्ठान शुरू हो जाएंगे। खूंटी जिला मुख्यालय के अलावा प्रखंड और कस्बाई इलाकों में क्रिसमस का बाजार सज चुका है। मसीही विश्वसियों के घरों से लेकर सड़कों तक क्रिसमस की खुशी साफ तौर पर दिख रही है। विभिन्न चौक-चौराहों पर क्रिसमस के रंग-बिरंगे स्टार्स, क्रिसमस ट्री चरनी, सांता क्लोज की टोपी, ड्रेस विभिन्न प्रकार की लाइट और पटाखों से पूरा बाजार पट गया है। राशन और कपड़ों की दुकान पर खरीदारों की भारी भीड़ देखी जा रही है। सामाजिक कार्यकर्ता पीटर मंडू कहते हैं कि क्रिसमस की तैयारी काफी व्यापक रुप से हो रही है। इसके जरिए हम अपने घर, मन, शरीर और भाव-भावनाओं को स्वच्छ करते हैं। मसीही विश्वासी बंस सुरीन ने कहा कि प्रभु यीशु का आगमन प्रेम और शांति का एहसास करानेवाला है।

अखिल भारतवर्षीय बर्णवाल वैश्य की जिला कार्यसमिति की बैठक सह वनभोज संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया(गिरिडीह) : रविवार को सरिया प्रखण्ड क्षेत्र के राजदाहधाम में अखिल भारतवर्षीय बर्णवाल वैश्य महासभा जिला कार्यसमिति की बैठक सह वनभोज कार्यक्रम सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष संजय मोदी व संचालन जिला सचिव अम्बिका प्रसाद ने की जबकि बतौर मुख्य अतिथि समाज के प्रदेश अध्यक्ष लखनलाल बर्णवाल, प्रदेश उपाध्यक्ष परमेश्वर मोदी, युवा जिलाध्यक्ष सूरज मोदी, महिला जिलाध्यक्ष दीपमाला बर्णवाल उपस्थित रही। बैठक में गिरिडीह जिले के सभी प्रखण्डों व पंचायतों में स्वजाति लोगों को एकत्रित कर एकजुट करने पर बल दिया गया। इसके बाद जिला युवा कमिटी व महिला जिला कमिटी का विस्तार किया गया। बैठक को सम्बोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष लखनलाल बर्णवाल ने कहा हमारा समाज देश की अर्थव्यवस्था का रीढ है, देश का बडा से बडा और छोटा से छोटा व्यवसायी हमारे समाज के लोग हैं। इसके साथ ही हमारा समाज शिक्षित समाज है,हमारे बच्चे इंजीनियर, डॉक्टर, आईएएस, आईपीएस जैसे पदों पर आसीन है। पर आज भी हम राजनीतिक रुप से पिछडे हुए हैं ,इसलिए हमसब आपसी मतभेद को मिटाते हुए एकजुट होकर समाज को सशक्त बनायें तभी हम राजनीतिक रुप से मजबूत हो सकेंगे। बैठक में बमशंकर बर्णवाल, नरेश बर्णवाल, शिवराम निशांत, देवकुमार मोदी, सुमन बर्णवाल, सुबाष मोदी, रनबीर बर्णवाल, इन्द्रजीत बर्णवाल, बिकास बर्णवाल, रतन मोदी, राजन मोदी, सुरेन्द्र मोदी, बिजय मोदी, संदीप बर्णवाल, महेश मोदी, बलवंत बर्णवाल, गोपाल बर्णवाल, संदीप बर्णवाल, अजीत मोदी, संजय बर्णवाल, निमीषा बर्णवाल समेत अन्य लोग शामिल रहे।

संताल परगना स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज/बरहेट : संथाल परगना स्थापना दिवस समारोह भोगनाडीह में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व बोरियो विधायक लोबीन हेंब्रम, बबलू हांसदा, सुरजु टुडू, प्रेम मरांडी, ईश्वर मरांडी, बड़का टुडू, सुनील हेंब्रम शामिल हुए।वही अतिथियों को आदिवासी रिति रिवाज से स्वागत किया गया। समारोह कार्यक्रम में साहिबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका के बुद्धिजीवी वर्ग के लोग शामिल हुए। समारोह कार्यक्रम हजारों की संख्या में महिला पुरुष बढ़ चढ़कर भाग लिए।कार्यक्रम का संचालन चंद्र मोहन हांसदा ने किया। समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक लोबीन हेंब्रम ने कहा की संथाल परगना में कानून पूर्व से बना है। लेकिन सरकार लागू नहीं करती, यहा के जल जंगल जमीन लुप्त हो रही है। इसका संरक्षण के लिए संथाल परगना में कानून बनाया गया है,लेकिन सरकार लागू नहीं किया। सीएनटी एसपीटी एक्ट, पी पेशा एक्ट, कानून लागू नहीं किया जाता। झारखंड के आदिवासी को अधिकार से हेमंत सोरेन वंचित रखा है। अगर आदिवासी को हेमंत सोरेन अपना परिवार मानती है तो झारखंड में सीएनटी, एसपीटी, एक्ट पी पेशा एक्ट लागू करे। तभी ही आदिवासी का दर्द आप समझेंगे।अगर इसके खिलाप आवाज बुलंद करते है तो पार्टी विरोधी कहते है, हेमंत सोरेन आदिवासी की संस्कृति को बचाकर रखे। आदिवासी समाज को बचाना है तो हरिया दारु शराब न पिए, तभी ही हमारा समाज आगे बढ़ेगा। मौके पर मनोज मुर्मू, मनोज हसदा, माइकल टुडू, होपना, के लावा अन्य मौजूद थे।

लूथरन मैदान में झामुमो के क्रिसमस गैदरिंग सह मिलन समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर (गुमला) : आजकल सभी ओर एक खास तरह का उत्साह, खुशी और जोश नजर आ रहा है। हो भी क्यों ना नया साल 2024 जो आ रहा है और उससे भी पहले क्रिसमस का उत्साह। 25 दिसंबर को यीशु मसीह के जन्मदिन की तैयारी को लेकर हर ओर खुशी मनाई जा रही है। लोग 25 दिसंबर का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। तभी तो क्रिसमस पर्व के नजदीक आते ही फिजाओं में चारो ओर एक खास तरह की खुशी और उल्लास नजर आने लगा है। इस दौरान जगह-जगह पर क्रिसमस गैदरिंग का आयोजन किया जा रहा है। इस सिलसिले में रविवार को चैनपुर के लूथरन स्कूल मैदान में झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष सुशील दीपक मिंज के नेतृत्व में सामूहिक क्रिसमस गैदरिंग सह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इससे पूर्व चैनपुर झामुमों जिला उपाध्यक्ष सुशील दीपक मिंज के नेतृत्व में बस स्टैंड से लूथरन मैदान तक कार्निवल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो की संख्या में लोगों ने भाग लिया। नाचते गाते व आतिशबाजी करते हुए कार्निवाल शोभा यात्रा में लोग लूथरन मैदान तक पंहुचे। कार्यक्रम स्थल के बगल में आकर्षक चरणी आकर्षक का केंद्र रहा। फादर पवन लकड़ा व पादरी नवीन बेक के द्वरा चरनी आशीष के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मौके पर मुख्य वक्ता फा पवन लकड़ा ने कहा कि क्रिसमस का यह त्यौहार खुशी शांति भाईचारा बांटने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि आज का समाज भौतिकवादी होता जा रहा है हमें अध्यात्मिक बनना है। दया का भाव दिखाना है और सेवा का अवसर पाना है। उन्होंने कहा कि मरियम की कोख से शांति का दूत और जगत का उद्धार करता महामानव धरती पर येशु के रूप में आया था। उन्होंने लोगों से प्रभु येशु के जीवन को आत्मसात करने की अपील की। सामूहिक क्रिसमस गैदरिंग कार्यक्रम को संबोधित करते हुए झमुमो के जिला उपाध्यक्ष सह बेंदोरा मुखिया सुशील दीपक मिंज ने कहा कि बालक यीशु दुनिया के उद्धार करता है उन्होंने मानव जीवन को खुशी शांति देने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। उन्होंने कहा कि हमें आपसी सौहार्द पूर्ण वातावरण में मिलजुल कर त्यौहार मनाना चाहिए गौशाला में जन्मे बालक येशु आपसी भाईचारे का संदेश देते हैं। उन्होंने कहा कि क्रिसमस का त्योहार खीस्त ही नहीं यह सभी वर्गों के लोगों के लिए शांति व सन्मार्ग का संदेश देता है। आज हम क्रिसमस एवं नया साल के उपलक्ष में क्रिसमस गैदरिंग का कार्यक्रम बना रहे हैं। इस मौके पर रंगारंग नागपुरी आर्केस्ट्रा प्रोग्राम का आयोजन भी किया गया था। इस नागपुरी आर्केस्ट्रा प्रोग्राम में सैकड़ो की संख्या में लोग 11:00 रात तक झूमते रहे। कार्यक्रम स्थल में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए चैनपुर पुलिस मुस्तैद नजर आई।

संक्षिप्त खबरें

जेंडर आधारित हिंसा के विरुद्ध ली शपथ

सिल्ली : शनिवार के दिन प्रखंड मुख्यालय के मुख्य द्वार पर विश्व महिला हिंसा उन्मूलन दिवस के अवसर पर जनप्रतिनिधियों ने जेंडर आधारित हिंसा के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान के तहत शपथ लिया। जनप्रतिनिधियों ने शपथ लिया कि हिंसा के खिलाफ हमेशा आवाज उठाएंगे और कभी मूकदर्शक बनकर नहीं रहेंगे। सहायता मांगने एवं सहायता देने में पीछे नहीं रहेंगे। सबको हिंसा के खिलाफ जोड़ेंगे। सबके साथ समान व्यवहार करेंगे और इसकी शुरूआत हम लोग अपने घर से करेंगे। लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ चुप्पी तोड़ेंगे। बेटी हो या बेटा दोनों के जन्म पर खुशियां मनाएंगे एवं भेदभाव नहीं करेंगे। बाल विवाह और घरेलू हिंसा का विरोध करेंगे। महिलाओं के प्रति होने वाले हिंसा का विरोध करेंगे। पीड़ित महिला को न्याय दिलवाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हर पीड़ित महिला को सम्मान के साथ सुरक्षा और संरक्षण देंगे और जानकारी को गोपनीय रखेंगे। हम सभी कानून को हाथ में नहीं लेंगे एवं हर घर और गांव में शांति का संदेश पहुंचाएंगे। इस मौके पर जिला परिषद उपाध्यक्ष बिना चौधरी, जिप सदस्य (पूर्वी) लक्ष्मी कुमारी, प्रखंड प्रमुख जितेंद्र बड़ाईक, उप प्रमुख आरती देवी सहित दर्जनों जनप्रतिनिधियों ने शपथ लिया।

कला प्रेमी विजय महतो स्मृति मेला की तैयारी को लेकर हुई बैठक

सिल्ली : रविवार को नव वर्ष के शुभ अवसर पर आगामी एक जनवरी सुरगुंजाडीह, लोटा में आयोजित कला प्रेमी स्व. विजय महतो स्मृति मेला की तैयारी बैठक हरिदास मुंडा की अध्यक्षता में रखी गई है। संचालन विकास कुमार महतो ने किया। बैठक में सर्व सम्मति से मेला कमिटी का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष कार्तिक चन्द्र महतो, उपाध्यक्ष विकास कुमार महतो, सचिव लखीराम महतो, उप सचिव पशुपति महतो, कोषाध्यक्ष अर्जुन राम महतो, उप कोषाध्यक्ष पांडव महतो, एवं संरक्षक लोटा पंचायत पूर्व मुखिया रविंद्र नाथ मुंडा, दशरथ महतो, हरिदास मुंडा, राधिका महतो, को बनाया गया। इस बैठक में मुख्य रूप से पंचपरगना ऑल आर्टिट्स एसोसिएशन के सचिव बजरंग पातर मुंडा, उप सचिव देवेंद्र नाथ महतो, कोषाध्यक्ष सरोज कुमार सिंह, उप कोषाध्यक्ष रविंद्र नाथ महतो, निर्देशक निलकांत यादव, उप निर्देशक परशुराम महतो लोकप्रिय कलाकर लखीराम नायक, दिनेश कुमार महतो, गुहिराम स्वाँसी, रामवृक्ष महतो, साथ ही लोटा पंचायत पूर्व मुखिया रविंद्र नाथ मुंडा, समाजसेवी राधिका महतो, मंटू कालिंदी, पूर्व शिक्षक गणेश महतो, वैधनाथ महतो, लसुवा महतो, लंबोदर महतो, नेपाल महतो, लम्बोदर मुंडा, रतन लाल महतो, हरेन महतो, नरहरि मुंडा फेकन राम महतो, चन्द्र मोहन महतो, कन्तु महतो, कृष्ण मुंडा, आशीष महतो इत्यादि कलाकार बधु गण एवं ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

सरला बिरला पब्लिक स्कूल में मिनी स्पोर्ट्स डे की धूम

रांची : सरला बिरला पब्लिक स्कूल, रांची में ह्यफनथॉन 2024ह्य मिनी स्पोर्ट्स डे बड़े उत्साह और खुशी के साथ मनाया गया। विद्यालय परिसर ऊर्जा और उत्साह से भर गया था, जहां नन्हे खिलाड़ी इस बहुप्रतीक्षित खेल आयोजन के लिए जुटे थे। कार्यक्रम की शुरूआत स्वागत गीत से हुई, जिसने पूरे दिन के लिए माहौल तैयार किया। इसके बाद भारत की विविध संस्कृति को दर्शाने वाला एक शानदार नृत्य प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों और प्राचार्या परमजीत कौर ने गुब्बारे उड़ाकर किया। मुख्य अतिथि के रूप में जुझार सिंह, अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी एवं स्पेशल ओलंपिक भारत, झारखंड, आस्था उरांव, वुशु के क्षेत्र में राष्ट्रीय खेल स्वर्ण पदक विजेता और लवली चैबे, लॉन बॉल के क्षेत्र में राष्ट्रमंडल खेल 2022 स्वर्ण पदक विजेता उपस्थित थीं। इसके बाद कई खेलों का आयोजन किया गया, जैसे टेल रेस, क्रैब रेस, मैट रेस और कोन रेस। बच्चों के साथ उनके माता-पिता ने भी सेग्रीगेट द बॉल, ड्रैग द रिंग और स्कॉर्पियन रेस जैसे खेलों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मौके पर स्कूल के बच्चों ने दीपशिखा संस्था के बच्चों के साथ एक टीम गेम में भी भाग लिया। यह संस्था बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए कार्य करती है। रांची सहोदया स्कूल कॉम्प्लेक्स द्वारा आयोजित अंतर-विद्यालयीय खेल प्रतियोगिता क्षितिज का समापन समारोह सह पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया गया जिसमें रांची के विभिन्न स्कूलों के 2000 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। 500 से अधिक पुरस्कार वितरित किये गये। साथ ही, वीर बाल दिवस के अवसर पर सिखों के दशवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के चार साहिबजादों, साहिबजादा अजीत सिंह, साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह के बलिदान को याद करते हुए श्रद्धांजलि दी गई। समारोह का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

बंधु मुंडा ने दहु के पेड़ पर फांसी लगाई पुलिस जांच में जुटी

चैनपुर: चैनपुर के रातू जामटोली में 55 वर्षीय बंधु मुंडा ने घर के पीछे लगे दहु के पेड़ में रशि के सहारे फाँसी लगा ली। मृतक के पिता का नाम स्व कन्द्रा मुंडा है। ग्रामीणों के अनुसार, बंधु किसी बात को लेकर चिंतित था।सुबह 8 बजे घर से निकले बंधु का जब दोपहर 2 बजे तक कोई पता नहीं चला, तो ग्रामीणों ने उसे ढूंढना शुरू किया। काफी प्रयासों के बाद, जब चप्पल पेड़ के नीचे देखी गई, तो सभी ने पेड़ पर जाकर देखा, जहां बंधु का शव फाँसी पर लटका हुआ मिला। इस घटना से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि बंधु के मानसिक तनाव में होने की जानकारी थी, लेकिन ऐसा कदम उठाने की उम्मीद किसी को नहीं थी।

किसानो कि बुलंद आवाज थे चौधरी चरण सिंह

किसान दिवस

रमेश सर्राफ धमोरा

अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार ने 2001 में हर वर्ष 23 दिसम्बर को चौधरी चरण सिंह की जयंती को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाने की जो परम्परा शुरू की थी उससे जरूर उनको साल में एक दिन याद किया जाने लगा है। आज किसानो कि हालात को देखकर चौधरी चरणसिंह जैसे देश के बड़े किसान नेता की याद आना स्वाभावित ही है।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचारधारा थे। चौधरी चरण सिंह ने हमेशा यह साबित करने की कोशिश की थी कि किसानों को खुशहाल किए बिना देश का विकास नहीं हो सकता। उनकी नीति किसानों व गरीबों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की थी। वो कहते थे कि देश की समृद्धि का रास्ता गांवों के खेतों और खलिहानों से होकर गुजरता है। उन का कहना था कि भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है। जिस देश के लोग भ्रष्ट होंगे वो देश कभी तरक्की नहीं कर सकता।

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को गाजियाबाद जिले के नूरपुर गांव के चौधरी मीर सिंह के घर हुआ था। बाद में उनका परिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गया था। 1928 में चौधरी चरण सिंह ने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा लेकर गाजियाबाद में वकालत प्रारम्भ की। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोडने के समर्थन में चरण सिंह ने हिण्डन नदी पर नमक बनाया जिस पर उन्हे 6 माह जेल की सजा हुई। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी चरण सिंह गिरफ्तार किये गये। 1942 में अगस्त क्रांति के माहौल में चरण सिंह को गिरफ्तार कर डेढ़ वर्ष की सजा हुई। जेल में ही चौधरी चरण सिंह की लिखित पुस्तक शिष्टाचार भारतीय समाज में शिष्टाचार के नियमों का एक बहुमूल्य दस्तावेज है।

चौधरी चरण सिंह खुद एक छोटे से गांव में एक किसान के घर जन्मे थे। बचपन से ही उन्होंने गांव के किसानों, गरीबों के दुखः दर्द को नजदीकी से देखा जाना था। इसलिये उन्हें उनकी समस्याओं का बखूबी अहसास था। उनको जब कभी कहीं मौका मिलता वे गांव के किसानों की सेवा करने से नहीं चूकते थे। उनके दिल में हमेशा गांव के किसान ही बसे रहते थे। चौधरी चरण सिंह जीवन पर्यन्त गांधी टोपी धारण कर महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी बने रहे।

उन्होने किसानों की खुशहाली के लिए खेती पर बल दिया था। किसानों को उनकी उपज का उचित दाम मिल सके इसके लिए भी वो बहुत गंभीर रहते थे। उनका कहना था कि भारत का सम्पूर्ण विकास तभी होगा जब किसान, मजदूर, गरीब सभी खुशहाल होंगे। चौधरी चरण सिंह की गिनती हमेशा एक ईमानदार राजनेता के तौर पर की जाती है। उन्होंने जीवन पर्यन्त किसानों की सेवा को ही अपना

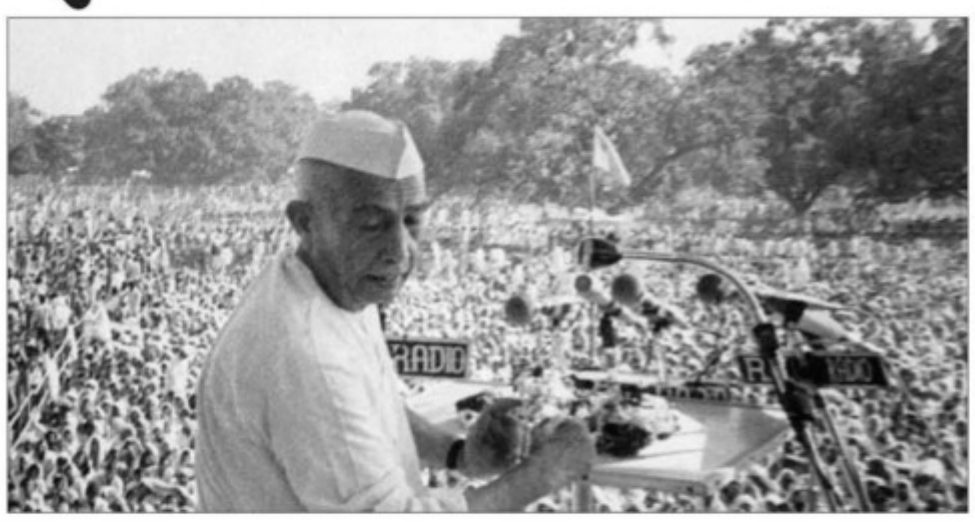

धर्म माना और अपने अंतिम समय तक देश के गांव में रहने वाले किसानों, गरीबों, दलितो, पीड़ितों की सेवा में ही पूरी जिंदगी गुजारी। चौधरी चरण सिंह जाति प्रथा के कट्टर खिलाफ थे।

आज देश के किसान कर्ज में डूबे हुये हैं। उनको उनकी उपज का पूरा दाम नहीं मिल पाता है। अपनी खराब आर्थिक स्थिति के चलते देश में बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहें हैं। केन्द्र व राज्य सरकारें भी किसानो के भले की योजनायें बना पाने में नाकाम रही है। चुनाव के समय राजनीतिक पार्टियां किसानो को झांसा देकर उनके वोट बटोर लेती है। फिर किसी का ध्यान किसानो की समस्याओं के समाधान करने की तरफ नहीं जाता है। ऐसे में आज देश के किसानो को चौधरी चरणसिंह जैसे सच्चे किसान हितैषी नेता की जरूरत है। जो उनके हक में खड़ा होकर किसानो की आवाज बुलन्द कर सके व उनका वाजिब हक दिला सके। चौधरी चरण सिंह भारतीय राजनीति में एक बड़े नेता थे। मगर इंदिरा गांधी के सहयोग से कुछ समय के लिये देश के प्रधानमंत्री बन कर उन्होने देश में पहली बार कांग्रेस के खिलाफ बने एक मजबूत गठबंधन को तोड़ा था। उससे उनकी प्रतिष्ठा को भी गहरा आघात पहुंचा था।

चौधरी चरण सिंह को 1951 में उत्तर प्रदेश सरकार में न्याय एवं सूचना विभाग का कैबिनेट मंत्री बनाया गया। 1952 में डॉक्टर सम्पूणानंद के मुख्यमॉत्रित्व काल में उन्हें राजस्व तथा कृषि विभाग का दायित्व मिला। एक जुलाई 1952 को उत्तर प्रदेश में उनके बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को खेती करने के अधिकार मिले। 1954 में उन्होने किसानों के हित में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। चरण सिंह स्वभाव से भी कृषक थे तथा कृषक हितों के लिए अनवरत प्रयास करते रहे। 1960 में चंद्रभानु गुप्ता की सरकार में उन्हें गृह तथा कृषि मंत्री बनाया गया। उत्तर प्रदेश के किसान चरण सिंह को अपना रहनुमा मानते थे। उन्होंने कृषकों के कल्याण के लिए काफी कार्य किए। लोगों के लिए वो एक राजनीतिज्ञ से ज्यादा सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनके भाषण को सुनने के लिये उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ जुटा करती थी।

किसानो में चौधरी साहब के नाम से मशहूर चौधरी चरण सिंह 3 अप्रैल 1967 में पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। तब 1967 में पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में कहीं पत्ता भी नहीं हिल पाया था। 17 फरवरी 1970 को वे दूसरी बार मुख्यमंत्री बने। अपने सिद्धांतों से उन्होने कभी समझौता नहीं किया। 1977 में चुनाव के बाद जब केन्द्र में जनता पार्टी सत्ता में आई तो मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने और चरण सिंह को देश का गृह मंत्री बनाया गया। केन्द्र में गृहमंत्री बनने पर उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की। 1979 में वे उप प्रधानमंत्री बने। बाद में मोरारजी देसाई और चरण सिंह के मतभेद हो गये। 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक चौधरी चरण सिंह समाजवादी पार्टियों तथा कांग्रेस के सहयोग से भारत के पांचवें प्रधानमंत्री बने।

चौधरी चरण सिंह एक कुशल लेखक भी थे। उनका अंग्रेजी भाषा पर अच्छा अधिकार था। उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन भी किया। 29 मई 1987 को 84 वर्ष की उम्र में जब उनका देहान्त हुआ तो देश के किसानो ने सरकार में पैरवी करने वाला अपना नेता खो दिया था। लोगों का मानना था कि चरण सिंह से राजनीतिक गलतियां हो सकती हैं लेकिन चारित्रिक रूप से उन्होंने कभी कोई गलती नहीं की। इतिहास में उनका नाम प्रधानमंत्री से ज्यादा एक किसान नेता के रूप में जाना जाता है। चौधरी चरण सिंह ने ही भ्रष्टाचार के खिलाफ सबसे पहले आवाज बुलन्द करते हुये आह्वान किया था कि भ्रष्टाचार का अन्त ही देश को आगे ले जा सकता है।

अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार ने 2001 में हर वर्ष 23 दिसम्बर को चौधरी चरण सिंह की जयंती को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाने की जो परम्परा शुरू की थी उससे जरूर उनको साल में एक दिन याद किया जाने लगा है। आज किसानो कि हालात को देखकर चौधरी चरणसिंह जैसे देश के बड़े किसान नेता की याद आना स्वाभावित ही है। मौजूदा समय में चौधरी चरणसिंह जैसा नेता होता तो किसानो को उनका वाजिब हक मिलने से कोई नहीं रोक सकता था। चौधरी चरण सिंह जैसे किसानो के बड़े नेता द्वारा किसानो के हित में किये गये कार्यो को देखते हुये वर्षो पूर्व ही उनको भारत रत्न सम्मान मिलना चाहिये था। मगर सरकारों की अनदेखी के चलते उनको वर्षों तक उचित सम्मान नहीं मिल पाया। नरेन्द्र मोदी सरकार ने चौधरी चरण सिंह जैसे सच्चे बड़े व सच्चें किसान नेता को भारत रत्न प्रदान कर सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित की है। इससे देश के करोड़ों किसानों के साथ ही सरकार का भी सम्मान बढ़ा है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

संपादकीय

अधिकारों की धज्जियां

कानून के सख्त प्रावधान महिलाओं की भलाई के लिए हैं, न कि उनके पतियों को दंडित करने, धमकाने या उन पर हावी होने या जबरन वसूली के लिए हैं। सुप्रीम कोर्ट का यह कहना है। हिन्दू विवाह को पवित्र प्रथा व परिवार की नींव बताते हुए पीठ ने कहा यह कोई व्यावसायिक समझौता नहीं है। अदालत ने हाल के दिनों में वैवाहिक विवादों से जुड़ी ज्यादातर शिकायतों में दहेज उत्पीड़न, दुष्कर्म, अप्राकृतिक यौन संबंध व आपराधिक धमकी जैसे अपराधों को शामिल करने की बात भी की। साथ ही कहा यह ऐसी प्रथा है, जिसकी अदालत कई मौकों पर निंदा भी कर चुकी है। पीठ ने महिलाओं को सावधान रहने की बात करते करते हुए सलाह दी कि आपराधिक कानून के प्रावधान महिलाओं की सुरक्षा व सशक्तिकरण के लिए हैं, लेकिन कुछ महिलाएं इनका गलत उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करती हैं। पीठ वैवाहिक विवाद से जुड़े मामले को निपटाते हुए कहा, भरण-पोषण कई कारकों पर निर्भर करेगा, न कि पति अपनी पूर्व पत्नी को स्थायी गुजारा भत्ता कितना दे या उसकी आय कितनी है। सुकून वाली बात यह भी है कि इस मामले में अदालत ने पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठाए। पुलिस के साथ ही वकील भी अपराध की गंभीरता को बढ़ाने और मामले को भीषण दिखाने के लोभ में अनर्गल आरोप मढ़ने से नहीं चूकते। उक्त मामले में पति अतिसंपन्न की श्रेणी में है। इसलिए बीवी उसकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप गुजारा-भत्ता पाने का दावा कर रही है। जैसा कि अभी मोटा गुजारा भत्ता मांगने व तलाक के लिए अदालती चक्कर काटने से आजिज आकर बंगलुरु के इंजीनियर की आत्महत्या के बाद लोग काफी गुस्से में हैं। स्थापित कानूनों की आड़ में विवाह जैसे पवित्र बंधन को वसूली का जरिया बनाने की मंशा वालों को सिर्फ हिदायतें ही नहीं दी जानी चाहिए। उनके सलाहकारों, वकीलों व पुलिस के प्रति भी अदालतों को सख्त रवैया अख्तियार करना होगा। गुजरा-भत्ता वसूली का जरिया नहीं है, यह विवाहिताओं को समझना चाहिए। उन्हें समय रहते अपने स्वाभिमान के साथ ही बमुश्किल मिले इन अधिकारों की धज्जियां उड़ाने से बाज आना चाहिए। वरना वास्तव में मजबूर/पीड़ित पत्नियों को न्याय मिलना मुश्किल हो सकता है।

संसद की गरिमा का दांव पर लगना चिन्ताजनक

ललित गर्ग

संविधान-निमार्ता भीमराव आंबेडकर को लेकर भारतीय संसद में जो दृश्य पिछले कुछ दिनों में देखने को मिले हैं, वे न केवल शर्मसार करने वाले है बल्कि संसदीय गरिमा को धुंधलाने वाले हैं। अंबेडकर को लेकर भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। दोनों पक्षों ने गुरुवार को संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान हाथापाई भी हुई जिसमें भाजपा सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत घायल हो गए। लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला ने सांसदों को चेतावनी देते हुए कहा कि सभी को नियमों का पालन करना पड़ेगा। संसद की मयार्दा और गरिमा सुनिश्चित करना सबकी जिम्मेदारी है। भारतीय संसद के प्रांगण में जिस तरह की अशोभनीय एवं त्रासद स्थिति का उत्पन्न हुई है, वे हर लिहाज से दुखद, विडम्बनापूर्ण और निंदनीय है। आरोप-प्रत्यारोप की वजह से परिवेश ऐसा बन गया है, मानो सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच शुद्ध शत्रुता, द्वेष, नफरत की स्थितियां उग्रतर हो गई हो। और तो और, धक्का-मुक्की, दुर्व्यवहार जैसे आरोपों को लेकर पुलिस में मामला दर्ज होना वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है। इन दुखद एवं अशालीन स्थितियों का उपचार न किया गया, तो संसद में काफी कुछ अप्रिय एवं अशोभनीय होने की आशंकाएं बलशाली होगी।

कहना न होगा कि देश की संसद लोकतंत्र के वैचारिक शिखर और देश की संप्रभुता को रेखांकित करने वाला शिखर संस्थान है। इसलिए इसकी गरिमा बनाए रखना सभी सांसदों का मूल कर्तव्य बन जाता है। इसके लिए जनप्रतिनिधियों से यह अपेक्षा होती है कि वे संसद की गरिमा को भंग न करे, अपना आचरण शुद्ध, शालीन एवं व्यवस्थित रखेंगे और व्यर्थ की बयानबाजी, धक्का-मुक्की, दुर्व्यवहार की जगह सार्थक बहस की संभावनाओं को उजागर करें। भारत की परंपरा कहती है कि वह सभा, सभा नहीं, जिसमें शालीनता एवं मयार्दा न हो। वह संसद संसद नहीं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा न करें। वह धर्म, धर्म नहीं, जिसमें सत्य न हो। वह सत्य, सत्य नहीं जो कपटपूर्ण हो। आज संसद में सांसदों का व्यवहार शर्म की पराकाष्ठा तक पहुंच गया है। पूरे देश की जनता ने बड़ा भरोसा जताते हुए अपने प्रतिनिधियों को चुनकर लोकसभा में भेजा है, ताकि वे सांसद के रूप में देश की भलाई के लिए नीति एवं नियम बनाएं, उसे लागू कराएं और जनजीवन को सुरक्षित तथा खुशहाल बनाते हुए देश का विकास करें। संसद की सदस्यता की शपथ लेते समय सांसदगण इन सब बातों को ध्यान में रखने की कसम भी खाते हैं, लेकिन उनकी कसम बेबुनियाद ही होते हुए संसद की मयार्दाओं को आहत कर रही है। बीते कुछ समय से धरना-प्रदर्शन के साथ सड़क पर राजनीतिक दमखम दिखाने वाले नजारे संसद के दोनों सदनों में भी दिखने लगे हैं। भौतिक रूप से छीना-झपटी और हाथापाई की नौबत भी दिखती रही है और विचाराधीन विषय से दूर एक-दूसरे को हीन साबित करना ही उद्देश्य बन गया है।

संसद का मूल्यवान समय बर्बाद हो रहा है, यह इससे स्पष्ट होता है कि पहली लोकसभा में हर साल 135 दिन बैठकें आयोजित हुई थीं। आज स्थिति कितनी नाजुक हो गई है, इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि पिछली लोकसभा में हर साल औसतन 55 दिन ही बैठकें आयोजित हुईं। नयी लोकसभा की स्थिति तो और भी दुखद एवं दयनीय है। संसद में काम न होना, बार-बार संसदीय अवरोध होना तो त्रासद है ही, लेकिन धक्का-मुक्की तक नौबत पहुंचना ज्यादा चिन्ताजनक है। कोई भी दल हो, किसी भी दल के सांसद हो, उन्हें यह संदेश देने की जरूरत है कि संसद ऐसे किसी संघर्ष का अखाड़ा नहीं है। संसद और संविधान, दोनों ही सांसदों से उच्च गरिमा एवं मयार्दाओं की अपेक्षा करते हैं। संसद देश की आवाजों और दलीलों का मंच है, यह किसी भी प्रकार की शारीरिक जोर-आजमाइश का मंच न बने, इसी में देश की भलाई है, लोकतंत्र की अक्षुण्णता है। सार्थक और उत्पादक संवाद के लिए हर सांसद को संविधान का ज्ञान, संसदीय परंपराओं की जानकारी एवं उनके प्रति प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए। दुर्भाग्य से बहुत कम सांसद ही इस ओर ध्यान देते हैं। मुखर प्रवक्ता के रूप में विपक्ष के कई सांसद अक्सर बेलगाम, फूहड़ एवं स्तरहीन आरोप-प्रत्यारोप दर्ज कराने में जुट जाते हैं। आधी-अधूरी सूचनाओं या गलत जानकारी के साथ विपक्ष के नेता सरकारी पक्ष को आरोपित करने में जुट जाते हैं, बयानों तो तोड़मरोड़ का प्रस्तुत करते हैं। निश्चित ही विपक्ष लगातार अपनी जिम्मेदारी से विमुख होता दिख रहा है। वह सरकार को घेरने और आरोपित करने के उद्देश्य से संसद के कार्य में अक्सर व्यवधान डालता है। लगता है विपक्ष का मकसद यही हो गया है कि संसद की कार्यवाही सुचारु रूप से न चल सके और सरकार की विफलता दर्ज हो। इस तरह की विपक्ष की बौखलाहट का बड़ा कारण भाजपा की लगातार चमत्कारी जीत है।

सांसदों को समग्रता में सोचना चाहिए कि अगर संसद जोर आजमाइश एवं हिंसा का अखाड़ा होकर बात एफआईआर की राजनीति तक बढ़ेगी, तो संसद का संचालन जटिल से जटिलतर होता जायेगा। संसद में तनाव कोई नई बात नहीं है। तनाव और तल्खी का इतिहास रहा है, पर बहुत कम अवसर ऐसे आए हैं, जब शारीरिक बल का दुरुपयोग देखा गया है। संसद भवन के प्रांगण में ही नहीं, बल्कि देश में कहीं भी सांसदों को ऐसे आमने-सामने नहीं आना चाहिए, जैसे गुरुवार को देश ने देखा है। संसद भवन के प्रांगण में जगह-जगह कैमरे लगे हैं। उन कैमरों की मदद से कम से कम यह तो सुनिश्चित करना चाहिए कि दोषी कौन है? दुध का दुध एवं पानी का पानी हो और सच सामने आये। सच की जीत हो और झूठ नैस्तनाबूद हो। अगर किसी सांसद के सिर में चोट लगी है, तो वह वैसे भी गंभीर मसला है। भाजपा सांसद सारंगी ने यही बताया है कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की वजह से एक व्यक्ति उनसे टकराया और वह गिर गए। ऐसा ही आरोप कांग्रेस ने भी लगाया है। पक्ष-विपक्ष में आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे, पर ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि सच सामने आए। यदि सच सामने न आए, तो कम से कम सभी सांसद ऐसी स्थिति फिर न बनने दें, इसके लिये संकल्पित हो।

शीतकालीन सत्र में आंबेडकर के नाम पर संसद के भीतर-बाहर जो कुछ हो रहा है, उससे यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल संसद की गरिमा से जानबूझकर खिलवाड़ करने पर तुले है। यह मानना अविश्वसनीय है कि यह धक्का-मुक्की अनजाने में हुई। राहुल गांधी आक्रामक ढंग से एक महिला सांसद के निकट जाकर उन्हें असहज करना तो बहुत ही शर्मनाक एवं कहीं अधिक फूहड़ है। पता नहीं किसके आरोपों में कितनी सच्चाई है, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि उक्त घटना संसद ही नहीं, देश को भी शर्मिंदा करने वाली है। राजनीति का स्तर इतना नहीं गिरना चाहिए कि वह मयार्दा से विहीन दिखने लगे। ऐसी राजनीति केवल धिक्कार की पात्र होती है। संसद की मयार्दा को तार-तार करने वाली ऐसी घटनाएं सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच बढ़ती कटुता का ही नतीजा है, जो देश के हित में नहीं है। पक्ष-विपक्ष के बीच बढ़ती शत्रुता न केवल भारतीय राजनीति बल्कि लोकतंत्र के लिए भी खतरनाक हैं।

दोनों पक्षों के बीच शत्रु भाव कम होने के कोई आसार इसलिए नहीं दिख रहे हैं, क्योंकि ऐसे मुद्दे सतह पर लाए जा रहे हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं बनता और जिनका मकसद लोगों को बरगलाना एवं गुमराह करना है। बीते कुछ समय से यह जो भय का भूत खड़ा किया जा रहा है कि संविधान खतरे में है, वह राजनीति के छिछले स्तर का ही परिचायक है। कोई बताये तो संविधान कब और कैसे खतरे में आ गया। संसद में ऐसे विषयों को लेकर सार्थक एवं सौहार्दपूर्ण संवाद हो, वाद-विवाद की जगह कटुता न ले, विमर्श और विचार की गंभीरता से ही लोकतंत्र की शक्ति बढ़ेगी। दलगत पसंद और नापसंद स्वाभाविक है, किंतु उससे ऊपर उठकर रचनात्मक भूमिका निभाने का साहस भी जरूरी है।

चिंतन-मनन

अपने अंदर रहना ही ध्यान

जब हम दुखी होते हैं तो लगता है समय बहुत लम्बा है। जब प्रसन्न होते हैं तो समय का अनुभव नहीं होता है। तो प्रसन्नता या आनन्द क्या है? यह हमारी स्वयं की आत्मा है। यही आत्मतत्व शिव तत्व है या शिव का सिद्धांत है। प्रायः हम जब भगवान की बात करते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त ऊपर की ओर देखता है। पर ऊपर कुछ नहीं है। प्रत्येक वस्तु हमारे अन्दर है। अन्दर की तरफ देखना या अपने अन्दर रहना ही ध्यान है। जब तुम अपने किसी नजदीकी व्यक्ति, अपने मित्र या किसी अन्य की तरफ देखते हो तो तुम्हें क्या लगता है? तुम्हारे अन्दर कुछ-कुछ होता है। तुम्हें ऐसा अनुभव होता है कि कोई नई ऊर्जा तुम्हारे अन्दर से होकर प्रवाहित हो रही है। उन महान क्षणों को पकड़ो। यह वही महान क्षण हैं, जो समयशून्य क्षण होते हैं।

ईश्वर ने तुमको दुनिया में सभी छोटे-मोटे सुख व आनन्द दिया है, लेकिन चरम आनन्द अपने पास रखा है। उस चरम आनन्द को प्राप्त करने के लिए तुम्हें उस ईश्वर और केवल ईश्वर के पास ही जाना होगा। अपने प्रयासों में निष्ठा रखो। जब तुम इस चरम आनन्द को प्राप्त करते हो तो बाकी प्रत्येक वस्तुएं आनन्दमय हो जाती हैं। ईश्वर को अच्छा समय दो, इससे तुम पुरस्कृत होगे। यदि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार नहीं होती तो इसका मतलब है कि तुमने ईश्वर को अच्छा समय नहीं दिया है। सत्संग और ध्यान को अपनी सबसे ऊंची प्राथमिकता दो। भगवान को सबसे महत्त्वपूर्ण समय दो। इसका तुम्हें अवश्य ही अच्छा पुरस्कार मिलेगा। जब तुम भगवान से कोई वरदान प्राप्त करने की शीघ्रता में नहीं हो तब तुम्हें यह अनुभव होगा कि भगवान तुम्हारा है। सजगता या अभ्यास द्वारा तुम इसी बिन्दु पर पहुंच सकते हो।

ईश्वर या दैव तुम्हारा है। जब तुम यह जान जाते हो कि तुम पूरे ईश्वरीय सत्ता के ही एक अंश हो, तो तुम उससे कोई मांग करना बन्द कर देते हो। तब तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए सब कुछ किया जा रहा है। तुम्हारी देखभाल की जा रही है। मन में शीघ्रता या उतावलापन करना धैर्य की कमी होती है। आलस्य का मतलब आपके क्रिया-कलापों में सुस्ती होती है। इसका सही सूत्र मन में धैर्य और अपने क्रियाकलापों में तेजी होती है।

मंदिर मस्जिद विवादों पर संघ प्रमुख का सकारात्मक दृष्टिकोण

कृष्णमोहन झा

विगत कुछ माहों के दौरान देश के कुछ हिस्सों में अचानक जो मंदिर मस्जिद विवाद उभर कर सामने आए हैं उनसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत बेहद खिन्न दिखाई दे रहे हैं। संघ प्रमुख की दृष्टि में इस तरह के विवादों को किसी भी सूरत में उचित नहीं माना जा सकता इसीलिए विगत दिनों पुणे में आयोजित सहजीवन व्याख्यान माला के अंतर्गत 'भारत विश्व गुरु' विषय पर भाषण के दौरान संघ प्रमुख ने उन लोगों को आड़े हाथों लेने से भी परहेज नहीं किया जो इस तरह के विवादों को हवा देने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। संघ प्रमुख ने कड़े लहजे में कहा कि हर दिन एक नया मामला उठाया जा रहा है। इसकी अनुमति कैसे दी जा सकती है । संघ प्रमुख ने बिना किसी का नाम लिया कहा कि कुछ लोगों को लगता है कि

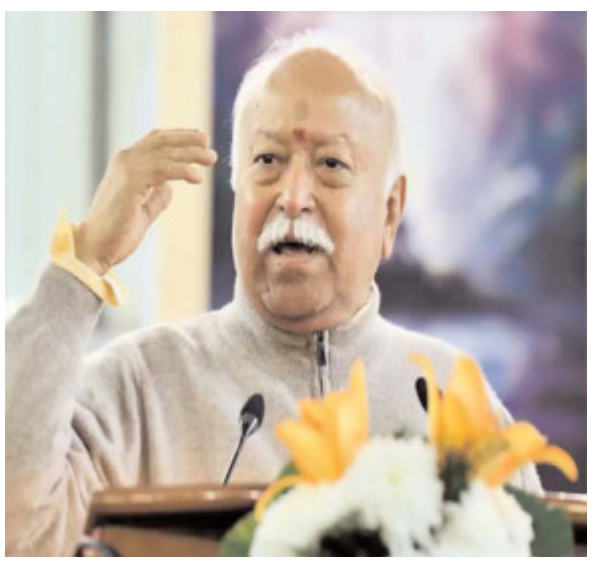

इस तरह के विवादों को उठा कर वे हिंदुओं के नेता बन जाएंगे। इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। भागवत ने कहा कि हमें दुनिया को यह दिखाना है कि हम एक होकर रह सकते हैं। यह नहीं चलेगा कि हमारे यहां हमारी ही बातें सही और बाकी सब गलत। हमें दुनिया को यह दिखाना है कि अलग अलग मुद्दे रहने के बावजूद हम एक होकर रहेंगे। संघ प्रमुख ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि हमारी वजह से दूसरों को तकलीफ नहीं होना चाहिए। भागवत के इस बयान से यही संदेश मिलता है कि हमें दूसरे धर्मों और उनके देवी देवताओं का सम्मान करना चाहिए। भागवत ने यह बात पहली बार नहीं कही है । वे इसके पहले भी अनेक अवसरों पर अपने इस मंतव्य को बिना किसी लाग लपेट के दोहरा चुके हैं। भागवत का ताजा बयान इसलिए सुर्खिय़ों में बना हुआ है क्योंकि हाल में ही संभल और अजमेर शरीफ में हिंदू मंदिर होने के दावों ने विवाद की स्थिति निर्मित कर दी है। भागवत का मानना है कि अयोध्या में अयोध्या में राम मंदिर आंदोलन की सफलता से उत्साहित होकर इस तरह के विवाद शुरू करना उचित नहीं है। अयोध्या में राममंदिर आंदोलन करोड़ों हिंदू श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ा हुआ मामला था॥ यहां यह भी उल्लेखनीय है कि संघ प्रमुख ने अयोध्या में राममंदिर निर्माण की शुरूआत के पूर्व ही यह स्पष्ट कर दिया था कि संघ इसलिए बाद किसी मंदिर आंदोलन का हिस्सा नहीं बनेगा। दो वर्ष पूर्व जब वाराणसी में स्थित ज्ञान व्यापी मस्जिद में शिवलिंग होने के दावे किए जा रहे थे तब भी संघ प्रमुख ने दो टूक शब्दों में कहा था कि हर मस्जिद में शिवलिंग ढूंढने की जरूरत नहीं है। संघ प्रमुख ने पुणे में सहजीवन व्याख्यान माला में जो बयान दिया है उसने दो वर्ष पूर्व ज्ञान व्यापी मस्जिद विवाद पर दिए गए उनके बयान की यादें ताजा कर दी हैं। इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि संघ प्रमुख के दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मंदिर मस्जिद विवादों पर वे अपने रुख पर कायम हैं। देश में चल रहे मंदिर मस्जिद विवादों को लेकर संघ प्रमुख के नये बयान पर ढेरों प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं और कई विपक्षी नेताओं ने भी भागवत के इस बयान का स्वागत किया है। दरअसल भागवत के इस बयान में ऐसा कुछ नहीं है जिस पर अनावश्यक टीका टिप्पणी की जा सके। वरिष्ठ कांग्रेस नेता शशि थरूर , समाजवादी पार्टी के सांसद अफजाल अंसारी और आल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के सचिव यासूब अब्बास ने भागवत के बयान का समर्थन किया है। शशि थरूर कहते हैं कि अब इन विवादों को परे रखकर हमें भविष्य की ओर देखना चाहिए । भागवत के ताजे बयान पर जो सकारात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त की जा रही हैं वे इस बयान की सार्थकता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं । अब देखना यह है कि भागवत ने जिन अतिउत्साही लोगों को यह सलाह दी है वे इसे किस रूप में लेते हैं लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि देश में साम्प्रदायिक सौहार्द्र का वातावरण बनाए रखने के लिए संघ प्रमुख की सलाह न केवल विचारणीय है बल्कि उस पर अमल भी किए जाने की आवश्यकता है।

(लेखक स्वदेश न्यूज चैनल के सलाहकार संपादक और राजनैतिक विश्लेषक है)

एक नजर

खुजली झरना की तलहटी से अज्ञात शव बरामद

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत रविवार को जिले के कचरा प्लांट निकट खुजली झरना की तलहटी में अज्ञात युवक का शव बरामद होने से इलाके में भय का माहौल छा गया। वही बरामद अज्ञात शव की पूरी बॉडी किसी ज्वलनशील पदार्थ से अज्ञात अपराधियों के द्वारा जला दी गई है। जिस कारण शव की पहचान नहीं हो पा रही है। वहीं प्रत्यक्ष दर्शियों की माने तो बरामद अज्ञात शव के बाएं पैर में गोली लगे हुए छेद का निशान भी है। अज्ञात शव बरामद घटनास्थल पर उपस्थित प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि बीते दो दिन पूर्व क्षेत्र में गोली चलने की आवाज सुनी गई थी। हालांकि गोली चलने की पुष्टि पुलिस के द्वारा नहीं की गई। वही मामले को लेकर थाना प्रभारी पंकज कुमार दुबे ने बताया घटना की सूचना प्राप्त होने के उपरांत पुलिस घटनास्थल पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराने उपरांत मामले की जांच में जुट गई है।

सदर अस्पताल के वेयर हाउस के हॉल में बनेगा ऑडियोमेट्री सेंटर

साहिबगंज : साहिबगंज सदर अस्पताल में कान से सुनाई कम देने के मामले को लेकर किये जाने वाली जांच ध्वनि श्रवण जांच के लिए ऑडियोमेट्री सेंटर का निर्माण होगा। ऑडियोमेट्री सेंटर के लिए स्थल का चयन सदर अस्पताल के अस्पताल उपाधीक्षक डॉ मोहन मुर्मू, प्रशासनिक उपाधीक्षक डॉ मुकेश कुमार की मौजूदगी में तीन टेक्नीशियन की टीम ने किया। इस संबंध में डीएस डॉ मुकेश कुमार ने बताया कि सदर अस्पताल परिसर स्थित वेयर हाउस के हॉल में प्रतिमाह दिव्यांग शिविर लगता है। उस हॉल में ऑडियोमेट्री सेंटर के लिए स्थल का चयन किया गया है। टेक्नीशियन की टीम भी चयनित स्थल से संतुष्ट है। जल्द ही टेक्नीशियन की टीम द्वारा वेयर हाउस के हॉल में ऑडियोमेट्री सेंटर कर दिया जाएगा। वहीं ऑडियोमेट्री सेंटर खुल जाने से दिव्यांग बोर्ड की बैठक में कान से कम सुनाई देने वाले मरीजों की ध्वनि श्रवण क्षमता की जांच हो जाएगी।

नि:शुल्क आंख जांच शिविर का हुआ आयोजन

साहेबगंज : बरहरवा में नगर पंचायत क्षेत्र अंतर्गत बड़ी दुर्गा मंदिर प्रांगण में समाजसेवी सुमन कुमार के सौजन्य से रविवार को भागलपुर के मशहूर डॉक्टर सुशांत रमन के द्वारा नि:शुल्क आंख जांच शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ अरविन्द कुमार, समाज सेवी सुमन कुमार एवं राजकमल भगत ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। इस दौरान शिविर के माध्यम से दर्जनों नेत्र मरिजों ने अपना जांच करवाया। मरिजों के बीच नि:शुल्क दवा का भी वितरण किया गया। शिविर के लोगों ने जानकारी देते हुए बताया कुल 70 नेत्र मरिजों की जांच की गई। समाजसेवी सुमन कुमार ने कहा प्रत्येक रविवार को विभिन्न स्थानों पर यह निशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन कर क्षेत्र के लोगो को एक छोटी सी मदद करने का प्रयास किया जाएगा। ताकि गरिब, असहाय लोगों को मदद मिल सकें। उन्होंने कहा शिक्षा एवं चिकित्सा के प्रति मेरा हमेशा यह प्रयास रहेगा कि मेरे क्षेत्र के बच्चे को अच्छी शिक्षा एवं लोगों को बेहतर इलाज मिले। कहा एक टीम वर्क के माध्यम से मेरा प्रयास हमेशा जनहित में रहेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में अमित गुप्ता, आनंद भगत, कमल सिंह, चंदन गुप्ता, पुष्कर, राहुल, अनुभव, कृष्णा भगत, मनोहर लाल चौहान, जहरुल, रंजीत रमानी सहित अन्य का सराहनीय भूमिका रहा।

एडमिट कार्ड नहीं मिलने से नाराज चौकीदार अभ्यर्थियों का समाहरणालय में हंगामा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

देवघर : देवघर जिले में रविवार को चौकीदार नियुक्ति परीक्षा हुई। जिले के 10 सेंटरों पर परीक्षा ली गई। हालांकि एडमिट कार्ड नहीं मिलने के कारण कई अभ्यर्थी परीक्षा से वंचित रह गए। प्रखंड स्तर से ही सभी योग्य अभ्यर्थियों को एडमिट जारी किया गया। लेकिन काफी संख्या में चौकीदार अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड नहीं मिला। इसको लेकर सैंकड़ों की संख्या में अभ्यर्थी शनिवार की सुबह से देर रात तक समाहरणालय का चक्कर लगाते रहे। बार-बार आश्वासन के बाद भी रात तक एडमिट कार्ड नहीं मिला और कार्यालय बंद हो गया। इससे नाराज अभ्यर्थियों ने देर रात समाहरणालय में जमकर हंगामा किया। कहा कि जब तक एडमिट कार्ड नहीं मिलेगा, कार्यालय से नहीं जाएंग। अभ्यर्थियों ने विभाग के लिपिकों व अधिकारियों पर आरोप लगाया कि कुछ लोगों का साइन नहीं होने के कारण एडमिट कार्ड नहीं मिला है और कुछ लोगों को बिट में त्रुटि की बात बताई गई। आश्वासन दिया गया था कि सबका समाधान हो जायेगा। लेकिन शनिवार की देर शाम सभी कर्मी पिछले दरवाजे से निकल गये और सैकड़ों अभ्यर्थी इंतजार में ही खड़े रह गये। एक अभ्यर्थी ने बताया कि वह पांच दिनों से समाहरणालय का चक्कर लगा रहा है। संबंधित अधिकारी का सिग्नेचर नहीं होने के कारण उसे एडमिट कार्ड नहीं दिया गया। इस संबंध में पूछे जाने पर विधि शाखा के प्रभारी सह नोडल पदाधिकारी अमर प्रसाद ने बताया कि चौकीदार नियुक्ति परीक्षा के लिए सभी योग्य अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड जारी कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि जिनके आवेदन में त्रुटि रही होगी, उसे ही रिजेक्ट किया गया है।

एक ही रात चोरों ने दो घरों से लाखों रुपये के माल उड़ाये

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : मिजाचौकी थाना क्षेत्र के मिजाचौकी बाजार स्थित शांति ज्वेलरी शॉप एवं बड़तल्ला पंचायत के एक घर में एक ही रात में दो जगहो पर चोरों द्वारा चोरी के घटना को अंजाम दिया गया है। चोरी की घटना को लेकर ज्वेलरी शॉप के दुकानदार मधुभूषण प्रसाद सोनी ने जानकारी देते हुए बताया मेरे ज्वेलरी शॉप का शटर काटकर अज्ञात चोरों ने महंगे आभूषण सहित नकद रुपए की चोरी की घटना को अंजाम दिया है चोरी की घटना में मेरा लगभग 10 से 15 लाख का नुकसान हुआ है। वहीं दूसरी चोरी की घटना में गृह स्वामी नागेंद्र रविदास ने बताया हम लोगों के घर से महंगे आभूषण व एक मोबाइल की चोरी हुई है, जिसके अनुमानित कीमत ढाई से तीन लाख रुपए बताई जा रही है। घटना की सूचना प्राप्त होते ही मिजाचौकी थाना प्रभारी रुपेश कुमार यादव अपनी पुलिस बल के साथ घटनास्थल पहुंचकर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज खंगालने में जुट गए हैं, उन्होंने बताया कि जल्द ही अज्ञात चोरों की पहचान कर पकड़ लिया जाएगा।

मशरूम एवं उसके उत्पादन से संबंधित विषय पर किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुकडू : कुकडू प्रखण्ड क्षेत्र के 63 किसानों को 18 से 22 दिसंबर 2024 तक पांच दिवसीय मशरूम एवं उसके उत्पादन से संबंधित विषय पर कुकडू प्रखंड के 63 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया । यह कार्यक्रम जिला उद्यान कार्यालय सरायकेला खरसावां के द्वारा करवाया जा रहा है जिसका अयोजक सिड एग्रोटेक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड रांची है। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण में प्रत्येक दिन स्टेप बाय स्टेप प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें मुख्य रूप से पहला दिन मशरूम का परिचय एवं स्पॉन बनाने का विधि दूसरा दिन उत्पादन/बिजाई बनाने की प्रक्रिया तीसरा दिन पुआल का उपचारचौथा दिन पैकिंग की प्रक्रियाऔर पांचवा दिन रख रखाव और लटकाने की विधि । साथ ही सबसे महत्वपूर्ण टिप्स रोग की बचाव की तरीके में फॉर्मेलिन, कार्बेंडाजिम आदि केमिकल्स का उपयोग करने का तरीका बताया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रखंड प्रमुख, कुकडू के द्वारा इस प्रशिक्षण में सभी किसानों को सलाह देते हुए कहा कि अभी का वर्तमान समय में मशरूम का आर्थिक महत्व बहुत है, इसलिए सभी उपस्थित किसान अवश्य मशरूम उत्पादन की नई तकनीक को अपनाने का सुझाव दिए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ फिरोज अहमद, उद्यान मित्र : सुनिल चंद्र महतो, सभी उद्यान बेनिफिशियरी उपस्थित थे।

क्षेत्र में प्रतिभा की कोई कमी नहीं निखारने की है जरूरत : सविता महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : ईचागढ़ प्रखंड के ग्रामीण क्रीड़ा संस्था लेपाटांड़ पातकुम का ऐतिहासिक 48 वां वार्षिक फुटबॉल प्रतियोगिता में हजारों दर्शकों का हुजूम उमड़ पड़ा। ऐतिहासिक मेला व खेला में 8 दलों के बीच घमासान मचा। कोल्हान सहित रांची, बंगाल व उड़ीसा के दर्शक भी खेला व मेला का लूत्फ उठाने पहुंचे। वहीं डीआर ब्रोदर टेल्को व नेताजी क्लब रेमता खुंटी के बीच फाइनल मुकाबले में डीआर ब्रोदर टेल्को ने प्रथम खिताब 1 लाख 51 हजार व कप पर कब्जा जमाया। वहीं दुसरे स्थान पर रहे नेताजी क्लब रेमता खुंटी को 1 लाख 21 हजार व कप देकर पुरस्कृत किया गया। डीआर ब्रोदर टेल्को ने पलान्टी में फाइनल मुकाबले में जीत दर्ज किया।इस प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में ईचागढ़ के विधायक सविता महतो शामिल हुए। खेल का उद्घाटन ईचागढ़ के राजा प्रशांत कुमार आदित्यदेव ने किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए ईचागढ़ की विधायक सविता महतो ने कहा कि क्षेत्र के खिलाड़ियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, बस खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने की जरुरत है। उन्होंने आगे कहा कि हमारी सरकार भी शिक्षा के साथ-साथ खेल और खिलाड़ियों को आगे बढ़ावा देने को लेकर संवेदनशील है। और उन्होंने उम्मीद जताते हुए कहा कि आने वाले दिनों में इस क्षेत्र से भी कई खिलाड़ी अपने प्रतिभा के दम पर राज्य और देश का नाम रौशन करेंगे। मौके पर अध्यक्ष नवल किशोर सिंह, काबलु महतो , उपाध्यक्ष पशुपति बागची, ओम लायेक, राजेन सिंह मुण्डा,अजय कुमार, राजकिशोर गोप, शीशीर प्रामाणिक, महेंद्र उरांव, बासुदेव चटर्जी, सोनाराम हांसदा, देवेंद्र बेसरा , तुलसी दास उरांव सचिव आदि उपस्थित थे।

अरशद नसर को बीएनएस की धारा-35 का नोटिस निर्गत कर पुलिस ने मांगा जवाब

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले के खनन पदाधिकारी कृष्ण कुमार किस्कू द्वारा चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता सैयद अरशद नसर के खिलाफ जिरवाबाड़ी थाना में बीएनएस की धारा-126(2),115(2),221,224,132 ,352,351(2) (3) और 3 (1) (आर) व एससी/एसटी एक्ट के तहत बीते मंगलवार को दर्ज कराएं गए कांड संख्या-204/2024 के अनुसंधानकर्ता एस.आई दीपक क्रिएसन ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता,2023 की धारा- 35(3) के तहत नोटिस निर्गत कर अरशद को आज अपना पक्ष रखने को कहा है। अरशद ने नोटिस मिलने के पश्चात कहा की प्राप्त नोटिस का आज जवाब देंगे। बताते चले की बीते जुन माह में भी खनन पदाधिकारी कृष्ण कुमार किस्कू ने अरशद के खिलाफ भा.दि.वि की धारा -353, 354, 504, 506 के तहत जिरवाबाड़ी थाना में कांड संख्या-104/2024 दर्ज कराया था। अरशद ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा की खनन पदाधिकारी कृष्ण कुमार किस्कू साजिश व षडयंत्र रचकर एफआईआर पर एफआईआर दर्ज करवा रहें हैं ताकि वे इनके अनैतिक कार्यकलाप, चरित्र व भ्रष्टाचार को उजागर नहीं कर सके। जिसे वे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे और खनन पदाधिकारी के खिलाफ सड़क से लेकर मीडिया व मीडिया से लेकर सरकार व सरकार से लेकर न्यायालय तक में संघर्ष जारी रखेंगे।

गायत्री शक्तिपीठ साहिबगंज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ साहिबगंज में आज संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ प्रोफेसर रंजीत कुमार सिंह अपने उद्बोधन में बच्चों को यह बताया कि आप चरित्रवान बनिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत संघर्षरत प्रयासरत रहिए। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों को अपने लक्ष्य के लिए अपने चरित्र के निर्माण के साथ-साथ अपना बौद्धिक विकास का भी निर्माण करने की जरूरत है। बौद्धिक विकास तभी हो सकता है जब आपके अंदर एकाग्रता हो और इस एकाग्रता के लिए आपको गायत्री मंत्र के उपासना या गायत्री मंत्र की साधना की जरूरत है। जब आपके दिमाग शांत होगा तभी आप कुछ एकाग्रचित होकर कोई काम का सही निर्णय ले सकते हैं। साथ ही साथ प्रोफेसर सिंह ने यह भी अपने अभिभावकों को यह बताया कि आप अपने बच्चों को सही शिक्षा दें और उन्हें संस्कृत शिक्षा देकर संस्कार के बारे में बताइए और उसे यह बताइए कि हमारे संस्कार में क्या है जैसे आप अपने बच्चों को सिखाए सुबह उठकर मां को प्रणाम करना चाहिए सुबह उठकर भगवान को स्मरण करना चाहिए और सुबह उठकर हमें अपने धरती माता को प्रणाम करना चाहिए। प्रोफेसर वकील पोद्दार ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के द्वारा बच्चों का बौद्धिक विकास कैसे हो कैसे समाज के संस्कृति के बदलाव में बच्चे और युवा भाग ले इसको लेकर विस्तार से जानकारी दी गई। बच्चों को यह बताया गया अनुशासन और ईमानदारी के साथ आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करें आपके ऊपर कल के उज्जवल भारत का भविष्य है। ध्यान योग साधना से आप अपना व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रोफेसर वकील कार्यक्रम संयोजक संजीत चौधरी, कल्याण श्रीवास्तव ने कार्यक्रम को संबोधित किया मंच का संचालन ओंकार नाथ मिश्रा ने किया। विद्यालय स्तरीय प्रथम स्थान प्रस्तावित उच्च विद्यालय योगीचौक सरकंडा ने प्राप्त किया द्वितीय संत जेवियर अंग्रेजी माध्यम प्लस टू हाई स्कूल राधानगर ने प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अभिभावक और बच्चों ने भाग लिया।

संक्षिप्त खबरें

सबर परिवारों को ठंड में राहत पहुंचाने पाकोटोडा पहुंचे राजकुमार सिंह

पटमदा : कड़ाके की ठंड में सिहरन का अहसास तो वे लोग ही अनुभव करते हैं। जिनके बदन पर ठंड से लड़ने के लिए कपड़े न हो। उनको ठंड से राहत दिलाने जमशेदपुर में जल पुरुष के नाम से जाने वाले पूर्व जिला उपाध्यक्ष राजकुमार सिंह बोड़ाम प्रखंड के बेलड़ीह पंचायत के पाकोटिडा सबर टोला जहां के हर एक बच्चे , व्यस्क, महिला,पुरुषों को ठंड से बचाव के लिए बच्चों ओर महिलाओं को जैकेट और स्वेटर, बुजुर्गो को कम्बल देकर राहत पहुंचाया। राजकुमार सिंह ने कहा कि हर साल तो जिले के प्रत्येक सबर ओर जरूरतमंद लोगों के बीच त्यौहार में पहुंचकर खुशी जाहिर करते हैं। लेकिन इस कड़ाके की ठंड में जहां प्रशासन अब तक कम्बल नहीं पहुंचा पाया। उन जरूरतमंद के बीच सेवाभाव से पहुंचकर गर्म वस्त्र उपलब्ध कराया। ये सेवा जब तक सम्भव होगा लगातार करता रहूंगा। वही सेवानिवृत शिक्षक निवारण सिंह ने बताया कि सबर टोला के सभी परिवारों को राजकुमार सिंह के उनके टोला में पहुंचने का बेसब्री से इंतजार रहता हैं । इस दौरान उनके साथ पंसस प्रतिनिधि प्रबोध महतो, कोलोल कर्मकार आदि।

पशुधन विकास योजना के तहत आठ लाभुकों के बीच बकरियों का हुआ वितरण

कुकडू : सरायकेला जिले के कुकडू प्रखंड कार्यालय के समीप रविवार को क्षेत्र के आठ चयनित लाभुकों के बीच बकरियों का वितरण किया गया। प्रत्येक लाभुक को एक बकरा और चार बकरियां प्रदान की गई, कुल मिलाकर आठ यूनिट बकरियों का वितरण हुआ। अंचल अधिकारी सत्येंद्र पासवान ने बताया कि लाभुकों का चयन पूर्व में प्राप्त आवेदनों के आधार पर किया गया है। इस योजना के तहत सरकार की ओर से सब्सिडी दी गई है और बकरियों के लिए इंश्योरेंस की सुविधा भी उपलब्ध है। अंचल अधिकारी ने कहा कि यह पहल क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से की गई है। कुकडू प्रखंड की अधिकांश आबादी कृषि और पशुपालन पर निर्भर है। बकरी पालन से होने वाली आय से परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। इस अवसर पर डॉ. हरेलाल महतो, झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष इंद्रजीत महतो, धनराज महतो, और अरुण महतो समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। सरकार की इस पहल से लाभुकों में खुशी की लहर है और इसे क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

अंचल प्रशासन ने चौक चौराहों पर किया अलाव का प्रबंध

पटमदा : पटमदा अंचलाधिकारी डॉ राजेंद्र दास के निर्देश पर पटमदा अंचल के बेल्टांड चौक,पटमदा बाजार सहित कई चौक चौराहे पर अलाव का प्रबंध कर राहगीरों को कड़ाके के ठंड में राहत पहुंचाने का काम किया गया। जानकारी देते हुए पटमदा पंचायत के मुखिया परमेश्वर सिंह ने बताया कि इस कड़ाके के ठंड में शाम के समय दैनिक मजदूरी करने वाले मजदूर और राहगीरों को इस अलाव से कुछ राहत मिलेगा।वही बाजार के दुकानदार को भी राहत मिलेगा।

मंडरो पीएचसी में एनआईओ आशा सर्टिफिकेशन परीक्षा का हुआ आयोजन

साहिबगंज/मंडरो : रविवार को एनआईओ आशा सर्टिफिकेशन का परीक्षा पीएचसी मंडरो में आयोजित किया गया। जिसमें सभी प्रखंडों से आए हुए सभी साहियाओ का आशा सर्टिफिकेशन परीक्षा का निरीक्षण सिविल सर्जन साहिबगंज डॉक्टर प्रवीण कुमार संथाली के द्वारा किया गया। साहिबगंज जिला से जिला पदाधिकारी डीडीएम अमित कच्छप, डीपीसी संदीप कुमार, एनआईएस ओएसडी कमल महावर, एसटीटी सदानंद, सभी बीटीटी ने भाग लिया।

भाजपा जनवरी में बनाएगी 25000 नए सदस्य

बरहरवा : प्रखंड अंतर्गत चांडीपुर गांव में सदस्यता अभियान को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने संजीव गुप्ता के अध्यक्षता में एक बैठक किया। जानकारी देते हुए संजीव गुप्ता ने बताया कि पार्टी के आला अधिकारी के निर्देश अनुसार बरहरवा मंडल में जनवरी महीने तक सदस्यता अभियान चलाए जाने का कार्यक्रम है,जिसमें लगभग 25000 नए सदस्य बनाए जाने का लक्ष्य निर्धारित की गई है, इसी को लेकर आज की यह बैठक रखी गई थी। बैठक के दौरान पार्टी संगठन को मजबूत बनाने और अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़ने के संदर्भ में चर्चाएं की गई। मंडल स्तरीय इस बैठक में साहिबगंज जिला के भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष उज्ज्वल मंडल, नगर पंचायत बरहरवा के अध्यक्ष श्यामल दास, ललिता देवी, प्रदीप रामानी, नीति देवी, प्रभात गुप्ता, दुलाल गुप्ता, मौजूद थे।

भारत में एसआईपी में अच्छी वृद्धि, बढ़ा विश्वास

जनवरी से नवंबर तक एसआईपी में शुद्ध प्रवाह 9.14 लाख करोड़ रुपए रहा

मुंबई ।

भारत में एसआईपी में जबरदस्त उछाल देखने को मिला है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) में शुद्ध प्रवाह 233 फीसदी (सालाना आधार) बढ़ा है। इसका मुख्य कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की लचीलापन में वृद्धि और भू-राजनीतिक परिस्थितियों में स्थिरता है। आईसीआरए एनालिटिक्स की रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी से नवंबर तक कुल एसआईपी में शुद्ध प्रवाह 9.14 लाख करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल के मुकाबले 233 प्रतिशत की वृद्धि है। नवंबर में रजिस्टर्ड नए एसआईपी की संख्या 49.47 लाख हो गई है, जो 2023 में 30.80 लाख थी। एसआईपी एयूएम ने नवंबर में 13.54 लाख करोड़ रुपये के अंडर मैनेजमेंट रखा, जो पिछले साल के 9.31 लाख करोड़ के मुकाबले है। भारतीय म्यूचुअल फंड (एमएफ) इंडस्ट्री ने भी शुद्ध प्रवाह में 135 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी है। विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति के साथ, आने वाले वर्षों में उद्योग में गुना-गुना वृद्धि की संभावना है। विशेषज्ञों का कहना है कि घरेलू म्यूचुअल फंड उद्योग में भी उम्मीदें हैं कि निवेशकों में बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। शुद्ध एयूएम में भी बड़ी बढ़ोतरी हुई है, जिसके साथ नवंबर में एयूएम पहुंचा 68.08 लाख करोड़ रुपये पर। इक्विटी कैटेगरी के लार्ज कैप फंड में सबसे अधिक वृद्धि हुई है, जो नवंबर में लगभग 731 प्रतिशत बढ़कर 2547.92 करोड़ रुपये हुआ है। भावनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो, भारतीय अर्थव्यवस्था का उछाल निवेशकों के बीच नया जोश और विश्वास पैदा कर रहा है। आने वाले दिनों में उद्योग में और भी बढ़ोतरी की संभावना है जिससे निवेशकों को अच्छे रिटर्न की संभावना है।

देश के नौ प्रमुख शहरों में घरों की बिक्री में 21 फीसदी गिरावट की संभावना

- कुल बिक्री तिमाही में 1,08,261 इकाई रह जाने की संभावना

नई दिल्ली ।

रियल एस्टेट की एक आंकड़ा विश्लेषक कंपनी ने जारी की एक रिपोर्ट में कहा है कि देश के प्रमुख नौ आवास बाजारों में अक्टूबर से दिसंबर तिमाही के दौरान घरों की बिक्री में 21 फीसदी की गिरावट की संभावना है। इसका कारण उच्च आधार प्रभाव है, जिसके कारण लगभग 1.08 लाख इकाई रह जाएगी। कंपनी ने दिल्ली-एनसीआर, मुंबई, नवी मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई, और ठाणे के लिए बिक्री आंकड़े जारी किए हैं। दिल्ली-एनसीआर में ही बिक्री में वृद्धि की संभावना है जबकि अन्य शहरों में गिरावट की संभावना है। जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार कुल बिक्री तिमाही में 1,08,261 इकाई रह जाने की संभावना है, जो पिछले साल से कम है। हालांकि, सितंबर तिमाही में बिक्री में पांच प्रतिशत की वृद्धि की संभावना है। रिएल स्टेट के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि उच्च आधार प्रभाव के कारण बिक्री में गिरावट आई है, लेकिन त्योहारी मांग के कारण इसमें सुधार हो सकता है। वे ने दावा किया कि आपूर्ति-खपत अनुपात मजबूत और स्वस्थ है, जिससे रियल एस्टेट क्षेत्र में स्थिरता बनी रहेगी। हैदराबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, कोलकाता, और पुणे में भी बिक्री में गिरावट की संभावना है। हालांकि, दिल्ली-एनसीआर में बाजार इस रुझान को बदलने के लिए तैयार है और बिक्री में वृद्धि की संभावना है। यह आंकड़े रियल एस्टेट बाजार की मानें और इस क्षेत्र में संवेदनशीलता का पूरा काम करते हैं। देश विस्तार से यह गिरावट के संकेत के रूप में देखी जा सकती है, जो क्षेत्र के निर्माण और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है।

किआ की नई एसयूवी सिरोस बाजार में पेश

नई दिल्ली ।

किआ मोटर्स ने अपनी नई एसयूवी सिरोस को बाजार में पेश किया है। इस मॉडल का लॉन्च ऑटो एक्सपो 2025 में किया जाएगा। किआ इस एसयूवी के जरिए अपनी दो अन्य एसयूवी मॉडल्स, सेल्टॉस और सोनेट, के बीच के ग्राहकों को आकर्षित करने की योजना बना रही है। यह एक बी सेगमेंट की एसयूवी है, जिसकी बुकिंग 3 जनवरी 2025 से शुरू होगी, और इसकी डिलीवरी फरवरी 2025 से शुरू हो जाएगी। सिरोस को एचटीके, एचटीके (ओ),एचटीके प्लस, एचटीके एचटीएक्स प्लस औरएचटीएक्स प्लस(ओ) के छह वैरिएंट्स में उपलब्ध कराया जाएगा, और यह 8 आकर्षक रंगों में उपलब्ध होगी। डिजाइन के मामले में, किआ ने एसयूवी सिरोस को खासतौर पर स्पेशियस बनाने की कोशिश की है। इस एसयूवी की फ्रंट डिजाइन को बेहद बोल्ड और आकर्षक बनाया गया है, जिसमें वर्टिकल आइस क्यूब एलईडी हेडलाइट्स और बड़ा एलईडी डीआरएल शामिल है। इसके फ्रंट में शानदार लुक के साथ हाई सेट बोनट, बंपर में सिल्वर एलिमेंट्स और एडवांस ड्राइविंग असिस्टेंस सिस्टम के लिए रडार मॉड्यूल दिए गए हैं। इसकी साइड प्रोफाइल में लंबी रूफ टेल, ब्लैक बॉडी क्लैडिंग और 17 इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसके अलावा, डबल पैन पैनोरमिक सनरूफ और केबिन में 30 इंच का पैनोरमिक स्क्रीन सेटअप भी उपलब्ध है, जो वायरलेस एंड्रॉयड ऑटो और एप्पल कारप्ले कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है। सेफ्टी फीचर्स की बात करें तो किआ ने सिरोज में 6 स्टैंडर्ड एयरबैग्स और 360 डिग्री कैमरा सुविधा दी है।

इसके अलावा, इसमें ऑटो होल्ड के साथ इलेक्ट्रिक पार्किंग ब्रेक की भी सुविधा है। इंजन के विकल्प में, किआ सिरोस में 1.5 लीटर डीजल इंजन दिया गया है, जो 116 बीएचपी की पावर और 250 एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। पेट्रोल विकल्प में 1.0 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन मिलेगा, जो 120 बीएचपी की पावर और 172 एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। यह एसयूवी 6-स्पीड मैनुअल, 7-स्पीड डीसीटी और 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन गियरबॉक्स के साथ उपलब्ध होगी।

एलआईसी के पास लावारिस पड़े 880 करोड़ रुपए!

- अब तक लगभग 3,72,282 बीमा पॉलिसियां ली गईं, लेकिन मैच्योरिटी पर पैसे निकलवाए नहीं

नई दिल्ली ।

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में बिना दावा किए पड़ी परिपक्वता राशि जो मिली थी, वह 880.93 करोड़ रुपये थी। इस समय तक लगभग 3,72,282 पॉलिसीधारकों ने बीमा पॉलिसियां ली थीं, लेकिन मैचे योरिटी पर पैसे निकलवाए नहीं। अगर किसी पॉलिसीधारक ने तीन साल से अधिक समय तक कोई लाभ नहीं प्राप्त किया तो वो राशि बिना दावा की गई मानी जाती है और अगर पैसा 10 साल से अधिक समय तक बिना दावा के रह जाता है, तो वह पूरी राशि सरकार के सीनियर सिटिजन वेलफेयर फंड में स्थानांतरित कर दी जाती है। लेकिन अनक्लेम्ड राशि होने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। एलआईसी अपने पॉलिसीधारकों तक पहुंचने और अनक्लेम्ड राशियों का निपटारा करने के लिए जागरूकता अभियानों और डिजिटल माध्यमों का सहारा ले रही है। अगर आपके भी किसी एलआईसी पॉलिसी पर अनक्लेम्ड पैसा है, तो आपको एलआईसी कार्यालय जाकर आवश्यक दस्तावेज जमा करने होंगे। सभी एलआईसी पॉलिसीधारकों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी पॉलिसी की स्थिति को समय-समय पर जांचते रहें ताकि उनकी मेहनत की कमाई सुरक्षित रहे और उन्हें अपने भविष्य के लिए भी सुरक्षा मिले। अब एलआईसी ने जनता को ऑनलाइन भी सुविधा दी है, जिससे कोई भी पॉलिसीधारक घर बैठे अपनी पॉलिसी की स्थिति जान सकता है।

गरीबों की मदद के लिए चावल पर जीएसटी घटायाः निर्मला सीतारमण

- चावल पर कर दर को 18 से 5 प्रतिशत कम किया जाएगा

जैसलमेर ।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को जीएसटी परिषद की 55वीं बैठक के बाद बड़े फैसले किए। उन्होंने घोषित किया कि चावल पर कर दर को 18 से 5 प्रतिशत कम किया जाएगा। इसके साथ ही, जीवन रक्षक जीन थेरेपी और एसएएम मिसाइलों के लिए उपयोग होने वाले पुर्जों पर जीएसटी छूट की अवधि भी बढ़ा दी गई है। सभी एसएएम मिसाइलों के निर्माण में उपयुक्त पुर्जों को जीएसटी से छूट दी जाएगी। उन्होंने छोटे व्यवसायों की मदद के लिए कई और कदम उठाए, जैसे 2,000 रुपये से कम के लेन-देन के लिए छूट देना। वित्त मंत्री ने महसूस किया कि ई-कॉमर्स कंपनियों और खाद्य पदार्थों की डिलीवरी सेवाओं पर जीएसटी को लेकर और चर्चा होनी चाहिए। इसके साथ ही, बैठक में और विस्तृत चर्चा की जाएगी। वित्त मंत्री ने उधारकर्ताओं के लिए भी शुल्कों में कई बदलाव की घोषणा की। उन्होंने संशोधन के लिए एक अवधारणा नोट को मंजूरी दी और वस्तुओं की परिभाषा को स्पष्ट करने के उद्देश्य के साथ खुदरा बि के लिए पहले से पैक और लेबल वाली वस्तुओं की परिभाषा में संशोधन किया। इन सभी निर्णयों से सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में सुधार करने का निशाना साबित किया है।

रॉयल एनफील्ड की 3 नई बाइक्स जल्द होगी लांच

नई दिल्ली ।

रॉयल एनफील्ड कंपनी भारतीय बाजार में तीन नई बाइक्स को लॉन्च करने की तैयारी में है। अगर आप भी रॉयल एनफील्ड की नई बाइक खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो आपके लिए यह एक बेहतरीन मौका हो सकता है। पहली बाइक है रॉयल एनफील्ड क्लासिक 650, जो क्लासिक 350 की सफलता को देखते हुए लॉन्च की जाएगी। इस बाइक में 648सीसी का पैरेलल ट्विन इंजन मिलेगा, जो 47.4 बीएचपी की पावर और 52.4 एनएम का टॉर्क जेनरेट करेगा। यह बाइक शानदार परफॉर्मेंस के साथ क्लासिक डिज़ाइन में होगी और 2025 की पहली तिमाही में लॉन्च होने की उम्मीद है। दूसरी बाइक है रॉयल एनफील्ड बुलेट 650, जो रॉयल एनफील्ड की आइकॉनिक बुलेट सीरीज़ का बड़ा वर्जन होगी। इसमें 648सीसी ट्विन-सिलेंडर इंजन होगा, जो बेहतरीन राइडिंग अनुभव देगा। इसकी टेस्टिंग भारतीय सड़कों पर हो चुकी है, और इसकी लॉन्चिंग को लेकर उम्मीदें बहुत ज्यादा हैं। तीसरी बाइक है रॉयल एनफील्ड हिमालयन 650, जो एडवेंचर बाइक प्रेमियों के लिए एक शानदार विकल्प साबित हो सकती है।

जीएसटी काउंसिल की बैठक में पॉपकॉर्न पर लगेंगे 3 तरह के टैक्स

- पॉपकार्न पर फ्लेवर के अनुसार लगाया जाएगा टैक्स

नई दिल्ली । केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के नेतृत्व में जीएसटी काउंसिल की 55वीं बैठक जैसलमेर में आयोजित हुई, जहां पॉपकॉर्न पर नए टैक्स रेट्स के फैसले लिए गए। इसमें काउंसिल ने पॉपकॉर्न को तीन विभिन्न जीएसटी स्लैब में शामिल करने की योजना बनाई है, जो उसके फ्लेवर के अनुसार होंगे। टैक्स की विवरण इस प्रकार हैं- 1. साधारण नमक और मसालों से तैयार किया गया पॉपकॉर्न (पैकेज्ड और लेबल्ड न हो) पर 5 फीसदी जीएसटी लागू होगा। 2. पैकेज्ड और लेबल्ड साधारण नमक और मसालों वाले पॉपकॉर्न पर 12 फीसदी टैक्स लगेगा। 3. चीनी या सुगर फ्लेवर वाले पॉपकॉर्न पर 18 फीसदी जीएसटी लागू होगा। पॉपकॉर्न का व्यापार न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में भी बड़ा है। बीते साल में भारत में पॉपकॉर्न का व्यापार लगातार बढ़ रहा है और एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में इसका मार्केट 8 अरब डॉलर से अधिक का हो गया है। जीएसटी काउंसिल की बैठक में अन्य फैसले भी लिए गए, जिसमें पुरानी कारों पर 18 फीसदी जीएसटी, फोर्टिफाइड चावल पर 5 फीसदी जीएसटी और जीन थेरेपी के लिए पूरी छूट शामिल हैं। हेल्थ इंश योरेंस और लाइफ इंश योरेंस पर जीएसटी की दर कम करने के प्रस्ताव टल गए हैं, जबकि जोमेटो और स्विगी पर ऑनलाइन फूड ऑर्डर करने पर भी कोई राहत नहीं मिली। कुल मिलाकर जीएसटी काउंसिल की बैठक ने व्यापारिक मामलों को ध्यान में रखते हुए पॉपकॉर्न पर टैक्स में बड़े बदलाव किए हैं, जो आम जनता को सीधे असर पहुंचा सकते हैं।

इस साल आईपीओ बाजार में 90 कंपनियों ने रिकॉर्ड 1.6 लाख करोड़ जुटाए

- निवेशकों ने दीर्घकालिक निवेश के लिए भी कंपनियों में विश्वास जताया

मुंबई । आर्थिक वृद्धि की रफ्तार और अनुकूल बाजार परिस्थितियों के साथ, 2024 में आईपीओ के बाजार में भारी चल रही है। इस साल कंपनियों ने आईपीओ के माध्यम से भारी राशि जुटाई है। इस वृद्धि में निवेशकों का भरोसा और नियामकीय ढांचे में सुधार का महत्वपूर्ण योगदान है। साल के दौरान कंपनियों ने आईपीओ के जरिये रिकॉर्ड 1.6 लाख करोड़ रुपये की राशि जुटाई है। एक्सचेंज के पास उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2024 में 90 आईपीओ आए जिनके जरिये सामूहिक रूप से 1.6 लाख करोड़ रुपये जुटाए गए। माना जा रहा है कि अगला साल भी आईपीओ के लिए काफी अच्छा रहेगा। आईपीओ के लिए असाधारण रहा यह साल न केवल निर्गम लाने वाली कंपनियों के भरोसे को दर्शाता है, बल्कि इससे निवेशकों के विश्वास का भी पता चलता है। आईपीओ ने न केवल निगमों के भरोसे को बल्कि निवेशकों के विश्वास को भी प्रमाणित किया है। निवेशकों ने सिर्फ लाभ कमाने के लिए नहीं बल्कि दीर्घकालिक निवेश के लिए भी कंपनियों में विश्वास जताया है। हुंदै मोटर इंडिया का ऐतिहासिक 27,870 करोड़ रुपये का आईपीओ इस साल का सबसे बड़ा आईपीओ हुआ है। छोटी, मझोली और बड़ी कंपनियों ने साझेदारी जुटाते हुए धन जुटाया है। निवेशकों की बढ़ती भागीदारी के साथ आईपीओ के बाजार में आने वाले साल में भी तेजी की संभावना है। साल के तैयारी में हैं कंपनियां, जो आईपीओ के माध्यम से और अधिक धन जुटाने की सोच रही हैं। जब बाजार विश्लेषकों का यह मानना है कि 2025 में आईपीओ से जुटने वाली राशि अब कि आंकड़ों को पार कर सकती है, तो निवेशकों की उम्मीदें और भी ऊंचाई पर चढ़ गई हैं। आगामी साल में भी आईपीओ बाजार ऐसे ही गतिविधियों में आगे बढ़ते रहने की संभावना है।

वैश्विक रुझान, एफआईआई की गतिविधियां तय करेंगी शेयर बाजार की दिशा : विश्लेषक

- रुपये-डॉलर का रुख और कच्चे तेल के दाम भी बाजार को प्रभा वित करेंगे

मुंबई ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा वैश्विक रुझान और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की गतिविधियों से तय होगी। विश्लेषकों ने कहा है कि इस कम कारोबारी सत्र वाले सप्ताह में घरेलू मोर्चे पर कोई प्रमुख घटनाक्रम नहीं है। ऐसे में बाजार भागीदारों की नजरें वैश्विक संकेतकों पर रहेगी। बाजार के एक वरिष्ठ शोध विश्लेषक ने कहा कि आगे की ओर देखें तो घरेलू मोर्चे पर किसी बड़े संकेतक का अभाव है। हालांकि, कुछ वैश्विक संकेतक बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसमें अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल, डॉलर इंडेक्स का प्रदर्शन, बेरोजगारी दावे और नए घरों की बिक्री के आंकड़े शामिल हैं। उन्होंने कहा कि बाजार में उतार-चढ़ाव का सिलसिला चल रहा है। साथ ही विदेशी संस्थागत निवेशक लगातार बिकवाल बने हुए हैं। ऐसे में निवेशकों द्वारा सतर्क रुख अपनाए जाने की उम्मीद है। हालिया कमजोरी के रुख के बावजूद बाजार का दृष्टिकोण सतर्क रूप से आशावादी बना हुआ है। हालांकि, एफआईआई की लगातार बिकवाली ने बाजार पर दबाव बढ़ा दिया है। बाजार के जानकारों ने कहा कि एफआईआई का रुख अचानक से लिवाल से बिकवाल का हो गया, जिससे बाजार प्रभावित हुआ है। विश्लेषकों ने कहा कि रुपये-डॉलर का रुख और वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम भी बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यह सप्ताह कम कारोबारी सत्रों का रहेगा।

बाजार भागीदारों की निगाह एफआईआई के प्रवाह और वैश्विक बाजारों के प्रदर्शन पर रहेगी। बाजार के जानकारों ने कहा कि भारतीय बाजार में कमजोरी बने रहने की संभावना है। उतार-चढ़ाव के बीच बाजार भागीदारों की निगाह वैश्विक संकेतकों पर रहेगी। उन्होंने कहा कि त्योहारी सीजन आ रहा है और वैश्विक बाजारों में दो-तीन दिन अवकाश रहेगा। ऐसे में स्थानीय बाजार में भी गतिविधियां सुस्त रहेंगी।

केंद्र सरकार और एडीबी ने नीति-आधारित ऋण पर हस्ताक्षर किए

भारत के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में एक महत्वपूर्ण उन्नति की उम्मीद

नई दिल्ली । भारत सरकार और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मल्टीमॉडल और एकीकृत लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम कार्यक्रम (स्माइल) के तहत ऐतिहासिक नीति-आधारित ऋण पर हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम के माध्यम से भारत के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में एक महत्वपूर्ण उन्नति की उम्मीद है। सरकारी स्तर पर वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग और एशियन डेवेलपमेंट बैंक मिलकर भारत को ईफी सिएंट, रेसीलेंट और सस्टेने बिल लॉजिस्टिक्स सिस्टम में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। मल्टीमॉडल और एकीकृत लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम कार्यक्रम एक अहम नीति-आधारित पहल है जो लॉजिस्टिक्स सुधारों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है। इसके अंतर्गत, मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्बाध एकीकरण के लिए राष्ट्रीय, राज्य और शहर स्तर पर क्षमताएँ विकसित की जाएगी, वेयरहाउसिंग का मानकीकरण होगा, व्यापार लॉजिस्टिक्स में सुधार किया जाएगा, और प्रदूषण को कम करते हुए दक्षता बढ़ाई जाएगी। इन सुधारों से यह आशा है कि लॉजिस्टिक्स लागत में कमी आएगी, परिचालन दक्षता में सुधार होगा, और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इसके माध्यम से भारत को विश्वस्तरीय लॉजिस्टिक्स सेवाएं प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण धारा मिलेगी।

सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों का मार्केट कैप 4.95 लाख करोड़ घटा

- टीसीएस और रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ

मुंबई ।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों के बाजार मूल्यांकन (मार्केट कैप) में 4,95,061 करोड़ रुपये की गिरावट देखी गई है। शेयर बाजार में मंदड़ियों के रुख के बीच टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। बीते सप्ताह टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार पूंजीकरण 1,10,550.66 करोड़ रुपये घटकर 15,08,036.97 करोड़ रुपये, रिलायंस इंडस्ट्रीज के मूल्यांकन में 91,140.53 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 16,32,004.17 करोड़ रुपये, पर आ गया।

एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 76,448.71 करोड़ रुपये घटकर 13,54,709.35 करोड़ रुपये, भारती एयरटेल की 59,055.42 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ 8,98,786.98 करोड़ रुपये, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का बाजार पूंजीकरण 43,909.13 करोड़ रुपये घटकर 7,25,125.38 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक की बाजार हैसियत 41,857.33 रुपये घटकर 9,07,449.04 करोड़ रुपये, इन्फोसिस का मूल्यांकन 32,300.2 करोड़ रुपये घटकर 7,98,086.90 करोड़ रुपये, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का मूल्यांकन 20,050.25 करोड़ रुपये घटकर 5,69,819.04 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 12,805.27 करोड़ रुपये घटकर 5,48,617.81 करोड़ रुपये और आईटीसी का मूल्यांकन 6,943.5 करोड़ रुपये घटकर 5,81,252.32 करोड़ रुपये रह गया। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही। इसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, इन्फोसिस, एसबीआई, आईटीसी, एलआईसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

घरेलू प्रवासियों की संख्या में कमी आने का अनुमानः ईएसी-पीएम

- 2023 में घरेलू प्रवासियों की संख्या 40.20 करोड़ रही

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति (ईएसी) की एक रिपोर्ट ने देश में घरेलू प्रवासियों की संख्या में 2011 से 2023 तक 12 प्रतिशत की कमी का अनुमान लगाया है। रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में घरेलू प्रवासियों की संख्या 40.20 करोड़ रही, जो 2011 की जनगणना के अनुसार 11.78 प्रतिशत कम है। ईएसी-पीएम के खास पत्र में इस विषय पर ध्यान दिया गया है। एक पूर्व चेयरमैन ने लिखा है कि यह घटती प्रवासन दर वृद्धि की ओर एक सकारात्मक कदम है। यह बेहतर आर्थिक अवसरों के कारण हो रहा है और इससे देश को आर्थिक वृद्धि में सामर्थ्य मिलेगा। जनगणना 2011 के अनुसार केवल पांच राज्यों में ही कुल प्रवासियों का 48 प्रतिशत हिस्सा है, जिसमें राज्य के भीतरी प्रवासी भी शामिल हैं। प्रवासी संख्या में कमी का अनुमान देश में ला-गई अच्छी सेवाओं और शिक्षा के साथ-साथ उच्च आवृत्ति डेटा का उपयोग करने का परिणाम है। इस स्थिति में, देश को और भी अधिक उन्नति के लिए घरेलू प्रवासियों की सेवाएं सुधारने में महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता हो सकती है। इससे वे अपने परिवारों को सुधारित जीवन प्रदान करके देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दें।

तेजस्वी बोले- आप एक कदम चलेंगे तो मैं 4 कदम

धरने पर बैठे बीपीएससी अभ्यर्थियों से मिले, कहा- सीएम नीतीश को होश नहीं

पटना। के गर्दनीबाग में री-एग्जाम की मांग को लेकर पिछले 6 दिनों से बीपीएससी अभ्यर्थी धरने पर बैठे हैं। इस बीच नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव देर रात करीब 10 बजे कटिहार से सीधे धरना स्थल पर पहुंच गए। उन्होंने करीब आधे घंटे तक अभ्यर्थियों से बात की।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार खुद होश में नहीं हैं। उनको पता ही नहीं है कि बिहार में क्या कुछ चल रहा है।

तेजस्वी ने अपने हाथों में परीक्षा को फिर से करवाने की मांग वाला पोस्टर भी लिया। कैंडिडेट्स की समस्या सुनने के बाद नेता प्रतिपक्ष ने कहा, 'आप एक कदम चलेंगे, तो तेजस्वी यादव चार कदम चलेगा। बिहार में सब लोग मिलकर राजपाट चला रहे हैं। केवल मलाई खाने और सत्ता का सुख पाने के लिए सरकार में बने हुए हैं।' 'जब मैं डिप्टी सीएम था, तब पेपर लीक क्यों नहीं हुआ? 5 लाख लोगों को नौकरी कैसे मिली? अब कैसे पेपर लीक हो जाता है? इन सबके लिए बीपीएससी और सरकार जिम्मेदार है। छात्रों की मांग पूरी होनी चाहिए।' सरकार अपनी गलतियां छिपा रही है तेजस्वी ने आगे कहा, 'मुख्यमंत्री नीतीश कुमार खुद होश में नहीं हैं। उनको पता ही नहीं है कि बिहार में क्या कुछ चल रहा है। चार लोग मिलकर पूरे बिहार को चला रहे हैं। यही लोग मिलकर सब बर्बाद करने में लगे हुए हैं। CBI

और जांच एजेंसी इनकी है। सरकार अपनी गलतियों को छिपाने का काम कर रही है। 'विपक्ष पर लगातार आरोप लगाया जा रहा है। पेपर लीक मामले में किसी भी बड़े अधिकारियों पर अब तक कार्रवाई नहीं की गई। छात्रों को इंसाफ मिलना चाहिए। सही तरीके से हर परीक्षा होनी चाहिए। बीपीएससी 70वीं पीटी परीक्षा पूरी तरीके से रद्द होनी चाहिए।' तेजस्वी ने वीडियो कॉल पर अभ्यर्थियों से की थी बात इससे पहले गुरुवार रात को नेता प्रतिपक्ष ने बीपीएससी कैंडिडेट्स से

वीडियो कॉल पर बात की थी । उन्होंने कहा था, 'हम आपलोग के साथ हैं। आपके मुद्दे को जोर-शोर से उठाएंगे। एक बात हमेशा याद रखिएगा कि जो लड़ेगा वही जीतेगा। जब डीएम ही थप्पड़ मार रहा है तो प्रदर्शन के दौरान सुविधा कौन देगा। हमारी पार्टी प्रदर्शन में शामिल महिलाओं-बहनों के लिए मोबाइल शौचालय बनाएगी।' वहीं, जब अभ्यर्थियों ने कहा कि आप हमारा साथ देने के लिए गर्दनीबाग धरनास्थल पर आइए।

पूर्णिया में बैट्री फैक्ट्री में भीषण आग लगी

पूर्णिया के मरंगा बियाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया स्थित बैट्री फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। आग की लपटें इतनी भयावह थी कि इसका गुब्बार आसपास के कई इलाकों से दिखाई दिया। आग फैक्ट्री के गैस चैंबर से उठी, जिसकी लपटें कुछ ही सेकेंड में चैंबर के पूरे हिस्सों को अपनी चपेट में ले लिया। आगलगी के बाद बियाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया स्थित बैट्री फैक्ट्री के कर्मियों में अफरातफरी मच गई। देखते ही देखते आसपास के लोगों की भीड़ फैक्ट्री के बाहर जुट गई। कुछ ही देर में फैक्ट्री संचालक मौके पर पहुंचे। जिसके बाद फायर बिग्रेड को कॉल कर आगलगी की जानकारी दी गई। जानकारी मिलते ही दमकल की 4 गाड़िया मौके पर पहुंची। घंटे भर की मशक्कत के बाद आगलगी पर काबू पाया जा सका।मरंगा बियाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया स्थित बैट्री फैक्ट्री में हुए नुकसान का अब तक अनुमान नहीं लगाया जा सका है। बैट्री फैक्ट्री में हुई भीषण आगलगी का लाइव

वीडियो भी सामने आया है। जिसमें फैक्ट्री के गैस चैंबर वाले हिस्से से काले धुएं और आग का गुब्बार उठता देखा जा सकता है। मामले की जानकारी देते हुए बियाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया के रूपेश सिंह ने बताया कि गैस चैंबर में वेल्डिंग करने के दौरान सुबह करीब 10 से 11 बजे उठी चिंगारी ने आग की तेज लपटों का रूप ले लिया। इसके कुछ ही सेकेंड में आग की लपटों ने पूरे गैस चैंबर को अपने जद में ले लिया। आग लगी की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की 4 गाड़ियां मौके पर पहुंची। जिसके बाद घंटे भर की मशक्कत से आग पर काबू पा लिया गया।

नीतीश कुमार को अब राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए

जन सुराज पार्टी के अध्यक्ष बोले- सीएम से जनता ऊब चुकी, अब नए विकल्प की तलाश

जमुई जन सुराज पार्टी के अध्यक्ष मनोज भारती ने नीतीश कुमार की राजनीति करियर पर टिप्पणी की है। उन्होंने कहा, 'नीतीश कुमार को अब राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए। अब समय आ चुका है। अगर NDA नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ती है, तो यह ठऊअ की बेवकूफी होगी।' उन्होंने कहा, 'मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से जनता ऊब चुकी है। अब जनता एक नए विकल्प की तलाश में है। हमारा काम जनता को सही-सही बात बताना है, फिर निर्णय जनता के हाथ में है।' बिहार की राजनीतिक जमीन काफी उर्वरक है' मनोज भारती ने कहा कि बिहार की राजनीतिक जमीन काफी उर्वरक है। उन्होंने इसे एक प्रतीकात्मक संदेश देते हुए कहा कि अगर इसमें

थोड़ा बीज डाला जाए, तो अच्छी फसल तैयार होगी। पार्टी में मची भगदड़ की अटकलों पर उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी से जुड़े लोगों ने पार्टी नहीं छोड़ी है, बल्कि केवल कोर कमेटी से इस्तीफा दिया है। उन्होंने बताया कि उन सभी लोगों से उनकी बातचीत हो चुकी है और वे अब भी जन सुराज के साथ हैं। साथ ही, उन्होंने आश्वासन दिया कि ये सभी लोग भविष्य के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेंगे। बिहार की अगली कई पीढ़ियां अंधकार में डूब सकती है अगर जन सुराज से किसी का मोहभंग हो रहा है, तो इसे उन्होंने बिहार के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया। भारती ने कहा कि बिहार बदलने का जो सपना सभी के दिलों-दिमाग में है, यह शायद उनका अंतिम प्रयास है। यदि इस बार चूक हो गई, तो बिहार की अगली कई पीढ़ियां अंधकार में डूब जाएंगी। 2025 के विधानसभा चुनावों की तैयारी में जुटी जनसुराज दरअसल, जन सुराज पार्टी के अध्यक्ष मनोज भारती शनिवार को दो दिवसीय दौरे पर जमुई पहुंचे। जनसुराज का अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार वो जमुई आए हैं। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य पार्टी कार्यकताओं से मिलना, जिला से लेकर प्रखंड स्तर तक संगठन के नेताओं के साथ आगामी रणनीति पर विचार-विमर्श करना है।

दानापुर फायरिंग को लेकर तनाव, बाजार-दुकानें बंद

पटना। के दानापुर में हुई अंधाधुध फायरिंग के बाद तनाव है। पेठिया और सदर बाजार के दुकानदारों ने अपनी-अपनी दुकानें बंद कर दी। पुलिस ने माहौल को देखते हुए फ्लैग मार्च किया है। दरअसल, शनिवार को दानापुर में श्राद्ध कर्म से लौट रहे दानापुर छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत कुमार उर्फ दही गोप और विकास को शनिवार की रात गोली मारी थी। विकास ने वारदात के कुछ देर बाद ही दम तोड़ दिया था। वहीं रविवार की सुबह जमीन कारोबारी रंजीत कुमार की इलाज के दौरान मौत होने की सूचना है, हालांकि इसकी पुष्टि प्रशासन नहीं कर रहा है। इधर मौत की सूचना मिलने के बाद इलाके में तनाव बढ़ गया है। शनिवार की रात रंजीत कुमार श्राद्ध भोज में शामिल होने के बाद पेठिया बाजार में अपने सहयोगियों को छोड़कर अपनी कार से घर की ओर बढ़ रहे थे। इस बीच एक युवक ने रंजीत को आवाज दी। वहां जाते ही अपराधियों ने फायरिंग शुरू कर दी। 20 राउंड फायरिंग हुई थी। रंजीत के पेट और सिर में करीब 5 गोली लगी। रंजीत को बचाने गए विकास को भी अपराधियों ने गोली मार दी। दोनों खून से लथपथ करीब 15 मिनट तक सड़क पर पड़े रहे। स्थानीय लोगों ने अस्पताल में दोनों को भर्ती कराया। डॉक्टरों ने विकास को मृत घोषित कर दिया थावारदात के बाद अपराधियों ने 6 राउंड हवाई फायरिंग की और मौके से फरार हो गए। गोलीबारी की आवाज सुनकर पास में श्राद्ध भोज में भी अफरा-तफरी मच गई। घायल रंजीत को पहले सगुना मोड़ स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से डॉक्टरों ने रेफर कर दिया था। फिर पटना के एक निजी अस्पताल में रेफर किया गया। रविवार की सुबह रंजीत ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। सीसीटीवी फुटेज खंगाला जा रहा है दानापुर के एएसपी भानू प्रताप सिंह ने बताया कि घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज को खंगाला जा रहा है। मौके पर फॉरेंसिक टीम को बुलाया गया है, जिससे अपराधियों की पहचान किया जा सके। घटनास्थल से 7 खोखा बरामद हुए हैं।

ससुर को फोन कर कहा आपकी बेटी मर गई

भोजपुर। में नवविवाहिता की फंदे से लटकी लाश मिली है। मृतका की पहचान रितु कुमारी (21) के रूप में हुई है। मृतका के पिता ने अपने कंपाउंडर दामाद पर हत्या का आरोप लगाया है। पिता का कहना है, 'दामाद श्याम कुमार ने अपने परिवार के साथ मिलकर रितु की हत्या की, फिर शव को रस्सी से लटका दिया। घटना को अंजाम देने के बाद श्याम अपने परिवार के साथ फरार हो गया। उसके साथ मेरा 10 महीने का नाती भी है।' मृतका के पिता के मुताबिक, रितु के गले पर काला निशान मिला है, जो रस्सी से गला घोंटने का निशान है। उन्होंने बताया कि दामाद और उसके परिजन की ओर से लगातार दहेज में बाकी 2 लाख रुपए की डिमांड की जा रही थी।' पिता ने ये भी बताया, 'रितु की मौत की जानकारी भी श्याम ने दी थी। उसने फोन करके कहा था कि रितु मर गई

है। जब हम लोग बेटी के ससुराल पहुंचे तो घर के सारे लोग फरार थे।' फिलहाल, पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है। घटना चांदी थाना क्षेत्र के रामपुर गांव की है।पटना के लहलादपुर गांव के रहने वाले मृतका के पिता भोला यादव ने बताया, 'रितु कुमारी की शादी 11 मई 2023 को हुई थी। आरोपी दामाद चांदी थाना क्षेत्र के रामपुर गांव का रहने वाला है। शादी में दहेज के तौर पर 9 लाख रुपए कैश की बात हुई थी। मैंने 7 लाख रुपए दिए थे और बाइक खरीदने के लिए डेढ़ लाख रुपए दिए थे। इसके अलावा, सोने की चैन, फ्रिज, बर्तन एवं अन्य सामान दिया गया था।'

संक्षिप्त डायरी

13 साल छोटे प्रेमी के लिए पति को छोड़ा,अब सुसाइड

औरंगाबाद। में एक महिला का शव उसके लिव-इन पार्टनर के घर से मिला है। उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। महिला का अपने से 13 साल छोटे लड़के से अफेयर था। उसके लिए उसने अपने पति का घर छोड़ दिया। 8 साल के बेटे को भी छोड़कर प्रेमी के साथ रह रही थी। महिला का अपनी भाभी के भाई से अफेयर था। करीब 18 महीने से वो अपने प्रेमी के घर पर लिव इन में ही रह रही थी, लेकिन अचानक शनिवार की शाम महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फिलहाल, सुसाइड के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया है। सीता की मौत के बाद से मिथिलेश और उसके परिजन फरार हैं। महिला की पहचान साहेब महतो की 35 साल की बेटी सीता देवी के रूप में हुई है। सीता की 2013 में सुभाष महतो के साथ शादी हुई थी। पेशे से मजदूर सुभाष महतो अपनी पत्नी को लेकर शादी के कुछ दिनों बाद औरंगाबाद शहर आ गया और यहां किराए के मकान में रहने लगा। करीब 2015 में सीता के भाई की शादी हुई। सीता की भाभी के भाई का नाम मिथिलेश था। एक बार वो काम से औरंगाबाद आया, तो अपनी बहन से बात कर सीता के घर ही रुक गया। संतोष ने भी कहा कि आप रिश्तेदार हैं, तो दूसरी जगह जाने की कोई जरूरत नहीं, घर पर ही रुक जाइए। इसी बीच सीता और मिथिलेश के बीच बातचीत हुई। दोनों ने एक दूसरे का नंबर ले लिया। यही से दोनों की कहानी शुरू हुई।

RJD विधायक मुकेश रौशन की फिसली जुबान

हाजीपुर। RJD के महुआ विधायक मुकेश रौशन की जुबान फिसल गई। RJD MLA मुकेश रौशन शहर के हाजीपुर स्टेशन के सामने भाजपा नेता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का पुतला दहन कर रहे थे। इस दौरान कार्यकताओं ने अमित शाह मुदार्बाद और बाबा साहब भीम राव आंबेडकर के अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान के नारे लगाए। तभी राजद MLA मुकेश रौशन ने सभी को चुप कराकर वे अमित शाह का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान का नारा लगाने लगे। मुकेश रौशन ने अमित शाह के संसद भवन में सदन के दौरान बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को लेकर दिए गए बयान के विरोध में हाजीपुर में शनिवार की शाम मार्च में निकले थे। इसकी अगुवाई विधायक मुकेश रौशन खुद कर रहे थे। MLA के अमित शाह की अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान का नारा लगाते ही साथ में खड़े कार्यकर्ता भी इसी नारा को दोहराते नजर आए। बीजेपी के लालगंज विधायक संजय सिंह ने कहा कि जो आत्मा की आवाज है, उसे आप दबाने की कोशिश करेंगे तो कभी न कभी उनकी जुबान पर आ ही जाता है। इसी लिए RJD MLA मुकेश रौशन की जुबान पर आ गया अमित शाह का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान। वो सही कह रहे हैं। उन्होंने कहा कि वीडियो को मैंने भी देखा है। आत्मा उसको मजबूर करती है कि तुम सच बोलो तो सच सामने आया। बीजेपी विधायक ने आगे कहा कि तेज प्रताप यादव बोले हैं कि महुआ विधानसभा सीट में हमारी जान बसती है। वो पार्टी के नेता हैं और पार्टी उनकी है, हो सकता है कि महुआ से टिकट कटने के डर के कारण ऐसा कहा हो, लेकिन जो भी हो जुबान पर आया है तो सही ही बोले हैं।

होमगार्ड जवान की ड्यूटी के दौरान बिगड़ी तबीयत, मौत

वैशाली। के गरौल पावर सब स्टेशन में सुरक्षा गार्ड के रूप में तैनात होमगार्ड जवान सुनील कुमार सिंह की इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक जवान सारण जिले के अवतार नगर थाना क्षेत्र के नरांव गांव निवासी स्वर्गीय राजेश्वर सिंह के 32 वर्षीय पुत्र थे। जवान की मौत के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। ड्यूटी के दौरान बिगड़ी तबीयत शुक्रवार को ड्यूटी के दौरान सुनील कुमार सिंह की अचानक तबीयत खराब हो गई। पावर सब स्टेशन के अन्य कर्मियों ने उन्हें आनन-फानन में इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया। घटना की सूचना मिलते ही उनके परिजन भी अस्पताल पहुंचे। लेकिन, शनिवार की सुबह जवान ने दम तोड़ दिया। विभागीय सम्मान और सहायता मौत की खबर सुनकर होमगार्ड संघ के जिलाध्यक्ष सोनेलाल सिंह अपने साथियों के साथ सदर अस्पताल पहुंचे।

महिला के राख फेंकने से नाराज पाटीदारों ने की मारपीट

सीवान। महिला के राख फेंकने से नाराज पाटीदारों ने की मारपीट महिला के राख फेंकने से नाराज पाटीदारों ने की मारपीटमहिला के राख फेंकने से नाराज पाटीदारों ने की मारपीट सीवान के सराय थाना क्षेत्र के सहलौर में जमकर हुई मारपीट के बाद 4 लोग गम्भीर रूप से घायल हो गये। मारपीट म मुख्य कारण राख फेंकना था, जहां एक बुजुर्ग महिला शरीफन बीबी द्वारा राख फेंके जाने के बाद मारपीट की घटना को अंजाम दिया गया है। फरसा तलवार व लाठी डंडों से हमला हुआ है। साथ ही मारने व काटने का भी प्रयास किया गया है, जिसमें चारों घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पटीदारों द्वारा ही इस घटना को अंजाम दिया गया है। पाटीदारों के साथ पूर्व में जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। वृद्ध महिला के राख फेंकने से पटीदार काफी नाराज थे, जिसके बाद उग्र होकर उन्होंने हथियारों से हमला कर दिया। बीच बचाव करने पहुंचे घर के अन्य सदस्यों पर भी फरसा, तलवार चलाया गया जिसमें हाथ,सिर व अन्य कई जगहों पर हमला किया गया, जिसमें चार लोग घायल हो गए हैं। मामले में पीड़ित के द्वारा थाने में आवेदन दिया गया है। सराय थाना प्रभारी धर्मेंद्र कुमार ने बताया वृद्ध महिला द्वारा राख फेके जाने के बाद तलवार व अन्य हथियारों से हमला कर दो पक्षों में मारपीट हुई है।

एनडीए में सीएम पद को लेकर कोई विवाद नही

जदयू नेता जय कुमार बोले- सब जानते नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही लड़ेंगे 2025 का चुनाव

सासाराम। पूर्व मंत्री और जदयू नेता जय कुमार सिंह शनिवार रात अपने चुनाव क्षेत्र दिनारा के सूर्यपुरा में अग्निकांड के पीड़ित परिवार से मुलाकात की और उन्हें हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया। मौके पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि एनडीए में सीएम पद का कोई विवाद नहीं है, सभी घटक दल जानते हैं कि 2025 में भी नीतीश कुमार ही नेता होंगे। पूछे गए सवाल में पूर्व मंत्री ने कहा कि बिहार एनडीए स्थिर है नीतीश कुमार के नेतृत्व में 2025 का लड़ा जाएगा चुनाव। उन्होंने बिहार सरकार के मंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के बयान

का समर्थन करते हुए कहा कि प्रदेश अध्यक्ष सही कह रहे हैं कि बिहार में किसका नेतृत्व होगा वह बड़े नेता तय करेंगे। बता दें कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और बिहार के मंत्री दिलीप जायसवाल ने एक दिन पूर्व बयान दिया था कि नीतीश कुमार की नेतृत्व में 2025 का चुनाव लड़ा जाएगा वही नेता होंगे, लेकिन वह 24 घंटा के

अंदर वह अपने बयान से पलट गए उन्होंने कहा कि हम लोग छोटे नेता हैं, बिहार में कौन नेता होगा इसका निर्णय भाजपा के शीर्ष नेता तय करेंगे। उसके बाद एनडीए नेताओं का बिहार में एक विशेष बैठक हुआ था, उसके तुरंत दिलीप जायसवाल ने बयान दिया था कि बिहार में 2025 का चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ा जाएगा जबकि आज वह 24 घंटा के भीतर अपने बयान से पलट गया> उन्होंने कहा कि बिहार में किसके नेतृत्व में चुनाव होगा और कौन नेता होंगे 2025 के इसका निर्णय भाजपा के शिष्य नेतृत्व करेगा। आज पूर्व मंत्री जयकुमार सिंह ने इसका जवाब देते हुए कहा कि दिलीप जावसवाल ठीक कह रहे हैं की जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार है और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा है तो यह लोग बैठकर बात करेंगे कि बिहार में किसके नेतृत्व में लड़ा जाएगा चुनाव और नीतीश कुमार ही नेतृत्व में ही बिहार विधानसभा का अगला 2025 चुनाव होगा ये सब जानते है।

हनुमानजी अपनी शक्ति क्यों भूल गए थे?

श्री सीता हरण के बाद हनुमानजी और श्रीराम का मिलन हुआ और हनुमानजी ने श्रीराम को सुग्रीव, जामवंत आदि वानरयूथों से मिलाया। फिर जब लंका जाने के लिए रामसेतु बनाया गया तो श्रीराम ने हनुमानजी को लंका जाने का आदेश दिया, परंतु हनुमानजी ने लंका जाने में अपनी असमर्थता जताई तब जामवंतजी ने हनुमानजी को उनकी शक्तियों की याद दिलाई। परंतु सवाल यह है कि हनुमानजी अपनी शक्ति क्यों भूल गए थे? दरअसल, हनुमानजी को कई देवताओं ने विभिन्न प्रकार के वरदान और अस्त्र-शस्त्र दिए थे। इन वरदानों और अस्त्र-शस्त्र के कारण बचपन में हनुमानजी उधम मचाने लगे थे। खासकर वे ऋषियों के बगीचे में घुसकर फल, फूल खाते थे और बगीचा उजाड़ देते थे। वे तपस्यारत मुनियों को तंग करते थे। उनकी शरारतें बढ़ती गई तो मुनियों ने उनकी शिकायत उनके पिता केसरी से की। माता-पिता में खूब समझाया कि बेटा ऐसा नहीं करते, परंतु हनुमानजी शरारत करने से नहीं रुके तो एक दिन अंगिरा और भृगुवंश के ऋषियों ने कुपित होकर उन्हें श्राप दे दिया कि वे अपने शक्तियों और बल को भूल जाएंगे परंतु उचित समय पर उन्हें उनकी शक्तियों को कोई याद दिलाएगा तो याद आ जाएगी। फिर जब हनुमानजी को श्रीराम का कार्य करना था तो जामवंत जी का हनुमानजी के साथ लंबा संवाद होता है। इस संवाद में वे हनुमानजी के गुणों का बखान करते हैं और तब हनुमानजी को अपनी शक्तियों का आभास होने लगता है। अपनी शक्तियों का आभास होते ही हनुमानजी विराट रूप धारण करते हैं और समुद्र को पार करने के लिए उड़ जाते हैं।

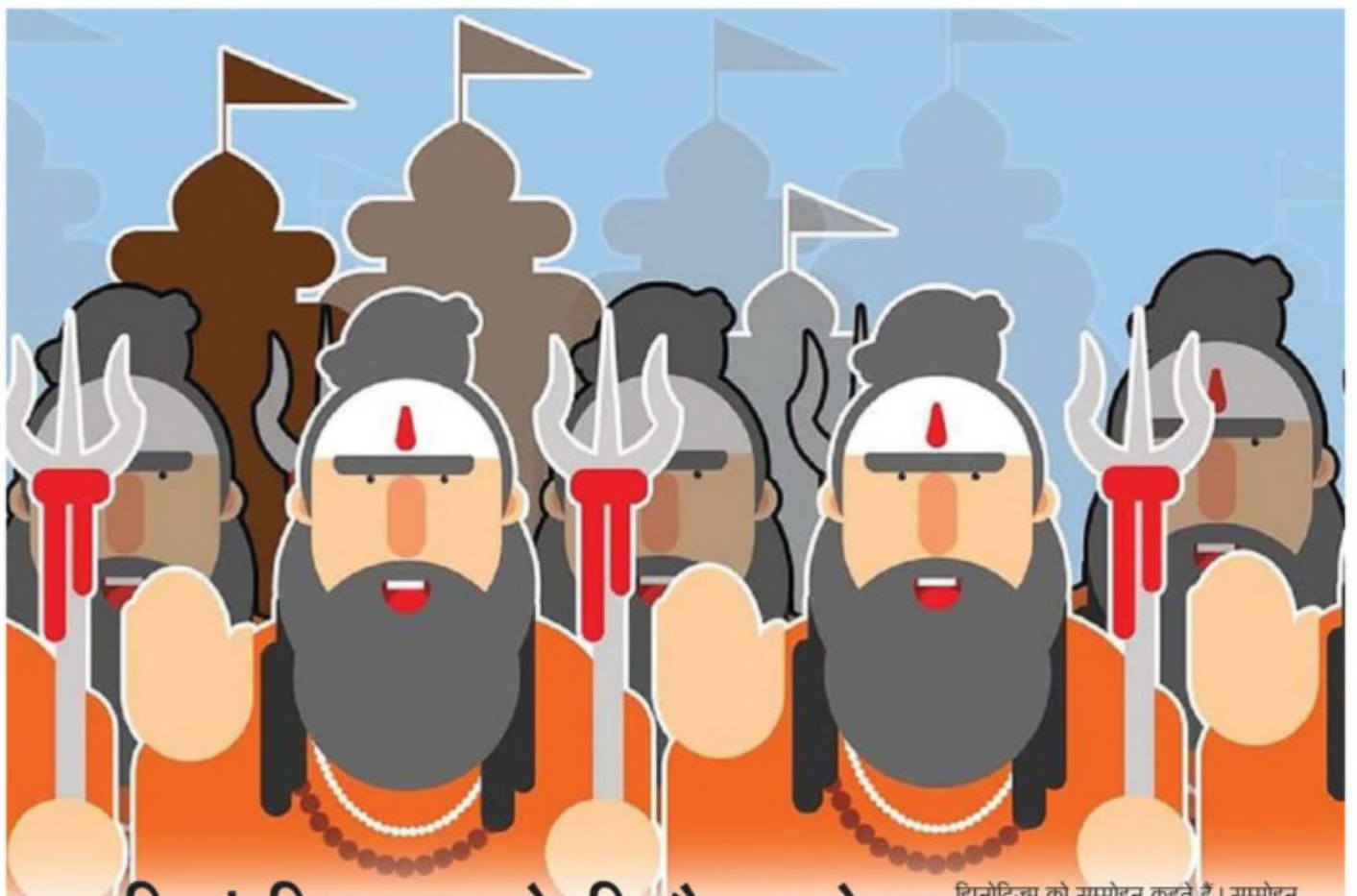

छठी इंद्री क्या होती है, इसे कैसे जाग्रत किया जा सकता है

- छठी इंद्री को अंग्रेजी में सिक्स्थ सेंस कहते हैं। यह क्या होती है, कहां होती है और कैसे इसे जाग्रत किया जा सकता है यह जानना भी जरूरी है। इसे जाग्रत करने के लिए वेद, उपनिषद, योग आदि हिन्दू ग्रंथों में अनेक उपाय बताए गए हैं। नास्त्रेदमस इसी तरह के उपायों से भविष्यवक्ता बने थे।
- मस्तिष्क के भीतर कपाल के नीचे एक छिद्र है, उसे ब्रह्मरंध्र कहते हैं, वहीं से सुषुम्ना नाड़ी सहस्रकार के जुड़कर रीढ़ से होती हुई मूलाधार तक गई है। इसी नाड़ी के बायीं ओर इड़ा और दायीं ओर पिंगला नाड़ी स्थित है। दोनों के बीच सुप्तावस्था में छठी इंद्री स्थित है।
- यह छठी इंद्री ही हमें हर वक्त आने वाले खतरे या भविष्य में होने वाली घटनाओं का आभास करती रहती है लेकिन कुछ लोग इसे स्पष्ट समझ लेते हैं और कुछ नहीं। यदि आप इसे समझें तो आपके साथ घटने वाली घटनाओं के प्रति ये इंद्री आपको सजग कर देगी।
- छठी इंद्री जाग्रत होने से व्यक्ति में भूत और भविष्य में झांकने की क्षमता आ जाती है। ऐसा व्यक्ति मीलों दूर बैठे व्यक्ति की बातें सुन सकता और उसे देख भी सकता है। दूसरों के मन की बात जान ही नहीं सकता बल्की उनका मन बदल भी सकता है और दूसरों की बीमारी दूर की जा सकती है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार छठी इंद्री कल्पना नहीं, वास्तविकता है, जो हमें किसी घटित होने वाली घटना का पूर्वाभास कराती है। यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के रॉन रेसिक के अनुसार छठी इंद्रिय के कारण ही हमें भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास होता है।
- छठी इंद्री को जाग्रत करने का बहुत ही सरल तरीका है। तीन माह के लिए खुद को परिवार और दुनिया से काटकर आपको योग की शरण में जाना होगा। यम, नियम, प्राणायम और योगासन करते हुए लगातार ध्यान करना होगा।
- प्राणायाम सबसे उत्तम उपाय इसलिए माना जाता है क्योंकि हमारी दोनों भौहों के बीच छठी इंद्री होती है। सुषुम्ना नाड़ी के जाग्रत होने से ही छठी इंद्री जाग्रत हो जाती है। प्राणायम के माध्यम से छठी इंद्री को जाग्रत किया जा सकता है।
- मेस्मेरिज्म या हिप्नोटिज्म जैसी अनेक विद्याएं इस छठी इंद्री को जाग्रत करने का सरल और शॉर्टकट रास्ता है लेकिन इसके खतरे भी हैं। हिप्नोटिज्म को सम्मोहन कहते हैं। सम्मोहन विद्या को ही प्राचीन समय से 'प्राण विद्या' या 'त्रिकालविद्या' के नाम से पुकारा जाता रहा है।
- मन के कई स्तर होते हैं। उनमें से एक है सुक्ष्म शरीर से जुड़ा हुआ आदिम आत्म चेतन मन। यह मन हमें आने वाले रोग या खतरें का संकेत देकर उससे बचने के तरीके भी बताता है। इस मन को प्राणायाम या सम्मोहन से साधा जा सकता है।
- त्राटक क्रिया से भी इस छठी इंद्री को जाग्रत कर सकते हैं। आप बिना पलक गिराए किसी एक बिंदु, क्रिस्टल बॉल, मोमबती या घी के दीपक की ज्योति पर देखते रहिए। इसके बाद आंखें बंद कर ध्यान करें। कुछ समय तक इसका अभ्यास करें। इससे धीरे-धीरे छठी इंद्री जाग्रत होने लगेगी।
- ऐसा कई बार देखा गया है कि कई लोगों ने अंतिम समय में अपनी बस, ट्रेन अथवा हवाई यात्रा को कैंसिल कर दिया और वे चमत्कारिक रूप से किसी दुर्घटना का शिकार होने से बच गए। बस यही छठी इंद्री का कमाल है। आप इसे पहचानें क्योंकि यह सभी संवेदनशील लोगों के भीतर होती है।
- यदि आपको यह आभास होता है कि पीछे कोई चल रहा है या दरवाजे पर कोई खड़ा है। कुछ होनी-अनहोनी होने वाली है या कोई खुशी का समाचार मिलने वाला है तो आप अपनी इस क्षमता पर लगातार गौर करें और ध्यान देंगे तो यह विकसित होने लगेगी। जैसे-जैसे अभ्यास गहराएगा आपकी छठी इंद्री जाग्रत होने लगेगी और आप भविष्यवक्ता बन जाएंगे।

हिन्दू धर्म में सफेद वस्त्र का क्या है महत्व

हिन्दू धर्म में सफेद वस्त्र का बहुत महत्व है। सफेद रंग हर तरह से शुभ माना गया है, लेकिन वक्त के साथ लोगों ने इस रंग का मांगलिक कार्यों में इस्तेमाल बंद कर दिया। हालांकि प्राचीनकाल में सभी तरह के मांगलिक कार्यों में इस रंग के वस्त्रों का उपयोग किया जाता था। यह रंग शांति, शुभता, पवित्रता और मोक्ष का रंग है।

लक्ष्मी का वस्त्र : सच तो यह है कि सफेद रंग सभी रंगों में अधिक शुभ माना गया है इसीलिए कहते हैं कि लक्ष्मी हमेशा सफेद कपड़ों में निवास करती है।

मांगलिक वस्त्र : 20-25 वर्षों पहले तक लाल जोड़े में सजी दुल्हन को सफेद ओढ़नी ओढ़ाई जाती थी। इसका यह मतलब कि दुल्हन ससुराल में पहला कदम रखे तो उसके सफेद वस्त्रों में लक्ष्मी का वास हो। आज भी ग्रामीण क्षेत्र में सफेद ओढ़नी की परंपरा का पालन किया जाता है।

यज्ञकर्ता का वस्त्र : प्राचीन काल में जब भी यज्ञ किया जाता था तो पुरुष और महिला दोनों ही सफेद वस्त्र ही धारण करके बैठते थे। पुरोहित वर्ग इसी तरह के वस्त्र पहनकर यज्ञ करते थे। दूसरी ओर आज भी किसी भी सम्मान समारोह आदि में सफेद कुर्ता और धोती पहनने का रिवाज है।

विधावा का वस्त्र : यदि किसी का पति मर गया तो उसे विधवा और किसी की पत्नी मर गई है तो उसे विधुर कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार पति की मृत्यु के नौवें दिन उसे दुनियाभर के रंगों को त्यागकर सफेद साड़ी पहननी होती है, वह किसी भी प्रकार के आभूषण एवं श्रृंगार नहीं कर सकती। स्त्री को उसके पति के निधन के कुछ सालों बाद तक केवल सफेद वस्त्र ही पहनने होते हैं और उसके बाद यदि वह रंग बदलना चाहे तो बेहद हल्के रंग के वस्त्र पहन सकती है। मध्यकाल में हिन्दू धर्म में कई तरह की बुराइयां सम्मलित हुई उसमें एक यह भी थी कि कोई स्त्री यदि विधवा हो जाती थी तो वह दूसरा विवाह नहीं कर पाती थी। हालांकि आज भी उत्तर भारत के ग्रामीण इलाकों में विधवा विवाह का प्रचलन है जिसे नाता कहा जाता है। कोई स्त्री पुनर्विवाह का निर्णय लेती है, तो इसके लिए वह स्त्रतंत्र है। आज समाज का स्वरूप बदल रहा है। विधवाएं रंगीन वस्त्र भी पहन रही है और शादी भी कर रही हैं। वेदों में एक विधवा को सभी अधिकार देने एवं दूसरा विवाह करने का अधिकार भी दिया गया है। वेदों में एक कथन शामिल है-

'उदीरष्व नार्यभि जीवलोकं
गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं
पत्युर्जनित्वमभि सम्बभूथ।'

अर्थात पति की मृत्यु के बाद उसकी विधवा उसकी याद में अपना सारा जीवन व्यतीत कर दे, ऐसा कोई धर्म नहीं कहता। उस स्त्री को पूरा अधिकार है कि वह आगे बढ़कर किसी अन्य पुरुष से विवाह करके अपना जीवन सफल बनाए। चार कारणों से विधवा महिलाओं को सफेद वस्त्र दिए गए। पहला यह कि यह रंग कोई रंग नहीं बल्कि रंगों के अनुपस्थिति है। मतलब यह कि अब जीवन में कोई रंग नहीं बचा। दूसरा यह कि इससे महिला की एक अलग पहचान बन जाती है और लोग उसे सहानुभूति एवं संवेदना रखते हैं। तीसरा यह कि सफेद रंग आत्मविश्वास, सात्विक और शांति का रंग है। इसके साथ ही सफेद वस्त्र विधवा स्त्री को प्रभु में अपना ध्यान लगाने में मदद करते हैं। चौथा कराण यह कि इससे महिला का कहीं ध्यान नहीं भटकता है और उसे हर वक्त इसका अहसास होता है कि वह पवित्र है। पांचवां कारण यह कि यदि महिला के कोई पुत्र या पुत्री है तो वह अपने भीतर नैतिकता और जिम्मेदारी का अहसास करती रहे ताकि वह दूसरा विवाह नहीं करें। दोबारा शादी नहीं करने से पुत्र पुत्रियों के जीवन पर विपरित या प्रतिकुल असर नहीं पड़ता है।

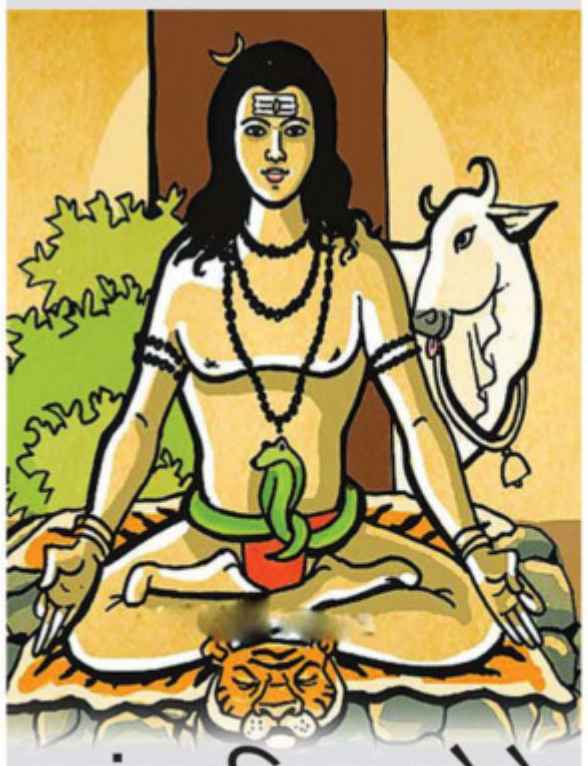

तुरंत सिद्ध होते हैं साबर मंत्र

वैदिक अथवा तांत्रोक्त अनेक ऐसे मंत्र हैं, जिसमें साधना करने के लिए अत्यंत सावधानी की जरूरत होती है। असावधानी से कार्य करने पर प्रभाव प्राप्त नहीं होता अथवा सारा श्रम व्यर्थ चला जाता है, परंतु शाबर मंत्रों की साधना या सिद्धि में ऐसी कोई आशंका नहीं होती। यह सही है कि इनकी भाषा सरल और सामान्य होती है।

माना जाता है कि लगभग सभी साबर साधनाओं और मंत्रों का अविष्कार गुरु गोरखनाथ ने किया है। यह मंत्र बहुत जल्दी ही सिद्ध भी हो जाते हैं और इनकी साधनाएं बहुत ही सरल होती हैं। ओम गुरुजी को आदेश गुरजी को प्रणाम, धरती माता धरती पिता, धरती धरे ना धीरबाजे श्रींगी बाजे तुरतुरि आया गोरखनाथमीन का पुत मुंज का छड़ा लोहे का कड़ा हमारी पीठ पीछे यति हनुमंत खड़ा, शब्द सांचा पिंड काचास्फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर चाकू से अपने चारों तरफ रक्षा रेखा खींच ले गोलाकार, स्वयं हनुमानजी साधक की रक्षा करते हैं। शर्त यह है कि मंत्र को विधि विधान से पढ़ा गया हो।

साबर मंत्रों को पढ़ने पर ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं होता कि इनमें कुछ विशेष प्रभाव है, परंतु मंत्रों का जप किया जाता है तो असाधारण सफलता दृष्टिगोचर होती है। कुछ मंत्र तो ऐसे हैं कि जिनको सिद्ध करने की जरूरत ही नहीं है, केवल कुछ समय उच्चारण करने से ही उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगता है। यदि किसी मंत्र की संख्या निर्धारित नहीं है तो मात्र 1008 बार मंत्र जप करने से उस मंत्र को सिद्ध समझना चाहिए। दूसरी बात शाबर मंत्रों की सिद्धि के लिए मन में दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है। जिस प्रकार की इच्छा शक्ति साधक के मन में होती है, उसी प्रकार का लाभ उसे मिल जाता है। यदि मन में दृढ़ इच्छा शक्ति है तो अन्य किसी भी बाह्य परिस्थितियों एवं कुविचारों का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता।

9 प्रमुख मणियां किस मणि को धारण करने से क्या होता है

आपने पारस मणि, नागमणि, कौस्तुभ मणि, चंद्रकांता मणि, नीलमणि, स्यमंतक मणि, स्फटिक मणि आदि का नाम तो सुना ही होगा, परंतु ही यहां निम्नलिखित नौ मणियों की बात कर रहे हैं- घृत मणि, तैल मणि, भीष्मक मणि, उपलक मणि, स्फटिक मणि, पारस मणि, उलूक मणि, लाजावर्त मणि, मासर मणि। आओ जानते हैं कि इन मणियों को धारण करने से क्या होता है। हालांकि यह सभी बातें मान्यता पर आधारित हैं।

- घृत मणि की माला धारण कराने से बच्चों को नजर से बचाया जा सकता है।
- स्फटिक मणि को धारण करने से कभी भी लक्ष्मी नहीं रूठती।
- तैल मणि को धारण करने से बल-पौरूष की वृद्धि होती है।
- भीष्मक मणि धन-धान्य वृद्धि में सहायक है।
- उपलक मणि को धारण करने वाला व्यक्ति भक्ति व योग को प्राप्त करता है।
- उलूक मणि को धारण करने से नेत्र रोग दूर हो जाते हैं।
- लाजावर्त मणि को धारण करने से बुद्धि में वृद्धि होती है।
- मासर मणि को धारण करने से पानी और अग्नि का प्रभाव कम होता है।

तेलमणि को धारण करने से होती हैं सभी मनोकामनाएं पूर्ण

आपने पारस मणि, नागमणि, कौस्तुभ मणि, चंद्रकांता मणि, नीलमणि, स्यमंतक मणि, स्फटिक मणि आदि का नाम तो सुना ही होगा, परंतु ही यहां निम्नलिखित नौ मणियों की बात कर रहे हैं- घृत मणि, तैल मणि, भीष्मक मणि, उपलक मणि, स्फटिक मणि, पारस मणि, उलूक मणि, लाजावर्त मणि, मासर मणि। आओ जानते हैं कि तेलमणि को धारण करने से क्या होता है। हालांकि यह सभी बातें मान्यता पर आधारित हैं।

- तेलमणि को उदउक, उदोक भी कहते हैं और अंग्रेजी में टूर्मेलीन कहा जाता है।
- लाल रंग की आभा लिए हुए श्वेत, पीत व कृष्ण वर्ण की होती है तेलमणि और स्पर्श करने से तेल जैसा चिकना ज्ञात होता है।
- कहते हैं कि श्वेत रंग की तेलमणि को अग्नि में डालने पर ही पीत वर्ण की तथा कपड़े में लपेट कर रखने पर तीसरे दिन पीत वर्ण की हो जाती है। लेकिन बाहर निकालकर हवा में रखने से कुछ समय बाद ही यह पुनः अपने असली रंग में बदल जाती है।
- इस मणि को धारण करने से भक्ति भाव, वैराग्य तथा आत्म ज्ञान प्राप्त होकर सभी तरह की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- कहते हैं कि रोहिणी नक्षत्र, पूर्णिमा या मंगलवार के दिन तेलमणि को जिस खेत में 4-5 हाथ गहरे गड्ढे में खोदकर दबा दिया जाए और मिट्टी से ढंककर सींचा जाए तो सामान्य से बहुत अधिक अन्न उत्पन्न होता है।

इन कारणों से दिखाई देते हैं हमें अच्छे या बुरे सपने

मनोविज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष और योग में अच्छे या बुरे सपने दिखाई देने के कई कारण बताए गए हैं। जब हम कोई स्वप्न देखते हैं तो जरूरी नहीं कि प्रत्येक सपने का अच्छा या बुरा फल होता है। आओ जानते हैं कि सपने किन कारणों से दिखाई देते हैं।

अधिकतर सपने हमें हमारी दिनचर्या में किए गए कार्य से प्राप्त होते हैं। कार्य का अर्थ हमने जो देखा, सुनना, समझा, इच्छा किया और भोगा वह हमारे चित्त में विराजित होकर रात में स्वप्नों के रूप में दिखाई देता है। यह सब बदले स्वरूप में इसलिए भी होते हैं क्योंकि वे हमारे शरीर में स्थित भोजन और पानी की स्थिति और अवस्था से भी संचालित होते हैं। निम्नलिखित बातों से आप समझ सकते हैं। इन कारणों से दिखाई देते हैं स्वप्न :-

- दृष्ट- जो जाग्रत अवस्था में देखा गया हो उसे स्वप्न में देखना।
- श्रुत- सोने से पूर्व सुनी गई बातों को स्वप्न में देखना।
- अनुभूत- जो जागते हुए अनुभव किया हो उसे देखना।
- प्रार्थित- जाग्रत अवस्था में की गई प्रार्थना की इच्छा को स्वप्न में देखना।
- दोषजन्य- वात, पित आदि दूषित होने से स्वप्न देखना।
- भाविक- जो भविष्य में घटित होना है, उसे देखना।

अतः अब आप जान सकते हैं कि आपने जो सपने देखे हैं वे किस श्रेणी के हैं। इससे आप यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि आपका सपना शुभ होगा या अशुभ।

भारत ने बांग्लादेश को हराकर जीता अंडर19 एशिया कप का खिताब

भारतीय महिला अंडर-19 टीम ने बंगलादेश को 41 रनों से हराया

क्वालालंपुर (एजेंसी)। भारतीय महिला अंडर-19 टीम ने हाल ही में भारतीय लड़कों को बांग्लादेश के खिलाफ फाइनल में मिली हार का हिसाब बराबर कर लिया है। महिला अंडर-19 एशिया कप के फाइनल में बांग्लादेश की टीम ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। हालांकि तृषा के अर्धशतक की बदौलत भारत ने निर्धारित 20 ओवर में 7 विकेट पर 117 रन बनाए। इसके जवाब में बांग्लादेश की बल्लेबाजी भारतीय गेंदबाजों के सामने पूरी तरह से लड़खड़ा गई और पूरी टीम महज 76 रन पर ढेर हो गई। इस तरह भारत की बेटियों बांग्लादेश के खिलाफ 41 रन से शानदार जीत दर्ज करते हुए खिताब पर पहली बार कब्जा जमाया।

तृषा ने खेली दमदार अर्धशतकीय पारी

महिला अंडर-19 एशिया कप फाइनल में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। महज 84 रन के स्कोर पर आधी टीम पवेलियन लौट गई। इसके बाद भी एक छोर से लगातार विकेट गिरते रहे, लेकिन तृषा ने एक छोर संभाले रखा और 47 गेंद पर 5 चौके और 2 छक्के की मदद से 52 रन पारी खेलकर टीम को मुश्किल से उबारा। भारत ने निर्धारित 20 ओवर में 117 रन बनाते हुए बांग्लादेश के सामने 118 रन का मामूली लक्ष्य रखा। वहीं, बांग्ला देश के लिए फरजाना ने चार तो निशिता ने दो विकेट लिए।

बांग्ला देश की टीम में लगी तू चल मैं आई की होड़

भारत के 118 रन के मामूली लक्ष्यच का पीछा करने उतरी बांग्ला देश टीम की शुरुआत भी बेहद खराब रही। बांग्ला।देश को पहला झटका महज 8 रन के स्कोकर पर लगा। इसके बाद बांग्ला देश की टीम में तू चल मैं आई की होड़ लग गई और पूरी टीम 18.3 ओवर में महज 76 के स्कोर पर ढेर हो गई। बांग्लीदेश के लिए सबसे ज्या दा फरदौस ने 22 रन की पारी खेली। वहीं, आयुषी शुक्ला ने तीन विकेट, पारुनिका और सोनम ने 2-2 विकेट लेकर भारत की 41 रन की जीत में अहम योगदान दिया।

बेटियों ने चुकता किया हिसाब

बता दें कि हाल ही में पुरुष अंडर-19 एशिया कप का फाइनल बांग्ला देश और भारत के बीच खेला गया था। उस मुकाबले को बांग्लादेश ने जीतकर खिताब पर कब्जा किया था। अब महिला अंडर-19 एशिया कप के फाइनल में भारत की बेटियों ने बांग्लाकदेश को धूल चटाते हुए उस हार का हिसाब चुकता कर लिया है।

रूट चैंपियंस ट्रॉफी और भारत दौरे के लिए इंग्लैंड की एकदिवसीय टीम में शामिल

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के साथ ही भारत दौरे के लिए अनुभवी बल्लेबाज जो रूट को टीम में शामिल किया है। रुट की एक साल से अधिक समय के बाद इंग्लैड की एकदिवसीय टीम में वापसी हुई है। रूट ने अंतिम बार एकदिवसीय प्रारूप में पिछली बार 2023 में भारत में हुए 50 ओवर के विश्व कप में खेला था। वहीं ऑलराउंडर और टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स को चोटिल होने के कारण टीम में जगह नहीं मिली है। स्टोक्स को इस महीने की शुरुआत में ही न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट के दौरान हैमस्ट्रिंग इंजरी हुई थी जिससे बाद से ही वह रीहैब के दौर से गुजर रहे हैं। इंग्लैंड टीम की कप्तानी अनुभवी बल्लेबाज जोस बटलर करेंगे। वहीं लेग स्पिनर रेहान अहमद को टी20 टीम में शामिल किया गया है। भारत और इंग्लैड के बीच टी20 सीरीज जनवरी जबकि एकदिवसीय सीरीज फरवरी में खेली जाएगी।

इंग्लैंड की एकदिवसीय टीम

जोस बटलर (कप्तान), जोफा आर्चर, गस एटकिंसन, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्से, बेन डकेट, जेमी ओवरटन, जेमी स्मिथ, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल राशिद, जो रूट, साकिब महमूद, फिल साल्ट, मार्क वुड।

इंग्लैंड की टी20 टीम

जोस बटलर (कप्तान), रेहान अहमद, जोफा आर्चर, गस एटकिंसन, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्से, बेन डकेट, जेमी ओवरटन, जेमी स्मिथ, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल राशिद, साकिब महमूद, फिल साल्ट, मार्क वुड।

रोहित के बाद आकाशदीप को भी लगी चोट, तेज गेंदबाज ने हेल्थ पर दिया अपडेट

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के बाएं घुटने पर चोट के बाद तेज गेंदबाज आकाशदीप के हाथ पर अभ्यास सत्र के दौरान चोट लग गई। आकाशदीप ने हालांकि बाद में कहा कि चोट गंभीर नहीं है तथा ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 26 दिसंबर से शुरू होने वाले चौथे टेस्ट मैच से पहले भारतीय टीम फिटनेस की किसी समस्या से नहीं जूझ रही है।

इन दोनों खिलाड़ियों पर मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर अभ्यास सत्र के दौरान थ्रो डाउन का सामना करते हुए चोट लगी। यह दोनों खिलाड़ी कुछ असहज नजर आ रहे थे। रोहित ने अपने बाएं घुटने में चोट लगने के बावजूद बल्लेबाजी का अभ्यास जारी रखा लेकिन बाद में फिजियोथेरेपिस्ट ने उनका उपचार किया। वह कुछ देर तक कुर्सी पर पैर पसारकर बैठे रहे और फिर चुपचाप चले गए। रोहित की स्थिति को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है लेकिन आकाश ने कहा कि यह अभ्यास के दौरान लगने वाली मामूली चोट है। उन्होंने कहा, 'जब आप क्रिकेट खेलते हैं तो इस तरह की मामूली चोट लगना आम बात होती है। मुझे लगता है कि अभ्यास के लिए तैयार किया गया यह विकेट सफेद गेंद की क्रिकेट के लिए है और यही वजह है कि उसमें कुछ गेंद नीची रह रही थी। अभ्यास के दौरान इस तरह की चोट लगना आम होता है। चोट को लेकर कोई बड़ी चिंता नहीं है।' रोहित अपने बेटे के जन्म के कारण पहले टेस्ट मैच में नहीं खेल पाए थे लेकिन इसके बाद अगले दो मैच में वह रन बनाने के लिए संघर्ष करते रहे। वह अभी तक तीन पारियों में केवल 19 रन बना पाए हैं। शनिवार को सलामी बल्लेबाज केएल राहुल के हाथ में भी चोट लगी थी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के लिए खेली जा रही पांच मैच की श्रृंखला अभी 1-1 से बराबरी पर है।

रोहित अपनी रणनीति बदलें, छठे नंबर पर ऐसे करें बल्लेबाजी : रवि शास्त्री का सुझाव

मेलबर्न (एजेंसी)। कप्तान रोहित शर्मा जब बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में रन बनाने का तरीका समझने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तब भारत के पूर्व कोच रवि शास्त्री का कहना है कि इस स्टाइलिश बल्लेबाज को स्पष्ट मानसिकता के साथ उतरना चाहिए और साथ ही अपनी रणनीति बदलकर गेंदबाजों के खिलाफ आक्रामकता अपनानी चाहिए। रोहित अपने दूसरे बच्चे के जन्म के समय परिवार के साथ रहने के लिए ऑस्ट्रेलिया में पहला टेस्ट मैच नहीं खेल पाए थे।

उम्मीद थी कि वह सलामी बल्लेबाज के तौर पर उतरेंगे लेकिन पर्थ में भारत की जीत में केएल राहुल की 77 रन की शानदार पारी के बाद बल्लेबाजी क्रम में बदलाव किया गया और रोहित को छठे नंबर पर उतारा गया। हालांकि यह बदलाव रोहित के लिए फायदेमंद नहीं रहा क्योंकि वह पिछली तीन पारियों में 10, तीन और छह रन ही बना पाए हैं जबकि राहुल ने तीसरे टेस्ट में ब्रिसबेन में पहली पारी में 84 रन बनाकर मौके का फायदा उठाया।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) समीक्षा पर शास्त्री ने कहा, 'मैं रोहित शर्मा को अच्छा करते हुए देखना चाहूंगा। उनकी रणनीति में थोड़ा बदलाव होना चाहिए क्योंकि वह अब भी इस छठे नंबर पर बेहद खतरनाक हो सकते हैं।' क्रिकेटर से कमेंटेटर बने इस खिलाड़ी ने कहा, 'मुझे लगता है कि उसे अपनी मानसिकता में बहुत स्पष्ट होना चाहिए कि वह मैदान पर जाकर विपक्षी टीम पर आक्रमण करे और किसी और चीज की चिंता नहीं करे।'

शास्त्री को लगता है कि रोहित को रक्षात्मक मानसिकता से दूर रहना चाहिए। उन्होंने कहा, 'आप उनसे बस यही चीज नहीं चाहते कि उनके मन में दो तरह के विचार रहें कि उन्हें बचाव करना है या आक्रमण करना है। मुझे लगता है कि उन्हें आक्रमण करना चाहिए। उन्हें इस नंबर पर विपक्षी टीम पर आक्रमण करना चाहिए।' उन्होंने कहा, ''क्योंकि अगर वह पहले 10-15 मिनट तक क्रीज पर टिके रहते हैं तो वह अपना स्वाभाविक खेल क्यों नहीं खेलते? और प्रतिद्वंद्वी टीम पर आक्रमण करें।' शास्त्री को लगता है कि रोहित के लिए फॉर्म में वापस आने और भारत के लिए मैच जीतने का यह सबसे अच्छा तरीका है। उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि दुनिया में सबसे अच्छे छठे नंबर के वो बल्लेबाज हैं जो जवाबी हमला करने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह फॉर्म में वापसी करने का ही नहीं बल्कि भारत के लिए मैच जीतने का भी सबसे अच्छा तरीका होगा। क्योंकि यह महत्वपूर्ण नंबर है।'

शास्त्री ने कहा, 'दुनिया में सर्वश्रेष्ठ छठे नंबर के बल्लेबाज जानते हैं कि जवाबी हमला कैसे करना है। वे हालात को अच्छी तरह से समझते हैं। पर अगर बहुत विकेट गिर गए हैं तो शायद थोड़ी देर के लिए आपको सावधान रहना होगा। लेकिन आक्रामकता में बहुत देर नहीं होनी चाहिए। जब आप इतने काबिल हैं और जब आप भारत के लिए बल्लेबाजी की शुरुआत करते हैं तो आपके पास ऑस्ट्रेलियाई हालात में खेलने के लिए सभी शॉट होंगे।' रोहित ने 2013 में छठे नंबर पर अपना टेस्ट पदार्पण किया था और शतक जड़ा था। शास्त्री ने पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में अब तक दो अर्धशतक जड़ने के बाद चौथे टेस्ट में सलामी बल्लेबाज के रूप में राहुल का समर्थन किया। उन्होंने कहा, 'मैं ब्रिसबेन टेस्ट में रोहित से पारी का आगाज करने के लिए कहता। लेकिन जिस तरह से राहुल ने बल्लेबाजी की, उसे देखना मजेदार था। वह जिस तरह से वह बल्लेबाजी कर रहा है, मुझे लगता है कि उसने शानदार शुरुआत की है।' पूर्व भारतीय कप्तान ने कहा कि राहुल इस समय फॉर्म में हैं और आत्मविश्वास से भरे हुए हैं। शास्त्री ने कहा, 'जिस तरह से वह गेंद छोड़ रहे हैं, जिस तरह से गेंद को बल्ले पर आने दे रहे हैं, बेहतर कवर ड्राइव खेल रहे हैं, वह शानदार हैं। इसलिए मुझे लगता है कि जब इतने आत्मविश्वास से भरे हैं तो इसे ऐसे ही रहने देना चाहिए।'

गज़नफ़र के पंजे में फंसा जिम्बाब्वे, मैच के साथ सीरीज भी गंवाई

हरारे। ए एम गज़नफ़र (33 रन पर पांच विकेट) और राशिद खान (38 रन पर तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी की मदद से अफगानिस्तान ने शनिवार को जिम्बाब्वे को एकतरफा मुकाबले में आठ विकेट से हरा कर तीन मैचों की एक दिवसीय श्रंखला पर 2-0 से कब्जा कर लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुये जिम्बाब्वे की पारी 30.1 ओवर में 127 रन पर ढेर हो गयी। मेजबान टीम की ओर से शॉन विलियम्स (60) ही अफगानी गेंदबाजों का कुछ हद तक सामना कर सके। उनके अलावा बेन करन (12) और रिचर्ड एन्गरावा (10) ही दहाई के अंक तक पहुंचने में सफल हो सके। जीत के लिये 128 रन के आसान लक्ष्य का पीछा करते हुये सेदिकुल्लाह अटल (52) और अब्दुल मलिक (29) की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिये 18.3 ओवर में 84 रन जोड़ दिये। दोनो के आउट होने के बाद रहमत शाह (17 नाबाद) और हशमतउल्लाह शहीदी (20 नाबाद) ने जीत दिला कर ही दम लिया।

पंजाब किंग्स को आईपीएल खिताब जिताने का प्रयास करेंगे श्रेयस अय्यर

मुम्बई। आईपीएल 2025 सत्र के लिए पंजाब किंग्स टीम के कप्तान बने श्रेयस अय्यर ने कहा है कि वह टीम को खिताब जिताने का पूरा प्रयास करेंगे। अय्यर को मेगा नीलामी में पंजाब ने 26.75 करोड़ में खरीदा था। वह आईपीएल इतिहास के दूसरे सबसे महंगे क्रिकेटर हैं। श्रेयस की कप्तानी में ही कोलकाता नाइट राइडर्स ने साल 2024 में आईपीएल खिताब जीता था। ऐसे में उनका प्रयास लगातार दूसरी बार आईपीएल खिताब जीतकर रिकार्ड बनाना रहेगा। इस साल 4 घरेलू टूर्नामेंट जीतने से भी श्रेयस के हौंसले बुलंद हैं। कि उनका आगामी लक्ष्य आईपीएल 2025 में पंजाब किंग्स को खिताब दिलाना है। वह नए साल में पंजाब किंग्स को खिताब दिलाकर लगातार दो विभिन्न फ्रेंचाइजियों से खिताब जीतने वाले पहले कप्तान बनने की कोशिश करेंगे। अब तक खिताब नहीं जीत पायी पंजाब किंग्स ने आईपीएल मेगा नीलामी में इसी कारण उन्हें खरीदा है। श्रेयस अय्यर के लिए 2024 एक शानदार वर्ष रहा है, उनकी कप्तानी में टीमों ने 4 ट्रॉफियां जीतीं। उनके नेतृत्व में, मुंबई ने 2024-25 सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी (एसएमएटी) जीती थी। बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में फाइनल में उनकी टीम ने ने मध्य प्रदेश को पांच विकेट से हराया था। बहरहाल, अपनी हाल की उपलब्धियों को लेकर अय्यर आगामी आईपीएल सत्र को लेकर उत्साहित हैं। अय्यर ने एक वीडियो में कहा कि सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी जीतने के बाद यह एक अवास्तविक एहसास है। पर्दे के पीछे बहुत मेहनत की गई, और लड़कों ने अपने प्रदर्शन में जबरदस्त प्रदर्शन किया। अब, हम हैं इस हिस्से के साथ काम पूरा हो चुका है और अगली बड़ी चीज की ओर बढ़ रहा हूं, जो कि आईपीएल है। मैं पंजाब किंग्स का हिस्सा बनने के लिए बेहद उत्साहित हूं और पंजाब किंग्स परिवार में शामिल होने के लिए इंतजार नहीं कर सकता।

विराट ऑस्ट्रेलिया सीरीज का अंत 3 शतकों के साथ करेंगे : चेतन शर्मा

नोएडा (उत्तर प्रदेश) (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और पूर्व मुख्य चयनकर्ता चेतन शर्मा ने खराब फॉर्म के बावजूद स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली का समर्थन किया है, उन्होंने कहा कि कोहली ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रही श्रृंखला को तीन के साथ समाप्त करेंगे। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज का चौथा टेस्ट 26 दिसंबर से मेलबर्न में होने वाला है। पर्थ में पहले टेस्ट में शतक बनाने वाले विराट को सीरीज में प्रभाव छोड़ने के लिए संघर्ष करना पड़ा है और वह सिर्फ 26 रन ही बना पाए हैं। अन्य चार पारियां. इस साल सभी प्रारूपों में उनका फॉर्म बेहद खराब रहा है।

चेतन शर्मा ने विराट के संघर्ष को अस्थायी दौर बताया। उन्होंने कहा कि वह एक ऐसा खिलाड़ी है जिसने हमारे लिए बहुत कुछ हासिल किया है, जिससे हमारी उम्मीदें बढ़ जाती हैं। मुझे विश्वास है कि वह अच्छा प्रदर्शन करेगा। आशा करते हैं कि वह अगले दो मैचों में दो और शतक बनाएगा। मैंने श्रृंखला से पहले भविष्यवाणी की थी कि वह ऑस्ट्रेलिया में तीन शतक लगाएगा। साल 2023 में विराट ने सभी प्रारूपों में 21.92 की औसत से 614 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और दो अर्द्धशतक शामिल है। वह 9 टेस्ट मैचों में 25.06 की औसत से 376 रन बना चुके हैं जिसमें 17 पारियों में एक शतक और एक अर्धशतक शामिल है। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 100* है।

टेस्ट क्रिकेट में विराट के लिए 2020 चुनौतीपूर्ण रहा है। इस दशक में 37 मैचों और 64 पारियों में, उन्होंने 31.67 की औसत से 1,964 रन बनाए हैं, जिसमें तीन शतक, नौ अर्द्धशतक और 186 का उच्चतम स्कोर है। मौजूदा आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र में, विराट ने 12 मैचों और 21 पारियों में 36.15 के औसत से 687 रन बनाए हैं, जिसमें दो शतक, तीन अर्द्धशतक और 121 का शीर्ष स्कोर है।

प्रधानमंत्री ने अश्विन को शानदार करियर के लिए बधाई दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले क्रिकेटर आर अश्विन को उनके शानदार करियर के लिए बधाई दी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि क्रिकेट के मैदान में उनकी जर्सी नंबर 99 की कमी खलेगी। अपने पत्र में प्रधानमंत्री ने अश्विन के संन्यास को एक आश्चर्यजनक मोड़ करार देते हुए इसे प्रत्याशित ऑफ-ब्रेक के बजाय एक अप्रत्याशित कैरम बॉल के बराबर बताया। प्रधानमंत्री ने कहा 'अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से आपके संन्यास की घोषणा ने भारत और दुनिया भर के प्रशंसकों को हैरान कर दिया है। ऐसे समय में जब हर कोई कई और ऑफ-ब्रेक की उम्मीद कर रहा था, आपने एक कैरम बॉल फेंकी जिसने सभी को चकमा दे दिया हालांकि, सभी जानते हैं कि यह आपके लिए भी एक कठिन फैसला रहा होगा, खासकर भारत के लिए खेलते हुए आपके शानदार करियर के बाद। पत्र में लिखा है, कृपया एक ऐसे करियर के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें जो प्रतिभा, कड़ी मेहनत और टीम को हर चीज से ऊपर रखने से भरा रहा है। जब आप अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह रहे हैं, तो जर्सी नंबर 99 की बहुत याद आएगी। क्रिकेट प्रेमियों को उस उम्मीद की कमी खलेगी जो उन्हें तब महसूस होती थी जब आप गेंदबाजी करने के लिए क्रीज पर उतरते थे। हमेशा ऐसा लगता था कि आप विरोधियों के चारों ओर एक ऐसा जाल बुन रहे हैं जो किसी भी क्षण किसी को भी फंसा सकता है। आपके पास अच्छी पुरानी ऑफ-स्पिन के साथ-साथ अभिनव विविधताओं के साथ बल्लेबाजों को मात देने की एक अनोखी क्षमता थी, जैसा कि स्थिति की मांग थी.

आकाश चोपड़ा ने बताया अश्विन के संन्यास का कारण

मुम्बई (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि आर अश्विन बार-बार उपेक्षा किये जाने से आहत थे। इसी कारण उन्होंने अचानक ही संन्यास का फैसला ले लिया। अश्विन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी। टेस्ट सीरीज के बीच ही आये अश्विन के इस फैसले से प्रशंसकों के साथ ही दिग्गज खिलाड़ी भी हैरान थे। तभी से उनके संन्यास के पीछे अलग-अलग प्रकार की वजहें बताई जा रही है, उनके पिता ने तो यहां तक कह दिया था कि अश्विन का अपमान हो रहा था, इसलिए उसने ये फैसला किया। वहीं पूर्व क्रिकेटर भी अश्विन के इस फैसले से हैरत में पड़ गये। उनका मानना है कि अश्विन विदेशी हालातों में लगातार नजरअंदाज किए जाने से हताश थे।

आकाश ने कहा, आखिर में क्या हुआ? सभी की जिंदगी में एक ऐसा पल आता है, जहां आप सोचते हैं, क्या मैं अब ऐसा करना चाहता हूं क्या मैं इससे ठीक हूं। अश्विन के दिमाग ये चीज काफी समय से रही होगी कि वह विदेश में ज्यादा नहीं खेलता है। जब विदेश में होने वाले मैचों की बात आती है तो टीम के लिए स्पिनर के रूप में पहले विकल्प नहीं है। ये काफी समय से चल रहा है। उन्होंने इसके साथ रहना सीख लिया था। जडेजा विदेश में उनसे आगे रहते थे। उन्होंने इस बात से समझौता कर लिया कि जडेजा खेल रहे हैं।

वहीं जब उनके ऊपर युवा वाशिंगटन सुंदर को प्राथमिकता दी गयी तो उनका धैर्य टूट गया। उसने अपने आज से कहा होगा, अब बहुत हुआ, मैं खेल चुका। अश्विन ने पिंक बॉल टेस्ट खेला पर जब वह गाबा से ड्रॉप हुआ, उसने कहा, मुझे जितना खेलना था खेल चुका। आप मुझे अंतिम ग्यारह में शामिल करने को लेकर गंभीर नहीं हैं। इसलिए अब मुझे जाना चाहिये।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के मीडिया कर्मियों के बीच मुकाबला रद्द हुआ

-जडेजा की प्रेस कॉन्फ्रेंस में उठा विवाद बना कारण

मेलबर्न। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच से पहले भारत और ऑस्ट्रेलिया के मीडिया कर्मियों के बीच एक टी20 मुकाबला खेला जाना था जिसे अब रद्द कर दिया गया है। इसका कारण भारतीय टीम के ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उठा विवाद रहा। एमसीजी में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चौथे टेस्ट से पहले जडेजा ने कुछ पत्रकारों से अलग-अलग विषयों पर बात की। दूसरी ओर ऑस्ट्रेलियाई मीडिया के एक वर्ग ने यह आरोप लगाया कि जडेजा ने अंग्रेजी में सवालों के जवाब देने से इनकार कर दिया और सवाल पूछने से पहले ही वे वहां निकल गए। इसी बात को लेकर उठा विवाद बढ़ गया। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की तरफ से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को कवर कर रहे दोनों देशों के मीडियाकर्मियों के लिए एक दोस्ताना टी20 मैच का आयोजन किया जाना था पर जडेजा के प्रेस कॉन्फ्रेंस विवाद के कारण मीडिया कर्मियों ने इस मैच का बहिष्कार किया। यही कारण है कि मुकाबले को क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने अब रद्द कर दिया एक रिपोर्ट के मुताबिक दोनों देशों के बीच यह प्रेस मैच रविवार दोपहर को होने वाला था। यह खेल मेलबर्न के जंक्शन ओवल में आयोजित होने वाला था, लेकिन इसे रद्द करना पड़ा।

रवि शास्त्री की चिंता- ट्रेविस हेड सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में हैं, उन्हें रोकना होगा मुश्किल

मेलबर्न (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर रवि शास्त्री का मानना है कि 'शॉर्ट बॉल' को जल्दी परखने की क्षमता ने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ट्रेविस हेड को बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला में शानदार सफलता दिलाई है और साथ ही उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि मेहमान टीम इस 'सरदर्द' के लिए दवा ढूंढना चाहेगी। श्रृंखला की अपनी पहली पारी में 11 रन पर आउट होने के बाद हेड ने अपने अगले तीन मैचों में 89, 140 और 152 रन बनाए हैं। उन्होंने गुलाबी गेंद के टेस्ट में अहम भूमिका निभाई थी जिसमें ऑस्ट्रेलिया ने 10 विकेट से जीत दर्ज कर 1-1 से बराबरी हासिल की थी।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) समीक्षा में शास्त्री ने कहा कि मुझे लगता है कि वह (हेड) बहुत स्मार्ट है। मैंने उन्हें 3 साल पहले देखा था लेकिन अब लगता है कि उनमें काफी सुधार हुआ है। विशेष रूप से वह जिस तरह 'शॉर्ट बॉल% को खेलते हैं। पहले वह शॉर्ट बॉल को खेलने के लिए तैयार रहते थे लेकिन अब उन्होंने इसे छोड़ना भी सीख लिया है। पूर्व भारतीय कोच ने कहा कि गेंद की 'लाइन एवं लेंथ% को जल्दी से परखने की क्षमता हेड को सही स्ट्रोक खेलने का समय देती है। शास्त्री ने कहा कि ऐसा नहीं है कि हमेशा शॉर्ट गेंद पर बड़ा शॉट लगाना होता है। वह या तो इसे छोड़ने या बड़े शॉट लगाने के लिए तैयार रहते हैं। और अगर गेंद मिडिल या ऑफ स्टंप है, तो वह इसे स्क्वायर के सामने भी मारते हैं। इस भारतीय दिग्गज ने यह भी कहा कि जब हेड लय में होते हैं तो उन्हें रोकना मुश्किल होता है।

शास्त्री ने कहा कि वह लेंथ अच्छी तरह पकड़ लेता है। यह उनकी सबसे बड़ी ताकत है। और उनके पास ऑफसाइड के लिए शानदार शॉट होते हैं। इसलिए उन्हें रोकना मुश्किल है। और वह अपनी जिंदगी की सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में हैं। उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि भारत ट्रेविस नामक 'सरदर्द' के लिए मरहम की तलाश कर रहा है। शास्त्री ने कहा कि उनका नया उपनाम ट्रेविस 'हेड' 'एक' (इंग्लिश में सरदर्द) है। उन्होंने कहा कि वे भारत में उनके लिए मरहम की तलाश कर रहे हैं। पैर की समस्याओं, टखने की समस्याओं (और) यहां तक कि सरदर्द के लिए वे मरहम की तलाश कर रहे हैं। वह इसके लिए आदर्श है।

जसप्रीत बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया के लगभग हर बल्लेबाज को परेशान किया है लेकिन हेड इसके अपवाद रहे हैं जिन्होंने भारतीय तेज गेंदबाजों का बिना किसी परेशानी का सामना किया है। शास्त्री ने कहा कि हम सभी जानते थे कि वह खतरनाक है। लेकिन जसप्रीत बुमराह की गेंद पर उसने जो पहला शॉट खेला, फ्रंट फुट से वह कवर ड्राइव शानदार था। इससे मुझे लगा कि यह खिलाड़ी अपनी बेहतरीन फॉर्म में है।

एक नजर

देश की सबसे बड़ी एलुमनी मीट नवोत्सव इंदौर में

इंदौर : जवाहर नवोदय विद्यालय के पूर्व छात्रों की देश की सबसे बड़ी एलुमनी मीट नवोत्सव 3.0 आज रविवार को इंदौर में आयोजित हो रही है। इस एलुमनी मीट में 8000 से ज्यादा छात्र शामिल हो रहे हैं। इसे दुनिया की सबसे बड़ी एलुमनी मीट का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए रजिस्ट्रेशन भी किया गया है। एलुमनी मीट की मैनेजमेंट टीम के सदस्य डॉ विकास व्यास ने बताया कि इंदौर के बिचौली क्षेत्र में नवोदय गार्डन में होने जा रही इस एलुमनी मीट में नवोदय विद्यालय के पूर्व छात्र शामिल होंगे, जो अब सांसद, आईएएस, आईपीएस, डॉक्टर, शिक्षक, सीए एवं बिजनेसमैन बन चुके हैं। ये छात्र अपनी यादों को एक-दूसरे से साझा करेंगे। उन्होंने बताया कि इंदौर में नवोत्सव का तीसरा आयोजन है। मध्य प्रदेश के नवोदयों के पूर्व छात्रों का ग्रुप मान इसका आयोजन कर रहा है। इस मीट का उद्देश्य पूरे देश में फैले जवाहर नवोदय विद्यालयों के छात्रों को एकत्र कर देश और समाज के लिए बड़ा काम करने योजना है। इस मीट में जम्मू-कश्मीर से लेकर, उत्तर पूर्व भारत, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत समेत पूरे देश के राज्यों से हजारों छात्र हिस्सा ले रहे हैं। क्यूआर कोड से होगी इंट्री एलुमनी मीट की मैनेजमेंट टीम के सदस्य सीए सुनील पाटीदार और सीएस नीलेश गुप्ता ने बताया कि रजिस्ट्रेशन के लिए वेबसाइट पर पहले रजिस्टर करने के बाद छात्रों को एक क्यूआर कोड दिया जा रहा है।

बेटियों को सशक्त बनाने के लिए रक्षा शिविरका किया गया आयोजन

पटना : नवादा जिले के हिसुआ बरनवाल सेवा सदन में बेटियों को सशक्त बनाने को लेकर सात दिवसीय रक्षा शिविर का रविवार को आयोजन किया गया ,जहां बेटियां पूर्ण आवासीय रूप से रहकर लाठी, मार्शल आर्ट, तलवार चलाने सहित योग आदि का प्रशिक्षण पाई। बेटियों को चरित्र निर्माण के गुण के साथ उन्हें सनातन संस्कृति की ज्ञान दिया। बरनवाल सेवा सदन, बरनवाल महिला मंडल और बरनवाल युवा मंच की ओर समापन किया गया। दिल्ली यूपी झारखंड पंजाब सहित कई राज्यों से प्रशिक्षक दे रहे हैं प्रशिक्षण हिसुआ में देश में पहली बार बिहार, नवादा, हिसुआ में वैश्य समाज की ओर से शिविर में 60 बरनवाल समाज की 60 बेटियां हिस्सा ले रहीं है जिनका उम्र 13 साल से लेकर 23 साल तक है। हिसुआ बरनवाल भवन की ओर से 60 बच्चियों की प्रशिक्षण में बहुत ही अनुशासित तरह से प्रशिक्षित किया गया। बरनवाल भवन की ओर से महिलाएं और नवयुवक संघ और आचार्य के द्वारा सात दिवसीय बरन शिविर का समापन में 60 बच्चियों को बारी-बारी से प्रशस्ति पत्र दिया गया।

सागर से भोपाल जा रही यात्री बस और कार की भिड़ंत, बस ड्राइवर फरार

भोपाल : भोपाल-सागर रोड पर रविवार को नकतरा के पास एक बड़ा हादसा टल गया। यहां सागर से भोपाल जा रही एक यात्री बस और कार की आमने सामने से भिड़ंत हो गई। गनीमत रही हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। वहीं हादसे के बाद बस चालक मौके से भाग निकला। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी अनुसार 'जय मां अंबे ट्रेवल्स' की यात्री बस रविवार को यात्रियों को लेकर सागर से भोपाल के लिए निकली थी। इस दौरान नकतरा के पास सामने से आ रही कार से बस की टक्कर हो गई। इस दौरान बस में बैठे यात्रियों में हड़कंप मच गया। एक्सीडेंट के बाद बस चालक मौके से फरार हो गया।

महाराष्ट्र में अवैध बांग्लादेशियों की धरपकड़ तेज करके उन्हें वापस भेजा जाएगा : सीएम फडणवीस

एजेंसी

मुंबई : मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रविवार को कहा कि महाराष्ट्र में रह रहे अवैध बांग्लादेशी नागरिकों की धरपकड़ तेज करके उन्हें वापस उनके देश में भेजा जाएगा। इसके लिए प्रशासकीय स्तर पर जोरदार तैयारी की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार हिंदुओं के अलावा अन्य समुदायों के धार्मिक स्थलों को राज्य के नियंत्रण में लाने की मांग का अध्ययन करेगी। देवेंद्र फडणवीस ने आज नागपुर में कहा कि राज्य सरकार मुंबई में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई करने पर अडिग है। हमने उनके खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है और उन्हें निर्वासित किया जाएगा। देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने सभागृह में हिंदुओं के अलावा अन्य धर्मों के धार्मिक स्थलों को राज्य सरकार के नियंत्रण में लाने की आवश्यकता जताई थी। उन्होंने कहा था कि यह जनता की मांग है कि न केवल हिंदू मंदिर बल्कि अन्य धर्मों के पूजा स्थलों को भी सरकारी नियंत्रण में लाया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री फडणवीस ने दो दिन पहले विधानसभा में यह भी दावा किया था कि वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी के भारत जोड़ो अभियान को नक्सल आंदोलन के कुछ प्रतिबंधित फ्रंटल संगठनों का समर्थन प्राप्त था। इस पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिख कर इन संगठनों के नाम सार्वजनिक किए जाने की मांग की थी। इस पर और खुलासा करते हुए देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि इन संगठनों के खिलाफ यूएपीए और अन्य कानूनों के तहत कार्रवाई की जा चुकी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार के प्रस्तावित महाराष्ट्र विशेष सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक, 2024 पर आपत्ति जताने वाले संगठनों से विधानमंडल में कानून पारित होने से पहले वार्ता की जाएगी। विधेयक का मसौदा पुलिस के नक्सल विरोधी दस्तों की मांग और छत्तीसगढ़ जैसे कुछ माओवादी प्रभावित राज्यों में मौजूद कानून की तर्ज पर तैयार किया गया है। हम चाहते हैं कि इस पर उचित विचार-विमर्श हो और इसके बाद इसे पारित किया जाए और इसलिए इसे दोनों सदनों के 21 सदस्यों वाली संयुक्त चयन समिति के पास भेजा गया है। आपत्ति जताने वाले संगठनों को जेएससी के समक्ष कानून पर अपना पक्ष रखने का अवसर मिलेगा।

संक्षिप्त खबरें

केन्द्रीय मंत्री नायडू ने इंदौर एयरपोर्ट पर किया एटीसी और फायर सेफ्टी भवन का लोकार्पण

इंदौर : केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू ने रविवार को इंदौर एयरपोर्ट पर नवनिर्मित एटीसी भवन और फायर सेफ्टी भवन का लोकार्पण किया गया। यहां वे कुछ देर तक एटीसी की सीट पर बैठे और सामने खड़े विमान के पायलट से बात की। उन्होंने कहा कि मैं पहली बार एटीसी की सीट पर बैठा हूं। केन्द्रीय मंत्री नायडू ने इसके साथ ही यहां नए फायर स्टेशन और एयरपोर्ट को जीरो वेस्ट बनाने के लिए तैयार गार्बेज प्लांट का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर एवं मप्र के नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, सांसद शंकर लालवानी, विधायक महेंद्र हार्डिया, चिंटू वर्मा सहित जनप्रतिनिधियों, एयरपोर्ट अधिकारियों एवं प्रबुद्धजनों उपस्थिति रहे। नागरिक उड्डयन मंत्री नायडू ने कहा कि मेरा पहली बार इंदौर आना हुआ है। सांसद सबसे ज्यादा दिल्ली में मिलते हैं और इंदौर की चर्चा करते हैं। इंदौर स्वच्छता में देश मे नंबर वन है। इसको देखने की इच्छा थी, आज स्वच्छता के शहर को देख लिया। उन्होंने इस दौरान इंदौर की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि इंदौर सिर्फ स्वच्छ ही नहीं है, यहां के लोगों के मन भी स्वच्छ हैं। इंदौर में अच्छी टीम है, जो शहर के विकास को आगे बढ़ा रही है। इंदौर में नए एटीसी टावर का लोकार्पण किया है। उन्होंने कहा कि एयरपोर्ट की चार माह में 55 लाख कैपिसिटी करेंगे, जल्द ही सिंहस्थ से पहले नया टर्मिनल बनाएंगे। इसकी प्लानिग शुरू हो चुकी है। बड़े रनवे के लिए जमीन की आवश्कता है, इसके लिए राज्य सरकार को पत्र लिखा है। जमीन मिलते ही एयरपोर्ट के रनवे की कैपिसिटी बढ़ाएंगे। इसके बाद अमेरिका की उड़ान भी इंदौर में उतर सकेगी। नायडू ने कहा कि उड़ान स्कीम के कारण देश के सभी एयरपोर्ट पर उड़ान की संख्या बढ़ी है। पहले 74 एयरपोर्ट थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार आने के बाद दस साल में दो गुना एयरपोर्ट हो चुके हैं। पहले भारत में 400 जहाज थे, जो दस साल में 800 जहाज हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि इंदौर में नब्बे एयरक्राफ्ट का कनेक्ट है, एयर लाइन से चर्चा कर जल्द नई कनेक्टिविटी शुरू करेंगे।

एलियन पर वैदिक विज्ञान व प्राचीन ज्ञान पर होगा सार्वभौमिक सम्मेलन

नई दिल्ली/गुवाहाटी : स्वामी विवेकानंद और निकोला टेस्ला इंटरनेशनल फाउंडेशन अगले 15 मार्च को नई दिल्ली में यूएफओ और एलियंस पर सार्वभौमिक सम्मेलन आयोजित करेगा। इस सम्मेलन में अभूतपूर्व आयोजन वैदिक विज्ञान, ब्रह्मांडीय ऊर्जा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ यूएफओ और एलियन घटनाओं के प्रतिच्छेदन पर गहन चर्चा होगी। जिससे प्राचीन ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति के बीच एक अद्वितीय संवाद को बढ़ावा मिलेगा। उक्त जानकारी एसवीएनटीआईएफ के अध्यक्ष मानस डेका ने दी है। उन्होंने बताया कि यूएफओ और एलियंस पर सार्वभौमिक सम्मेलन 15 मार्च, 2025 को नई दिल्ली में होगा। इस सम्मेलन में इसरो, नासा, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी ,जापानी, इतालवी और रूसी अंतरिक्ष एजेंसियां, अंतरिक्ष निर्माण सलाहकार परिषद, अंतरराष्ट्रीय यूएफओ कांग्रेस, यूरोपीय यूएफओ कांग्रेस, स्पेसएक्स, आईआईटी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ जैसे प्रमुख संगठनों को आमंत्रित किया जाएगा। सम्मेलन में दुनियाभर के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ, अंतरिक्ष यात्री और शोधकर्ता भी शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि प्राचीन ऐतिहासिक आख्यानों और आधुनिक यूएफओ तथा एलियन के देखे जाने के बीच संभावित संबंधों की जांच पर संवाद होंगे। जिनका उद्देश्य बहुविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से अस्पष्टीकृत हवाई घटनाओं की हमारी समझ को गहरा करना है। यह ब्रह्मांडीय रहस्यों और प्राचीन ज्ञान से उनके गहरे संबंधों को उजागर करने का एक अनूठा अवसर होगा। उल्लेखनीय है कि स्वामी विवेकानंद और निकोला टेस्ला इंटरनेशनल फाउंडेशन विज्ञान और आध्यात्मिकता को एक साथ लाने के लिए कार्य कर रहा है।

नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री रवि लामिछाने की संसद सदस्यता स्वतः निलंबित

काठमांडू : नेपाल के उप प्रधानमंत्री रवि लामिछाने की संसद सदस्यता रविवार को निलंबित कर दी गई है। उनके खिलाफ सहकारी ठगी से लेकर संगठित अपराध और मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में अदालत में आरोप पत्र स्वीकार किए जाने के साथ ही संसद सदस्यता स्वतः निलंबित हो गई है। संघीय संसद सचिवालय के एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने बताया कि अदालत में आरोप पत्र दायर होने के साथ ही सांसद की सदस्यता निलंबित होने का प्रावधान है। संपत्ति शुद्धिकरण अधिनियम की धारा 27 के अनुसार किसी भी सांसद के खिलाफ अदालत में आरोप पत्र दायर होने के साथ ही संसद सदस्यता स्वतः ही निलंबित हो जाती है। उन्होंने बताया कि सरकारी वकील की तरफ से इस बात की लिखित जानकारी आने के साथ ही सूचना प्रकाशित कर दी जाएगी। पोखरा जिला अदालत में लामिछाने पर सहकारी धोखाधड़ी, संगठित अपराध और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में रवि लामिछाने के खिलाफ दायर आरोप पत्र दाखिल किया गया था, जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया है। लामिछाने की संसद सदस्यता उनके खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज होने के कारण गई है।

अद्वैत आश्रम में धूमधाम से मनाई गई मां शारदा की 172वीं जयंती

चम्पावत : लोहाघाट क्षेत्र स्थित प्रसिद्ध अद्वैत आश्रम मायावती में स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक गुरु रामकृष्ण मिशन की सहधर्मिणी मां शारदा की 172वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर स्वामी दिव्यकृपानंद महाराज ने मां शारदा के जीवन और उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी दिव्यकृपानंद ने कहा कि मां शारदा रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक सहधर्मिणी थीं और रामकृष्ण मिशन में उन्हें श्रीमां के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि रामकृष्ण परमहंस और शारदा मां का संबंध अलौकिक था और रामकृष्ण देव उन्हें हमेशा मां के रूप में देखते थे। स्वामी दिव्यकृपानंद ने मां शारदा के उपदेशों का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि आप मन की शांति चाहते हैं तो दूसरों के दोषों को न देखें, बल्कि अपने दोषों को देखें। पूरी दुनिया को अपना बनाइए, यहां कोई अजनबी नहीं है। उन्होंने कहा कि शारदा मां ने रामकृष्ण मिशन के सलाहकार प्रमुख के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और समाज सेवा के लिए समर्पित एक मठवासी आदेश की नींव रखी। स्वामी दिव्यकृपानंद ने यह भी बताया कि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो धर्म महासभा में भाग लेने के लिए मां शारदा से आशीर्वाद लिया था। उनके आशीर्वाद के बाद ही स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका जाने का निर्णय लिया था। कार्यक्रम में आश्रम प्रबंधक स्वामी सुहृदयानंद, स्वामी ध्यानसठानंद महाराज, चम्पावत के डीएफओ विजय पंत, आईटीबीपी के कमांडेंट धरमपाल सिंह रावत, चम्पावत कलेक्ट्रेट प्रभारी अधिकारी भगवत प्रसाद पांडेय आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

भाजपा के रहते संविधान और आरक्षण खतरे में : प्रदीप जैन

एजेंसी

झांसी : जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय मानिक चौक में पत्रकार वार्ता आयोजित की गई। जिसमें कांग्रेस के पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने भाजपा को जमकर कोसा। यहां तक कि भाजपा के रहते संविधान व आरक्षण को खतरा बता डाला। पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने कहा कि 18 वीं लोकसभा का शीतकालीन सत्र सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी द्वारा संविधान और संविधान निमार्ता बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के अपमान के लिए देश के संसदीय इतिहास में दर्ज हो गया है। भाजपा हमेशा से लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों के प्रति तिरस्कार दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ती। समता, समानता और न्याय के डॉक्टर अंबेडकर के आदर्शों पर चलने की सलाह बीजेपी को कतई रास नहीं आई। यही नहीं आरक्षण खत्म करने की साजिश के तहत भाजपा संविधान बदलने की कोशिश में लिप्त है। प्रदेश सचिव मनीराम कुशवाहा ने कहा कि मोदी सरकार डॉ अंबेडकर के अपमान को अपराध मानने को तैयार नहीं है, उल्टे बीजेपी ने संसद की कार्रवाई ठप कर रखी। यही नहीं अपनी मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे कांग्रेस सांसदों के साथ धक्का मुक्की की गई। पार्टी अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे को गिरा दिया गया। बीजेपी ने षड्यंत्र के तहत नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ संगीत धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज करा दी। कार्यवाहक जिलाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह पारीछा ने बताया कि डॉ अंबेडकर की विरासत की रक्षा के लिए कांग्रेस प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रही है । इसी संदर्भ में जिला कांग्रेस कमेटी दलित बाहुल्य गांव में जाकर चौपाल करेगी तथा 24 दिसंबर 2024 को पूर्वाह्न :11 बजे कचहरी चौराहा स्थित डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा के समक्ष एकत्रित होकर बाबा साहब अंबेडकर सम्मान मार्च का शुभारंभ डॉ अंबेडकर जी को माल्यार्पण कर प्रारंभ किया जाएगा।

नागरिक कर्मियों के सम्मान में नौसेना का 30 को होगा यादगार कार्यक्रम

एजेंसी

नई दिल्ली : भारतीय नौसेना परिचालन तैयारियों में नागरिक कर्मियों के अमूल्य योगदान को सम्मानित करने के लिए 30 दिसंबर को एक यादगार कार्यक्रम करने जा रही है। यह कार्यक्रम डीआरडीओ भवन के डॉ. डीएस कोठारी ऑडिटोरियम में होगा, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। यह कार्यक्रम राष्ट्र की समुद्री सुरक्षा और परिचालन में अपने नागरिक कर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देने के लिए भारतीय नौसेना की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। दरअसल, असैन्य कार्मिक भारतीय नौसेना के कुल कार्यबल का लगभग एक तिहाई हिस्सा हैं, जो नौसेना के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह असैन्य कर्मी नौसेना के कमान मुख्यालय, डॉकयार्ड, सामग्री संगठन, नौसेना आयुध डिपो, नौसेना आयुध निरीक्षणालय, प्रशिक्षण प्रतिष्ठान और कई अन्य प्रकार की सहायता इकाइयों में कार्य करते हैं। इसलिए संगठनात्मक दक्षता बढ़ाने के लिए परिकल्पना की गयी कि उनके प्रशासन, प्रशिक्षण और कल्याण आदि को बढ़ावा दिया जाए, ताकि वे भारतीय नौसेना को युद्ध के लिए हमेशा तैयार, विश्वसनीय, एकजुट और भविष्य के लिए सक्षम बल बने रहने में प्रभावी ढंग से योगदान दें सकें। भारतीय नौसेना ने पिछले साल फरवरी में अपने नागरिक कर्मियों की प्रशासन और कल्याण में दक्षता बढ़ाने के लिए 2024 को 'नौसेना नागरिकों का वर्ष' घोषित किया था। इसलिए मौजूदा वर्ष में मानव संसाधन प्रबंधन में सुधार लाने और समयबद्ध तरीके से नागरिक कर्मियों के पेशेवर और व्यक्तिगत विकास के उद्देश्य से कई उपाय किए गए।

प्यार, जुनून और दीवानगी का दिल छू लेने वाला सफर जी सिनेमा पर 25 से

एजेंसी

मुंबई : इस क्रिसमस, 25 दिसंबर को रात 8 बजे, जी सिनेमा पर देखिए किसको था पता, एक ऐसी कहानी जो आपके दिल को छू जाएगी। शादी में जरूर आना और मिडल क्लास लव जैसी फिल्में बनाने के लिए मशहूर निर्देशक रत्ना सिन्हा की फिल्म किसको था पता में अशनूर कौर, अक्षय ओबेरॉय और आदिल खान जैसे शानदार कलाकार हैं। तो इस क्रिसमस पर प्यार, जूनून और दीवानगी के एक दिलचस्प सफर के लिए तैयार हो जाइए, जो पूरे परिवार के लिए एक यादगार अनुभव बन जाएगा। ये कहानी एक छोटे से शहर रायपुर में शुरू होती है, जो इस फिल्म की सादगी और असलियत को पूरी तरह से महसूस कराता है। और हां, इसके शानदार गाने-पागल हुआ, रज के और शैदाई-सिर्फ आपके कानों को ही नहीं, दिल को भी सुकून से भर देंगे। हर गाना आपको फिल्म के इमोशनल सफर पर ले जाएगा, और यकीन मानिए, आप इन्हें बार-बार सुनने के लिए मजबूर हो जाएंगे। अशनूर कौर ने कहा, श्रेया एक ऐसा किरदार है जो किसी से भी जुड़ सकता है, जो प्यार के बोझ और उसे खोने के डर को महसूस कर चुका हो। इसकी कहानी सच्चाई, ताकत और खोई हुई उम्मीदों का आईना है। मुझे खुशी है कि मैं ऐसी कहानी का हिस्सा हूं, जो दर्शकों को प्यार और किस्मत पर सवाल उठाने पर मजबूर कर देगी। यह पहली बार था जब मैंने अपने पैरेंट्स के बिना अकेले शूटिंग की, तो मैं थोड़ी घबराई हुई थी, लेकिन साथ ही बहुत उत्साहित भी। मुझे उम्मीद है कि लोग जी सिनेमा पर ये फिल्म देखते हुए श्रेया से उतना ही जुड़ाव महसूस करेंगे जितना मैंने किया।

'वर्ल्ड मेडिटेट्स विद गुरुदेव' ने तोड़ा सबसे बड़ी ध्यान सभा का वर्ल्ड रिकॉर्ड

एजेंसी

बेंगलुरु : 'वर्ल्ड मेडिटेट्स विद गुरुदेव' कार्यक्रम ने एक ऐतिहासिक मील का पत्थर स्थापित किया, जिससे यह गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और वर्ल्ड रिकॉर्ड्स यूनियन में शामिल हो गया। आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा आयोजित इस ऐतिहासिक कार्यक्रम ने दुनिया भर से लाखों लोगों को एकजुट किया और सामूहिक ध्यान के लिए एक नया मापदंड स्थापित किया। पहला विश्व ध्यान दिवस एक अप्रतिम एकता और आंतरिक शांति का उत्सव रहा। 180 से अधिक देशों के प्रतिभागियों के साथ, इस कार्यक्रम ने आधुनिक समय में ध्यान की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित किया। संयुक्त राष्ट्र में उद्घाटन समारोह से शुरू होकर, और वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के शिखर से गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर द्वारा लाइव सत्र के साथ समापन तक, यह दिन सभी महाद्वीपों में ध्यान की लहर फैलाता चला गया। बनाए गए रिकॉर्ड्स की सूची:

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड :

यूट्यूब पर एक निर्देशित ध्यान के लाइव स्ट्रीम के सबसे अधिक दर्शक एशिया

बुक ऑफ रिकॉर्ड्स:

एक दिन में सभी भारतीय राज्यों से गाइडेड ध्यान में अधिकतम सहभागिता

एक दिन में गाइडेड ध्यान में सबसे अधिक राष्ट्रों की भागीदारी

वर्ल्ड रिकॉर्ड्स यूनियन:

यूट्यूब पर 24 घंटे में एक निर्देशित ध्यान के लिए सबसे अधिक देखे जाने का रिकॉर्ड यूट्यूब पर एक निर्देशित ध्यान सत्र के लाइव दर्शकों का सबसे बड़ा रिकॉर्ड एक ऑनलाइन ध्यान सत्र में सबसे अधिक राष्ट्रों की भागीदारी का रिकॉर्ड गुरुदेव द्वारा निर्देशित ध्यान सत्र का सीधा प्रसारण किया गया, जिसमें लाखों लोग वैश्विक शांति और सामंजस्य स्थापित करने के लिए ध्यान करने के लिए जुड़े। ध्यान में जाने से पहले गुरुदेव ने ध्यान का अर्थ समझाते हुए कहा, ध्यान वह यात्रा है जहाँ आप जो जानते हैं, उसके बारे में सोचने की बजाय उसका अनुभव करते हैं, और फिर आप भावनाओं से परे जाकर अपनी अंतरात्मा में जाते हैं।

सरकार की नई योजनाओं से वंचित वर्गों का समग्र विकास सुनिश्चित होगा: मुख्यमंत्री

एजेंसी

शिमला : मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार ने वंचित वर्गों के कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। राज्य मंत्रिमंडल ने समाज के निचले वर्गों के उत्थान और उनके सम्मानजनक जीवन के लिए कई नई कल्याणकारी योजनाओं को मंजूरी दी है। इन योजनाओं का उद्देश्य न केवल इन वर्गों का सामाजिक और आर्थिक विकास करना है, बल्कि उन्हें एक बेहतर और सम्मानजनक जीवन प्रदान करना भी है। राज्य सरकार ने वाल्मीकि समुदाय के सफाई कर्मचारियों के लिए ह्यमहर्षि वाल्मीकि कामगार आवास योजना की शुरूआत की है। इस योजना के तहत सफाई कर्मचारियों को तीन लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। योजना के लिए पात्र व्यक्ति वे होंगे जिनकी वार्षिक आय 2.5 लाख रुपये से कम हो और जो आवासीय सुविधा से वंचित हों। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह योजना उन परिवारों को अपने घर बनाने का मौका देगी जो अभी तक आवासीय सुविधाओं से वंचित थे। इस योजना की जानकारी और आवेदन के लिए लोग संबंधित तहसील कल्याण अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं। प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री विधवा एवं एकल नारी आवास योजना के तहत भी वित्तीय सहायता में वृद्धि की है। अब, विधवा और एकल महिलाओं को मकान निर्माण के लिए पहले से अधिक सहायता मिल सकेगी। पहले इस योजना के तहत 1.5 लाख रुपये की सहायता दी जाती थी, जिसे अब बढ़ाकर तीन लाख रुपये कर दिया गया है। इस कदम से इन महिलाओं को अपने घर बनाने में मदद मिलेगी और उनके जीवन में सुधार आएगा। इसके अलावा, हिमाचल प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत महिलाओं को मकान निर्माण के लिए चार लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी जाएगी। इसमें तीन लाख रुपये मकान निर्माण के लिए और एक लाख रुपये रसोई, शौचालय तथा बाथरूम जैसी आवश्यक सुविधाओं के लिए दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री सुक्खू ने इस पहल को वंचित वर्गों के समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार वंचित वर्गों के कल्याण के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इन योजनाओं के माध्यम से सरकार बेघर परिवारों को आश्रय देने, उनके जीवन स्तर को सुधारने और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं के तहत बनाए गए घरों में पानी और बिजली कनेक्शन देने को प्राथमिकता दी जाएगी, ताकि इन परिवारों को बुनियादी सुविधाओं की कमी न हो।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी**, **प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह***, **प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**